₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जून 2014

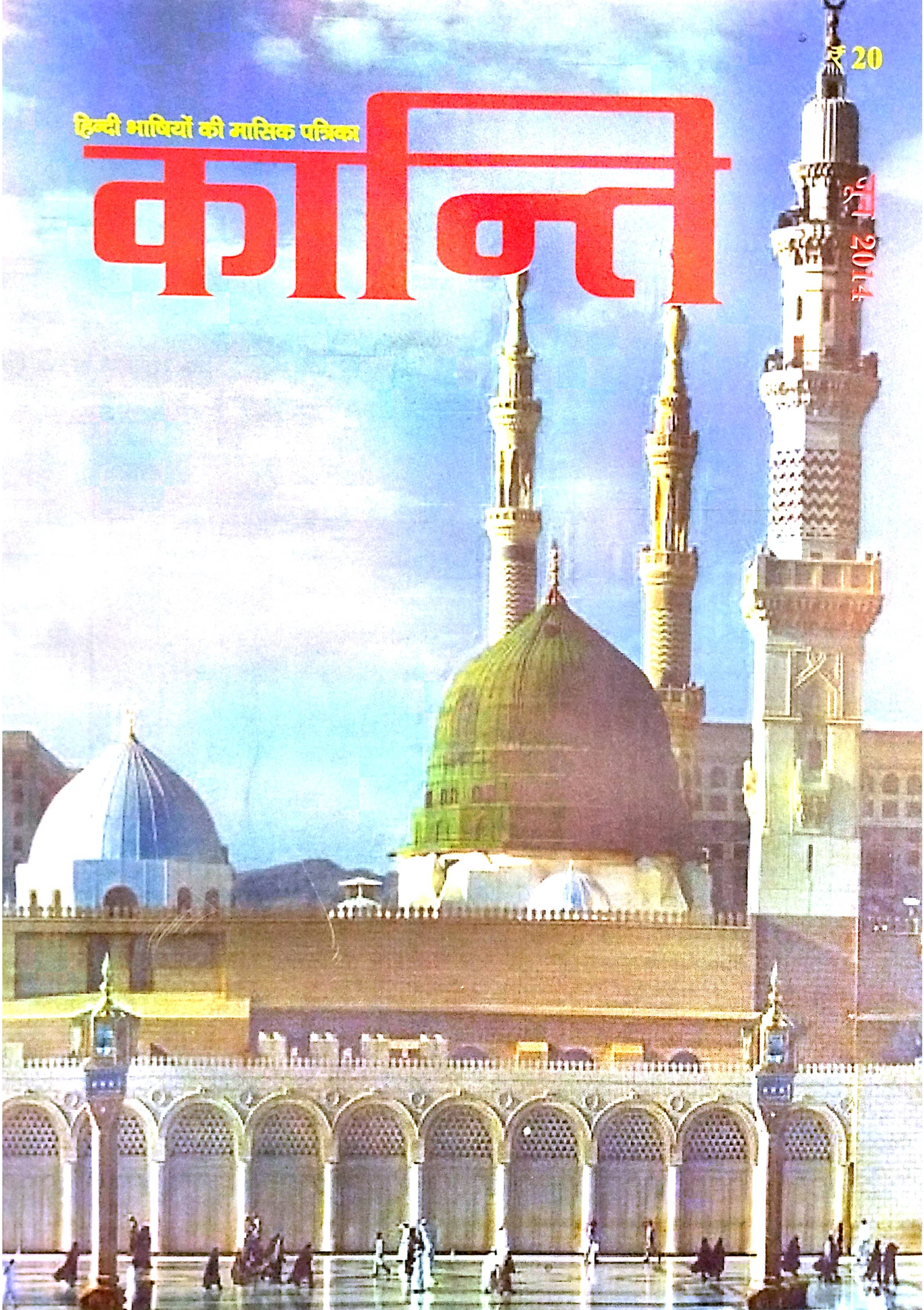


TRUSTED SINCE 1947
Point at the winner
www.silverlinerealty.com
INTERNATIONAL PROPERTY AWRDS
CNBC
2008
BEST PROPERTY FINDER IN INDIA
BEST PROPERTY FINDER IN ASIA PACIFIC
BEST PROPERTY FINDER IN THE WORLD
SILVERLINE®
TOTAL REALTY SOLUTIONS SINCE 1947
201, Barton Centre, MG Road
Bangalore 560 001, T: +91 80 4082 8888
E: realtor@silverlinerealty.com
BRAI
ICREA
FIABCI
REALTOR®
NAR INDIA
RICS
FNAIM

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 23 अंक 12 जून 2014

ऐ लोगो ! जो ईमान लाए हो, तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस तरह तुमसे पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे उम्मीद है कि तुममें ईशपरायणता का गुण पैदा होगा । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ़्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

अब सीखो करना प्रेम-प्यार

अल्लाह, ख़ुदा, भगवान, ईश
क्या भिन्न कभी हो सकते हैं ?
मानव विकास की दिशा ओर
ये भला कभी सो सकते हैं
आगे आने वाली पीढ़ी
न हंसें न हम पर लज्जित हों
वे हों गंगा-यमुना संगम
जग हित विज्ञान सुसज्जित हों
क्षिति को कर दें जन्नत, बहिश्त
यह भूमि स्वर्ग, बैकुण्ठ बने
सम्पन्न, सबल, ज्ञानी बनकर
सब मनुज मात्र निष्कुण्ठ बने
आओ हे बंधु-बान्धवी सब
ये भारत वर्ष हमारा है
हमारी आंखों का तारा है
सबकी आंखों का तारा है
अन्तर की ज्योति एक सी है
अन्तर-आकाश एक सा है
बाहर के कर्म-काण्ड कुछ हों
अन्तिम परिणाम एक-सा है
नूतनतम ग्रंथ क़ुरआन तथा
अत्यंत पुरातन वेद-ग्रंथ
सारे विभिन्नतम सम्प्रदाय
सारे मतवाद विचार-पंथ
हैं आदर के पात्र सभी...
वे बंधु मुहम्मद अहमद हों
या फिर होवें वे ज्ञानचन्द्र
प्रभु-नज़रों में दोनों के कृत्य
दोनों के सम हैं सूर्य-चन्द्र
नफ़रत से अरु टकरावों से
भगवान प्रसन्न नहीं होंगे
यह मुस्लिम-हिन्दू समझ लें यदि
तो कभी विपन्न नहीं होंगे
अस्सलाम अलैकुम तुमको
अरु तुम को मेरा नमस्कार
झगड़े-फ़साद कर लिए बहुत
अब सीखो करना प्रेम-प्यार ।

● डॉ० ज्ञानचन्द्र



कहां क्या है ?

अब सीखो करना प्रेम-प्यार (कविता)	–डॉ॰ ज्ञानचन्द्र	3
कुरआन ज्योति		5
पहली सफ़ की अहमियत (हदीस मंजरी)		6
नेकियों का मौसमे बहार (संपादकीय)		7
गुमराही के लक्षण (आपके पत्र)		9
मुकम्मल इन्सान, सच्चा इन्सान (जीवन आदर्श)	–मौलाना अब्दुल कुद्दूस हाशिमी	13
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और व्यक्ति निर्माण	–डॉ॰ अब्दुल हलीम उवैस	17
वह पुस्तक जो किसी से छिपाकर नहीं रखी गयी (आस्था)	–मुनव्वर हुसैन	21
मानव जीवन में सत्य का महत्व (दृष्टिकोण)	–मुहम्मद अली शाह शुऐब	23
कुरआन और रमज़ान (विशेष आयोजन)	–अब्दुल अज़ीज़	26
रोज़ा, ईशपरायणता और कुरआन (विशेष आयोजन)	–जुबैर आलम इस्लाही	29
ग़ज़लें	–हरेराम समीप और चन्द्रसेन विराट	32
बड़ी बरकतों वाला रमज़ान का महीना (विशेष आयोजन)	–मुहम्मद दाऊद	33
बहुराष्ट्रीय कंपनियों का दबाव (स्वास्थ्य चर्चा)	–भरत डोगरा	35
मिट्टी का तेल (कहानी)	–मासूम अंसारी	37
क्षणिकाएं	–डॉ॰ रामनिवास मानव	38
फासीवाद के लक्षण (मुद्दा)	–राम पुनियानी	39
हवा की उड़ान भी रोज़गार का ज़रिया (कैरियर)		41
मुस्लिम पर्सनल लॉ में अनुचित हस्तक्षेप (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	43
वृद्धों की समस्याएं (ज्वलंत सामयिक)	–डॉ॰ ज़किया रफ़अत	45
कर डालिये नेक काम (अभिमत)	–सीता राम गुप्ता	47
पहले काम फिर आराम (बालवीथी)	–सेतु जैन	49



(55) इनके माल व दौलत और इनकी संतान की अधिकता को देखकर धोखा न खाओ। अल्लाह तो यह चाहता है कि इन चीज़ों के द्वारा इनको दुनिया की ज़िन्दगी में भी अज़ाब में डाल दे[54] और ये जान भी दें तो सत्य के इन्कार ही की स्थिति में दें।[55]

–क़ुरआन, 9 : 55

54. अर्थात उस माल और संतान की मोह में पड़कर जो कपटपूर्ण नीति उन्होंने अपनायी है, उसके कारण मुस्लिम समाज में ये अति अपमानित होकर रहेंगे और हुकूमत की वह सारी शान और इज़्ज़त व नामवरी, बुज़ुर्गी और चौधराहट, जो अब तक अरब समाज में उनको प्राप्त रही है, नयी इस्लामी सामूहिक व्यवस्था में वह मिट्टी में मिल जाएगी। साधारण से साधारण दास और दासपुत्र और सामान्य किसान और चरवाहे जिन्होंने ईमानीं निष्ठा का प्रमाण दिया है, इस नयी व्यवस्था में सम्मानित होंगे और पारिवारिक चौधरी अपनी दुनियापरस्ती के कारण अपमानित होकर रह जाएंगे।

इस स्थिति का एक दिलचस्प नमूना वह घटना है जो एक बार हज़रत उमर (रज़ि०) की सभा में घटित हुई। क़ुरैश के कुछ बड़े-बड़े सरदार, जिनमें सुहैल बिन अम्र और हारिस बिन हिशाम जैसे लोग थे, हज़रत उमर (रज़ि०) से मिलने गये। वहां ऐसी स्थिति बनी कि अंसार और मुहाजिरीन में से कोई साधारण आदमी भी आता तो हज़रत उमर (रज़ि०) उसे अपने पास बुलाकर बिठाते और इन सरदारों से कहते कि इसके लिए जगह ख़ाली करो। थोड़ी देर में नौबत यह आयी कि ये लोग सरकते-सरकते सभा के पिछले हिस्से में पहुंच गये। बाहर निकलकर हारिस बिन हिशाम ने साथियों से कहा कि तुम लोगों ने देखा कि आज हमारे साथ क्या व्यवहार हुआ है ? सुहैल बिन अम्र ने कहा, इसमें उमर (रज़ि)) की कोई ग़लती नहीं, ग़लती हमारी है कि जब हमें इस दीन की ओर बुलाया गया तो हमने मुंह मोड़ा और ये लोग उसकी ओर दौड़कर आये। फिर ये दोनों साहब दोबारा हज़रत उमर (रज़ि०) के पास हाज़िर हुए और कहा कि आज हमने आपका व्यवहार देखा और हम जानते हैं कि यह हमारी अपनी कोताहियों का नतीजा है, किन्तु इसकी भरपाई की भी कोई शक्ल है ? हज़रत उमर (रज़ि०) ने ज़बान से कुछ जवाब न दिया और केवल रूम की सीमा की ओर संकेत कर दिया। अर्थ यह था कि अब जिहाद के मैदान में जान व माल खपाओ तो शायद वह स्थान पुनः मिल जाए, जिसे खो चुके हो।

55. अर्थात इस अपमान व अनादर से बढ़कर परेशानी उनके लिए यह होगी कि जिन कपटपूर्ण गुणों को ये अपने भीतर पाल रहे हैं, उनकी बदौलत इन्हें मरते दम तक सच्चे ईमान का सौभाग्य प्राप्त न होगा और अपनी दुनिया ख़राब कर लेने के बाद ये इस हाल में दुनिया से विदा होंगे कि आख़िरत भी ख़राब, बल्कि ख़राब-से-ख़राबतर होगी।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

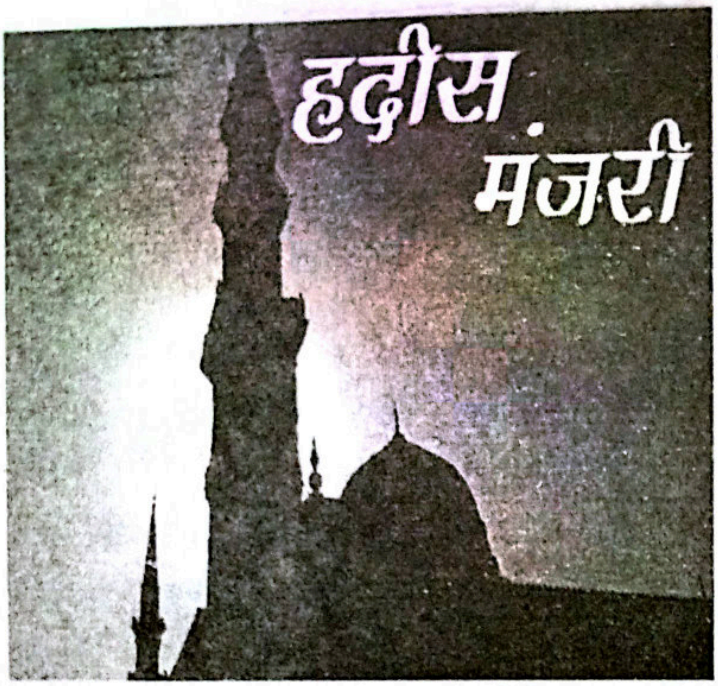

भलाई और भलाई करने वालों से प्रेम

● हज़रत ज़ैद ख़ैर (रज़ि॰) से उल्लिखित है । वे कहते हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल ! उस व्यक्ति में ईश्वर की क्या निशानी है जिसको वह चाहे, और जिसको वह न चाहे उसमें उसकी क्या पहचान है ? कहा कि "ऐ ज़ैद तुमने किस हाल में सुबह की ?" मैंने कहा कि इस हाल में कि नेकी और नेकी करने वालों से मुझे प्रेम है, और अगर मैं नेकी की सामर्थ्य रखता हूं तो उसे जल्द करता हूं और अगर नेकी छूट जाए तो दुखी हो जाता हूं और रो पड़ता हूं । नबी (सल्ल॰) ने कहा कि ईश्वर की यही निशानी उस व्यक्ति में पायी जाती है जिसको वह चाहता है और अगर वह तेरे लिए किसी और चीज़ का इरादा करता तो ऐसा करता कि तुझे उसके लिए तत्पर कर देता ।" (तिर्मिज़ी)

व्याख्या : इस हदीस से मालूम हुआ कि ईश्वर के यहां स्वीकार्यता का संकेत यह है कि आदमी को भलाई और भलाई करने वालों से प्रेम हो । सामर्थ्य हो तो नेकी से न रुके, बल्कि नेकी और भलाई के कामों की ओर लपक पड़े और अगर कहीं नेकी न कर सके तो इससे उसे दुख हो । नेकी से किसी की रुचि इस बात का स्पष्ट लक्षण है कि ईश्वर उसे चाहता है और अगर आदमी भलाई और शुभ के अतिरिक्त किसी और चीज़ के लिए तत्परता दिखा रहा है तो इसका अर्थ यह है कि वह ईश्वर का प्रिय बन्दा नहीं है । इसी लिए ईश्वर ने उसे दूसरे कामों के लिए छोड़ दिया । कुरआन में है–

"रहा वह व्यक्ति जिसने कृपणता अपनायी, और उपेक्षा की, और अच्छी चीज़ को झुठला दिया, उसे हम उस चीज़ का पात्र बना देंगे जो कष्ट-साध्य है ।"

(कुरआन, 92:8-10)

● हज़रत अनस (रज़ि॰) कहते हैं कि नबी (सल्ल॰) ने कहा–

"तीन चीज़ें ऐसी हैं कि जिस व्यक्ति में पायी जाएं उसे ईमान का स्वाद और आनन्द प्राप्त होगा । यह कि ईश्वर और उसका रसूल उसे शेष सबसे अधिक प्रिय हों, और यह कि किसी व्यक्ति से उसे प्रेम हो तो यह प्रेम मात्र ईश्वर के लिए हो, और यह कि वह कुफ़्र की ओर पलटने को, जबकि ईश्वर ने उसे उससे निकाल लिया हो, ऐसा बुरा समझे जैसा कि इसको बुरा समझता है कि उसे आग में फेंक दिया जाए ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

व्याख्या : मालूम हुआ कि ईमान के स्वादप्रद और भावपूर्ण होने का वास्तविक रहस्य प्रेमभाव है । जब आदमी के विचारों और उसके जीवन के तमाम मामलों में प्रेम एक क्रियाशील शक्ति की हैसियत प्राप्त कर लेता है तो उस समय उसे उस आस्वादन और आनन्द से परिचित होने में विलंब नहीं होता जिसकी सूचना इस हदीस में दी गयी है ।

जिस तथ्य का इस हदीस में उल्लेख किया गया है उसका उल्लेख इस प्रसिद्ध हदीस में भी मिलता है–"ईमान का मज़ा चख लिया उस व्यक्ति ने जो ईश्वर के रब होने, इस्लाम के धर्म होने और मुहम्मद (सल्ल॰) के रसूल होने पर राज़ी हो गया ।" (मुस्लिम)

('हदीस सौरभ', भाग-2)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

नेकियों का मौसमे बहार

इस्लाम सहज-स्वाभाविक धर्म है । इसकी सभी शिक्षाएं और व्यवस्थाएं मानव-स्वभाव के बिल्कुल अनुकूल और अपरिहार्य हैं । ये मानव के भीतर उच्च कोटि के मानवीय एवं नैतिक मूल्य, गुण और विशेषताएं पैदा करती हैं । लेकिन इन अच्छाइयों को तभी सुदृढ़ और फलीभूत बनाया जा सकता है, जब वास्तविक और आध्यात्मिक पक्ष पर सर्वाधिक ज़ोर दिया जाए, क्योंकि यह सद्गुणों और सत्कर्मों का आधार है । अतः इस्लाम में इस पक्ष को महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है । वह मानवों को अपने पैदा करने वाले सर्वशक्तिमान ईश्वर को मानने, उसका बन्दा व भक्त होने और उसका डर रखने एवं उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने पर उभारता है । इस्लाम को यह भी अपेक्षित है कि मनुष्य पारलौकिक जीवन (आख़िरत) पर यक़ीन रखे और उसे यह एहसास एवं विश्वास भी हो कि वह जो कुछ कर्म कर रहा है, उसे अल्लाह देख रहा है तथा अच्छे-बुरे कर्मों का उसे हिसाब देना होगा । इनसे मनुष्य को अनेक फ़ायदे होते हैं–एक तो वह अमानवीय कृत्यों से बचा रहता है, दूसरे उसके भीतर उच्च कोटि के मानवीय और सामाजिक मूल्य पैदा होते हैं । इनके अलावा उसकी स्वाभाविक उन्नति और विकास के मार्ग प्रशस्त हो जाते हैं और वह पारलौकिक जीवन की सफलता का सामान भी जुटा ले जाता है । इस्लाम को यह भी अपेक्षित है कि सारे मनुष्यों के ईशपरायणता विकसित होने के साथ ही उनमें तमाम सद्गुणों और मूल्यों का विकास हो एवं मनुष्य की प्राकृतिक व स्वाभाविक क्षमता तथा शक्ति को उभारा जाए । इस्लाम में रमज़ान मास को विशिष्टता प्राप्त है । यह मास इसी महीने के अंतिम दिनों में शुरू होने वाला है । इस पूरे मास रोज़े रखे जाते हैं । यह एक पवित्रतम इबादत है और आध्यात्मिक एवं नैतिक प्रशिक्षण का सर्वोत्तम उपाय व प्रावधान है । इससे रोज़ेदार में ईशपरायणता पैदा होती है, अल्लाह का डर पैदा होता है, मन को शुद्धता और हृदय को विशालता प्राप्त होती है, सत्कर्मों की प्रेरणा मिलती है, संयम पैदा होता है और मनोकामनाओं पर क़ाबू पाने की शक्ति पैदा होती है, शारीरिक फ़ायदे भी होते हैं । इनके अलावा महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने और पारलौकिक जीवन संवारने का ज़रिया भी है ।

पवित्र कुरआन में रमज़ान का महत्व इस प्रकार बयान किया गया है–"रमज़ान वह महीना है, जिसमें कुरआन उतारा गया, जो इन्सानों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है, और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है, जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य एवं असत्य का अन्तर खोलकर रख देने वाली है । अतः अब से जो व्यक्ति इस महीने को पाये, उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे (2:185)। एक हदीस में यह बात आती है कि "गौरव का स्वामी प्रतापवान अल्लाह कहता है : आदम के बेटे (मनुष्य) का प्रत्येक कर्म उसके लिए है सिवाय रोज़े के, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा, और रोज़ा ढाल है । अतः जब तुममें से किसी का रोज़े का दिन हो, तो न तो अश्लील बात ज़ुबान पर लाए

और न शोर मचाए और न दंगा और फ़साद करे और यदि कोई उसे अपशब्द कहे या उससे लड़े तो कह दे कि मैं रोज़े से हूं'' (बुख़ारी, मुस्लिम)। एक रिवायत में है : ''आदम के बेटे के हर कर्म का सवाब दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है । अल्लाह तआला कहता है–किन्तु रोज़े की बात और है, क्योंकि वह मेरे ही लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा । वह अपनी कामेच्छा और अपने खाने को मेरे लिए छोड़ देता है । रोज़ेदार के लिए दो खुशियां हैं : एक खुशी तो रोज़ा खोलने के समय होती है और एक अपने रब से मुलाक़ात करते समय होगी । और उसके मुंह की बू अल्लाह की निगाह में मुल्क की बू से ज़्यादा बेहतर है है'' (मुस्लिम)। रोज़ा इस तरह से विनय और नम्रता का प्रदर्शन भी है । इसी लिए गुनाहों के क्षमा कराने में रोज़ा सहायक सिद्ध होता है । रोज़ा न केवल यह कि गुनाहों के प्रभाव को दिल से मिटाता है, बल्कि यह दुआओं व प्रार्थनाओं की स्वीकृति एवं अल्लाह की दयालुता को अपनी ओर आकृष्ट करने में भी सहायक होता है । रमज़ान का मास बरकतों और रहमतों का मास है । यह मास अल्लाह की बन्दगी, उसके हक़ों की अदायगी और आत्म सुधार एवं प्रशिक्षण का मास है ही, बन्दों के हक़ों की अदायगी–निर्धनों, मुहताजों और ज़रूरतमन्दों की ज़रूरतें पूरी करने का भी मास है । एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की दानशीलता रमज़ान में और भी बढ़ जाती थी । वास्तव में यह आध्यात्मिक एवं नैतिक प्रशिक्षण का मास है । इसमें रोज़ेदार जिन गुनाहों और बुराइयों से बचे रहते हैं, उनसे आगामी 11 मासों तक भी बचे रहना चाहिए । इस तरह इस मास में जो आध्यात्मिक और नैतिक गुण परवान चढ़ते हैं, उनकी मात्रा में कोई कमी नहीं होनी चाहिए, तभी रमज़ान के रोज़ों का पूरा फ़ायदा मिल सकेगा । समस्त मानवजाति को इस ''प्रशिक्षण मास'' का फ़ायदा उठाना चाहिए ।



गुमराही के लक्षण

यूं तो आदमी का ज्ञान हमेशा अधूरा ही रहा है चाहे वह कितना ही विद्वान, ज्ञानी हो जब तक उसे ईश्वरीय मार्गदर्शन न प्राप्त हो । इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए नितांत ज़रूरी है कि ईश्वर के द्वारा भेजी गयी हिदायत (क़ुरआन) के आदेशों को आने तथा उसके संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के द्वारा बताये गये तरीक़ों (सुन्नत) को इख़्तियार करे तो उसे पूर्ण ज्ञान हासिल हो सकता है । यही ज्ञान आदमी की जीवन पद्धति है जिस पर चलकर वह दुनिया और आख़िरत दोनों में कामयाबी हासिल कर सकता है, आदमी का अपने रब के बताये हुए सीधे रास्ते से भटक जाना या दिशाहीन हो जाने का नाम गुमराही है । गुमराह हो जाने के बाद वह अपने दुनियावी और आख़िरत दोनों लाभों से हाथ धो बैठता है और उसका संपूर्ण जीवन निरर्थक हो जाता है । गुमराह होने के मुख्य तीन कारण हैं ।

नफ़्स (मनेच्छा) की बन्दगी

सबसे बढ़कर इन्सान को गुमराह करने वाली चीज़ इन्सान के अपने नफ़्स (मन) की इच्छाएं हैं । जो इन्सान अपनी इच्छाओं का बन्दा बन गया उसके लिए ख़ुदा का बन्दा बनना संभव नहीं है जैसा कि क़ुरआन पाक में है–

"अब अगर वे तुम्हारी ये मांग नहीं पूरी करते तो समझ लो कि वास्तव में ये अपनी इच्छाओं के पीछे चलने वाले हैं और उस आदमी से बढ़कर कौन गुमराह होगा जो अल्लाह के मार्गदर्शन के बिना बस अपनी इच्छाओं के पीछे चले ? अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हरगिज़ रास्ता नहीं दिखाता ।"

(क़ुरआन, 28:50)

ऐसा आदमी तो हर वक़्त यह देखेगा कि मेरा फ़ायदा किस काम में है । मेरी इज़्ज़त और शोहरत किस काम में है, मुझे लज़्ज़त और लुत्फ़ किस काम में हासिल होता है । मुझे आराम व आसाइश किस काम में मिलती है बस यह जिन कामों में होंगी उसी को वह इख़्तियार करेगा चाहे ख़ुदा उससे मना करे और यह चीज़ें जिस काम में न होगी उसको वह हरगिज़ न करेगा चाहे ख़ुदा उसका हुक्म दे । तो ऐसे आदमी का ख़ुदा अल्लाह तआला नहीं होगा उसका अपना नफ़्स ही उसका ख़ुदा होगा । ऐसे आदमी को कैसे मार्गदर्शन मिल सकता है । देखिए क़ुरआन शरीफ़ की यह आयत–

"क्या तुमने कभी उस व्यक्ति के हाल पर भी विचार किया जिसने अपने मन की इच्छा को अपना ख़ुदा बना लिया और अल्लाह ने ज्ञान के बावजूद उसे गुमराही में फेंक दिया और उसके दिल और कानों पर मुहर लगा दी और उसकी आंखों पर परदा डाल दिया । अल्लाह के बाद अब कौन है, जो उसे मार्ग दिखाये ? क्या तुम लोग कोई शिक्षा नहीं लेते ?" (45:23) यहां "कोई शिक्षा" से मतलब है प्रमाणिक शिक्षा यानी अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) के द्वारा प्राप्त शिक्षा ।

बाप-दादा की अंधी पैरवी

ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने बाप-दादा (पूर्वजों) के द्वारा प्रचलित रास्ते को ही अपनी जीवन पद्धति समझ लिया और उसी का अनुसरण किया कभी जानने की कोशिश नहीं की कि ये लोग वास्तव में सत्य पथ पर हैं या नहीं । जो रस्म, रिवाज, अक़ीदा, विचार और जो रंग-ढंग चले आ रहे हों आदमी उनका ग़ुलाम बन जाए और ख़ुदा के हुक्म से बढ़कर उनको समझे । जो व्यक्ति इस मर्ज़ में मुब्तिला हो वह ख़ुदा का बन्दा कैसे हो सकता है ? ऐसे लोगों के ख़ुदा तो उनके बाप-दादा और उनके कुटुम्ब क़बीले के लोग हुए । ऐसे लोगों को अल्लाह से मार्गदर्शन कैसे मिल सकता है । जब उनकी क़ौम में नसीहत और सचेत करने वाले ईशदूत अल्लाह तआला ने भेजा तो उनकी क़ौम के लोगों ने यही कहा–

"जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो आदेश उतारे हैं उनकी पैरवी करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उसी तरीक़े की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है । अच्छा इनके बाप-दादा ने बुद्धि से कुछ भी काम न लिया हो और सीधा रास्ता न पाया हो तो क्या फिर भी ये उन्हीं की पैरवी किये चले जाएंगे । (क़ुरआन, 2:170)

यह ऐसी गुमराही है जिसमें लगभग हर ज़माने में जाहिल

लोग मुब्तिला रहे हैं और हमेशा अल्लाह के रसूलों की हिदायत को मानने से यही चीज़ इन्सान को रोकती है । हज़रत मूसा (अलैहि०) ने जब अपनी क़ौम के लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया तो उनकी भी क़ौम के लोगों ने यही कहा–

"उन्होंने उत्तर में कहा क्या तू इसलिए आया है कि हमें उस तरीक़े से फेर दे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है और धरती में बड़ाई तुम दोनों की क़ायम हो जाए ? तुम्हारी बात तो हम मानने वाले नहीं हैं ।"

(क़ुरआन, 10:78)

ग़ैर-अल्लाह की बन्दगी

इन्सान जब अल्लाह के हुक्म को छोड़कर दूसरे लोगों का हुक्म मानने लगता है वह यह विचार करता है कि फ़लां व्यक्ति बड़ा आदमी है उसकी बात पक्की होगी या फ़लां आदमी के हाथ में मेरी रोटी है इसलिए उसकी बात माननी चाहिए या फ़लां व्यक्ति बड़ी समाई वाला और सत्ताधारी है इसलिए उनकी बात माननी चाहिए । या फ़लां साहब अपनी बद्दुआ से हमें तबाह कर देंगे या अपने साथ जन्नत में मुझे भी ले जाएंगे इसलिए वह जो कहें वही सही है । या फ़लां क़ौम बड़ी तरक़्क़ी कर रही है उसके पीछे इख़्तियार करने चाहिए तो ऐसे इन्सानों पर अल्लाह के मार्गदर्शन का रास्ता बन्द हो जाता है । जैसा कि क़ुरआन करीम में है–

"और ऐ नबी अगर तुम उनके अधिकतर लोगों के कहने पर चलो जो धरती में बसते हैं तो वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे । वे तो केवल गुमान पर चलते और अटकल दौड़ाते हैं ।" (क़ुरआन, 6:116)

यानी आदमी सीधे रास्ते पर उस वक़्त हो सकता है जब उसका एक ख़ुदा हो जिसने बहुत सारे ख़ुदा बना लिए हों और कभी उसके कहे पर चलें और कभी उसके कहे पर तो ऐसा आदमी सही रास्ता कहां पा सकता है ? अल्लाह ने इन्सान को समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ पैदा किया है और उसे ज्ञान और विवेक दिया ताकि ग़ौर व फ़िक्र कर सके । उसके मार्गदर्शन के लिए अपनी किताब (क़ुरआन मजीद) उतारी और उनके पास अपना रसूल (संदेष्टा) भेजा ताकि लोग दीन की तरफ़ पलटें । इसके बावजूद जिन लोगों ने बे सोचे-समझे अल्लाह के अलावा किसी अन्य को अपना ख़ुदा बना लिया और उसके तरीक़े पर जीवन बसर किया तो वे घाटे में पड़ गये जैसा कि क़ुरआन मजीद में है–

"जिसे अल्लाह रास्ता दिखाये बस वही सीधा रास्ता पाता है और जिसको अल्लाह अपने मार्गदर्शन से वंचित कर दे वही असफल होकर रहता है । और यह सत्य है कि बहुत से जिन्न और इन्सान ऐसे हैं जिनको हमने जहन्नम ही के लिए फैला रखा है उनके पास दिल है मगर वे उनसे सोचते नहीं, उनके पास आंखें हैं, मगर वे उनसे देखते नहीं, उनके पास कान हैं मगर वे उनसे सुनते नहीं । वे जानवरों की तरह हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गये गुज़रे । ये वे लोग हैं जो ग़फ़लत में खोये गये हैं ।" (क़ुरआन, 7:178,179)

आदमी का जानवरों से बदतर होना ऐसी बात है जिसमें किसी शक की गुंजाइश ही नहीं । कोई जानवर आपको ऐसा न मिलेगा जो अल्लाह की निश्चित की हुई हद से आगे बढ़ता है । हर जानवर वही खाता है जिसे अल्लाह ने उसके लिए निश्चित किया है । वह उसी क़दर खाता है जिस क़दर उसे खाने के लिए निश्चित किया गया है और जितने काम जिस जानवर के लिए निश्चित किये गये हैं वह उतने ही करता है । मगर यह इन्सान ऐसा प्राणी है कि यह वह हरकतें कर गुज़रता है जिससे शैतान भी पनाह मांगे ।

श्यामनारायण चौहान
ग्राम-बिशुनपुरा, पोस्ट-मथेला,
चन्दौली (उ०प्र०)

असीमित अपेक्षाएं

राजेश थका-हारा देर शाम जैसे ही घर पहुंचता है उसके पापा जैसे ताक में खड़े होते हैं । राजेश जैसे-तैसे एक प्याली चाय गले से नीचे उतारता है और उन्हें लेकर चल देता है डॉक्टर के पास । लौटते-लौटते काफ़ी देर हो जाती है । बच्चे सो चुके होते हैं । पत्नी अलसायी उनींदी-सी खाना परोसती है । यह कोई एक दिन की बात नहीं । रोज़ का क़िस्सा है । आज दांतों वाले डॉक्टर के यहां, कल आंखों वाले के यहां, परसों हड्डियों वाले के यहां ।

रविवार अथवा छुट्टी का दिन तो और भी अधिक परेशानी का कारण बनता है । पापा का प्रोग्राम पहले से ही तय रहता है । कैंटीन चलना है । शर्मा जी को देखने जाना है ।. मंदिर में प्रसाद चढ़ाना है । वग़ैरह-वग़ैरह...राजेश बाल-बच्चों वाला है । उसके अपने भी ढेरों काम होते हैं । कहीं घूमने जाने, छुट्टी मनाने का भी मन होता है । किंतु पूरा समय पापा की हाज़िरी में ही निकल जाता है । राजेश बोलता तो कुछ नहीं है मगर अन्दर ही अन्दर घुटता ज़रूरी

है । उसकी पत्नी भी बस कुढ़ कर रह जाती है ।

राजेश के पापा उच्च पद के रिटायर्ड हैं । आयु 65 के लपेटे में है । किंतु अच्छे ख़ासे चलते-फिरते हैं । प्रातः सायं घूमने जाते हैं । योग की क्लास में नियमित सम्मिलित होते हैं । चाहें तो दिन में आसानी से अकेले अथवा राजेश की मम्मी के साथ डॉक्टरों के पास, कैंटीन, मिलने-जुलने कहीं भी जा सकते हैं । बल्कि घरेलू कामों में थोड़ा-बहुत हाथ बंटा सकते हैं । मगर नहीं ।

यह अकेले राजेश की आपबीती नहीं है, उसके जैसे अनेक लोगों की व्यथाकथा है ।

एक ओर तो आज बुजुर्गों की उपेक्षा, अवहेलना, तिरस्कार की शिकायतें आम हैं । बहू-बेटे परवाह नहीं करते, समय नहीं देते, अपने में मस्त रहते हैं । यही रोना रात-दिन सुनने में आता है । सहानुभूति भी होती है । दूसरी ओर जहां संतान आज्ञाकारी है, संवेदनशील है, वहां माता-पिता द्वारा उनका यूं शोषण किया जाता है । उनकी अच्छाई का अनुचित अनावश्यक लाभ उठाया जाता है । कैसी विडंबना है कि जाने-अनजाने माता-पिता ही अपनी संतान के उत्पीड़क बन बैठते हैं ! आवश्यक है कि बुजुर्ग भी संतान से अपेक्षाएं सीमित रखें ताकि उपेक्षा की नौबत न आने पाये ।

ओमप्रकाश बजाज
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर (म०प्र०)

एक घातक प्रयोग

लोकतांत्रिक प्रक्रिया में प्रत्याशी चुनने का ई०वी०एम० एक सशक्त माध्यम है और उसी से दिल्ली विधानसभा में आम आदमी पार्टी (आप) को 28 सीटें भी मिलीं और बी०जे०पी० की निष्क्रियता के कारण आप पार्टी को सरकार बनाने का स्वप्न भी पूरा हुआ । यदि केजरीवाल के मन में सी०एम० बनने की इच्छा न होती तो वे चुनाव प्रक्रिया में उलझते ही नहीं, लेकिन उपराज्यपाल से सरकार बनाने का निमंत्रण मिलने के बाद केजरीवाल ने जो एस०एम०एस० से वोटरों की राय जानने का प्रयोग किया उसमें सवा करोड़ दिल्ली मतदाताओं में से कुल ढाई लाख मतदाताओं ने एस०एम०एस० किये, जिनमें आधे सरकार बनाने के विरोध में थे लेकिन अगर इसी प्रयोग को आधार मानकर अन्य धार्मिक संगठन या जातीय संगठन या संप्रदाय संगठन भी सरकार पर दबाव बनाने के लिए एस०एम०एस० करने लगे तो देश में अराजकता फैल जाएगी ।

उदाहरण के तौर पर सोनिया गांधी निस्संदेह विदेशी मूल की हैं और पूरे भारत के कांग्रेस विरोधी लोग एस०एम० एस० द्वारा सोनिया गांधी को अपदस्थ करने की मांग करने लग जाएं तो क्या होगा ? यदि विश्व हिन्दू परिषद अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए एस०एम०एस० मांगने लगे तो देश में गृह-युद्ध शुरू हो जाएगा । अगर मायावती के समर्थक अम्बेडकर को भगवान का दर्जा दिलाने की मांग करने लग जाएं तो यह देश एक अखाड़ा बनकर रह जाएगा । माननीय सुप्रीम कोर्ट को एस०एम०एस० प्रयोगों पर तुरंत संज्ञान लेना चाहिए ।

रचना रस्तोगी
वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ

दहेज : एक आपराधिक कृत्य

कहते हैं कि अगर कीचड़ पर पत्थर मारो तो छींटा अपने मुंह पर आकर लगता है । बार-बार दहेज एक अभिशाप है, समाज में इस कुप्रथा पर न जाने कितने ही काव्य रचे गये हैं । आज 21वीं सदी का भारत जिसे यंगिस्तान, आधुनिक और महान बताया जाता है क्या वास्तव में महान है ?

पुराने समय में दहेज के नाम पर जलाकर मार देने के भयानक कारनामे इस महान देश में बहुत आम थे । सख़्त क़ानून, बदलते समय और मीडिया के प्रयत्नों की वजह से सोच में बदलाव आया । हर जगह 'दुल्हन ही दहेज़ है' की मुहिम को बढ़ावा तथा सम्मान मिला । 'आख़िर बहु भी तो बेटी है' कहकर बहू में बेटी को देखने की विचारधारा को तीव्र किया गया । यह सब पढ़कर मन को संतोष तो मिलता है कि चलो हालात बदल गये ? पर क्या ये सच है ?

एक पुरानी कहावत है 'एक आदमी शीशा साफ़ कर रहा था, पर बार-बार उसे लगता कि शीशे पर धूल है, वह शीशा साफ़ करता रहा, पर रात होने पर पता चला कि धूल तो उसके चेहरे पर थी । ठीक उसी तरह कि किसी दूसरे को बदसूरत कहने से अपनी सूरत सुन्दर नहीं हो जाती ? दहेज इसी छलावे का नाम है ।

''अरे आपकी बेटी का ही तो है'' हमें कुछ नहीं चाहिए । हमारा बेटा बहुत लायक़ है । आप शादी का कार्यक्रम ज़ोरदार रखना । कार में आपकी बेटी भी तो

घूमेगी ।''

क्या ये सब सही है ? बार-बार लड़की को ताना मारना उदाहरण प्रस्तुत करना कि हमारे रिश्तेदारों की शादी में इतना मिला, क्या ये सब सही है ? आजकल इन्हीं सब डर की वजह से रिश्ते टूट जाते हैं ।

कहा जाता है कि अच्छा हुआ हमारी बेटी का भविष्य बच गया वरना पता नहीं क्या होता ? सोचने की बात है कि क्या ये एक लड़की के दिलो-दिमाग़ पर उसकी आत्मा पर वार नहीं है । क्या ये अपराध नहीं है ? क्या ज़िन्दगी का आधार सिर्फ पैसा हो सकता है ? क्या बेटियां बाज़ार में मिलने वाला सामान है ? या फिर गाय-भैंस जिनकी बोली लगायी जाती है ? क्यों 21वीं सदी का पढ़ा-लिखा ये भारत हमारे सपनों, हमारी भावनाओं की क़द्र नहीं करता ? आज भी क्यों बेटियों को सिर्फ़ दर्द देने के तरीक़े बदले हैं ? क्यों कोई दुल्हन को दहेज नहीं मानता ?

क्या इतने महान कर्मों से स्वर्ग की प्राप्ति होती है ? कोई भी धर्म कभी अपमान, घृणा, तिरस्कार को समर्थन नहीं देता, तो आख़िर कब तक बेटियां तिरस्कृत होती रहें ? लूटपाट करने वाले ही सिर्फ़ डाकू-लुटेरे नहीं होते, किसी के सपनों का, ज़िन्दगी का, उम्मीदों का गला घोंटना भी गुनाह है, अपराध है, आख़िर कब तक और कब तक बेटियों को ये दर्द सहना होगा ? क्या कभी ''हिन्दुस्तान की बेटी'' आज़ादी, ख़ुशी और निडरता के साथ जी पाएंगी ?

दीप्ति सक्सेना

खराडी, पुणे, महाराष्ट्र-411014

विकास की ज़रूरत

मनुष्य को अपनी शारीरिक तथा आध्यात्मिक क्षमताओं को निरंतर विकसित करते रहना चाहिए । स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है । स्वस्थ जीवन स्वास्थ्य की परिचायक है । इसलिए हमें अपने आध्यात्मिक विकास के साथ ही साथ प्रयत्नपूर्वक अपनी शारीरिक क्षमताओं को पूर्ण रूप से विकसित करना चचाहिए । मानव जीवन में जन्म लेने के पीछे गहरा उद्देश्य है । इसे हम एक वास्तविक उदाहरण से समझ सकते हैं । जब हम मां के गर्भ में होते हैं तो वहां हमें न आंखों, पैरों और न ही हाथों की ज़रूरत होती है फिर भी हम मेहनत और लगन से अपने पैरों, हाथों तथा आंखें निर्मित करते हैं ।

यह सारी मेहनत हम गर्भ की दुनिया से दूसरी दुनिया यानी सांसारिक लोक में आने के लिए करते हैं । अगर हम मां के गर्भ में रहकर यह सोचे कि हमें अभी आंखों की क्या ज़रूरत है ? अभी हमें पैरों की तथा हाथों की क्या ज़रूरत है ? जब हम मां के गर्भ में थे तब अपने उपरोक्त अंगों तथा प्रत्यांगों को न विकसित करते तो इस संसार में आकर हम क्या करते ? तब फिर हम अपनी उसी दुनिया में रहकर निष्क्रिय पड़े रहते ।

डॉ॰ जगदीश गांधी

संस्थापक, सिटी मान्टेसरी स्कूल,

लखनऊ (उ॰प्र॰)

नयी दिशा

'कान्ति' का अंक निरंतर मिल रहा है । धन्यवाद, साधुवाद स्वीकारें । 'कान्ति' के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूं । 'कान्ति' समाज एवं देश को निरंतर नयी दिशा की ओर उन्मुख करता रहेगा आशान्वित हूं ।

डॉ॰ रामदुलार सिंह 'पराया'

चुनार, मिर्ज़ापुर, उत्तर प्रदेश-231304

चोर-चोर मौसेरा भाई

पांच वर्ष बाद
चोर-चोर का खेल
होता है
हर प्रत्याशी / खुद को
ईमानदार/और दूसरे को
चोर बताकर
उसकी बेईमानी पर रोता है
जबकि जनता की समझ में
यह बात बहुत अच्छे से
है आयी
कि चोर-चोर मौसेड़े भाई ।

प्रो॰ (डॉ॰) शरद नारायण खरे

विभागाध्यक्ष इतिहास, शासकीय महिला महाविद्यालय,

मण्डला (म॰प्र॰) 481661

अच्छी पत्रिका

बड़ी अच्छी पत्रिका निकाल रहे हैं आप । अज़ान के तरीक़े व मतलब भी देना चाहिए । और ज़रा-सा ध्यान देंगे तो पत्रिका और भी बेहतरीन हो जाएगी ।

रतिलाल शाहीन

अंकिता सोसा, अंधेरी, मुम्बई

मुकम्मल इन्सान, सच्चा इन्सान

■ मौलाना अब्दुल क़ुद्दूस हाशिमी

मैंने प्रोफ़ेसर केंट विल स्मिथ को बड़ा योग्य, इन्तिहाई माक़ूल और बहुत अच्छा आदमी पाया। उनसे मेरी अनेकों मुलाक़ातें रहीं। एक दिन वे कहने लगे–

"क्या इस्लाम हमेशा से था ?"

मैंने कहा : जी हां, बिल्कुल, वह हमेशा से था।

कहने लगे : इस्लाम का तो शाब्दिक अर्थ है : अनुकरण के लिए सिर झुका देना। मैंने कहा : पर यह बताओ कि इसका पता कैसे चलेगा ? टेलीफ़ोन पर तो अल्लाह मियां बोलते नहीं। टेलीग्राम दो तो जवाब नहीं देंगे। ख़त लिखो तो जवाब नहीं देंगे, तो फिर कैसे पता चलेगा कि उनकी पैरवी कैसे की जाए ? मैंने कहा : सुनो, एक लड़का था। वह कहता था यह आदमी जो खड़ा है, मेरा मामू है। मैंने कहा : वाक़ई तुम्हें पता है कि यह तुम्हारा मामू है ? तुम अपनी मां को सच्ची समझते हो कि यह उसका भाई है ?

कहने लगा : नहीं, मां की सच्चाई पर मुझे सन्देह है।

मैंने कहा : तो फिर वे तुम्हारे मामू कैसे हुए ?

यह बयान करके मैंने कहा :

भाई ! मुहम्मद (सल्ल०) क़ुरआन मजीद को अल्लाह की किताब कहते हैं...मैंने कहा : अच्छा भाई ! वह जो ख़ुदा की मर्ज़ी थी उसका पता कैसे चलाएंगे ? और अल्लाह का अनुकरण कैसे करेंगे ? कोई साधन नहीं। इसलिए सीधी-सी बात मानिए कि यदि रसूलुल्लाह की सच्चाई का यक़ीन है तो समझ में आएगा कि यह क्या है वरना इसके अलावा सिरे से यह अक़्ल की बात ही नहीं कि जब ख़ुदा की मर्ज़ी नहीं पता तो उसकी रिज़ा की कोशिश कैसे होगी ?

कहने लगे : यह तो सब कहते हैं।

मैंने कहा : अच्छा, ईसा मसीह के मुखार बिन्दु से निकला हुआ कोई एक टुकड़ा सुना दो जिसमें वे अल्लाह की मर्ज़ी बयान करते हों।

वे कहने लगे : यह तो नहीं है।

मैंने कहा : फिर किस अफ़साने की बात करते हो ? उस इस्लाम की जो हज़रत आदम से लेकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) तक था ? इसका तो एक ही आशय हो सकता है कि जो रसूलुल्लाह ने करके बतलाया और कह के बतलाया, हज़रत मूसा (अलैहि०) ने भी यह बताया होगा।

हज़रत इबराहीम ने भी यही बताया होगा। हज़रत नूह (अलैहि०) ने भी यही बताया होगा। लेकिन बाबा, हैं कहां उनके शब्द ?

तुम कहते हो कि अनुवाद के अनुवाद का अनुवाद ! और उसके अनुवाद का नाम नहीं बताते हो, इसलिए कि यह बेकार-सी बात है। एक चुटकुला तो यह सुना दिया आपको कि अम्मां को तो सच्चा नहीं कहेंगे, लेकिन अब्बा को अब्बा कहेंगे। अच्छा, कैसे कहेंगे ?

ऐसा उलझा हुआ दिमाग़ है साधारण से मसले हैं और पता चलेगा कि बात कह दी बड़ी विद्वतापूर्ण ! हालांकि बिल्कुल बेकार-सी बात है। ख़बर का कोई महत्व नहीं होता जब तक कि ख़बर लाने वाले की सच्चाई पर विश्वास न हो। ख़बर तो हमेशा सान पर चढ़ी रहती है। कभी वह सच्ची होती है और कभी झूठी निकलती है। जब तक ख़बर देने वाले सूत्र को सच्चा न मान लिया जाए, दुनिया का सारा अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून ही ख़त्म हो जाएगा, दुनिया का सिस्टम ही ख़त्म हो जाएगा यदि इस क़िस्म की कोई तरतीब न हो। रसूलुल्लाह ख़बर देने वाले हैं, और उनके अलावा किसी और ख़बर देने वाले के शब्द हमारे पास नहीं। फिर इसके बाद अल्लाह के अनुकरण के और कौन से तरीक़े हैं ? इतना ग़लत तार्किक दावा है यह कि इसका जवाब नहीं हो सकता।

जब मैंने उन्हें यह समझाया तो ख़ैर, वह इधर-उधर की बातें करने लगे। बस, क़िस्सा ख़त्म !

ऐसे ही एक और चुटकुला सुना दूं। जब मैं चीन गया तो वहां 'डॉक्टर ऑफ़ नेचुरल गाइडेंस' बताया करते थे कि मरने के बाद कुछ नहीं होगा। सब ग़लत है कि यह होता है और वह होता है। उन्होंने मुझ से वक़्त लिया कि मिलने आ रहा हूं। मैंने कहा कि ज़रूर आइये। वे आये और उन्होंने

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

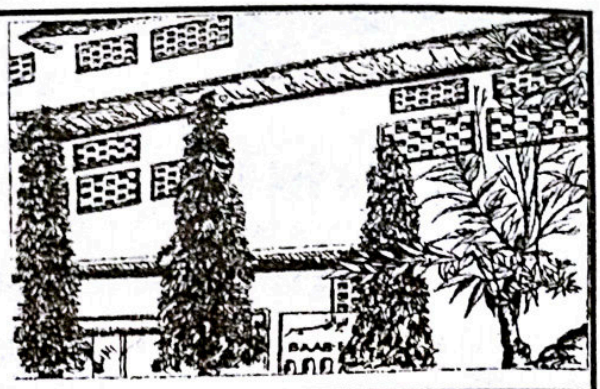

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

• 28 वर्षीय सेवाएं • 19 विभाग • शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक • पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science • 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया • प्रौढ़ शिक्षा • वोकेशनल सेन्टर • कटिंग और सिलाई: 8 बैच 88 छात्राएं • ज़री वर्क्स : 5 बैच 53 छात्राएं • 1993 ई॰ से 2014 ई॰ तक 120 अनाथ बच्चियों और 51 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया • वार्षिक ख़र्च : 30 लाख रुपये से अधिक • आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे • इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है • किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 15,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : • ज़कात • सदक़े • अतियां • पैदावार की ज़कात • दीनी किताबें • ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी • स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक • मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना • यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । • इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Forcign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

एक घंटा भाषण दिया और कहने लगे कि कोई बात है पूछने की ! मैंने कहा : पूछने की क्या बात रही ! ज़िन्दगी भर परेशान रहे कि मरने के बाद पता नहीं इनाम मिलेगा या सज़ा होगी । आज तुमने छुटकारा दिला दिया । अब जो जी में आये करो । शुक्रिया भाई ! अब क्या प्रश्न करूं ! उन्होंने कहा : नहीं, नहीं, कुछ प्रश्न करो ।

मैंने कहा : अच्छा भाई ! सिर्फ़ यह बता दीजिए कि "मरने के बाद कुछ नहीं होता है–इसकी ख़बर आपको कैसे हो गयी ?

कहने लगे : यह क्या प्रश्न हुआ ?

मैंने कहा : सामने एक पेड़ है । उसके पीछे एक मकान है । उस मकान में कोई औरत बैठी है या नहीं बैठी है–इसका जवाब दे सकते हो ? यदि इसका जवाब सकारात्मक देते हो कि हां, है, तो तुम्हें इसका पहले से ज्ञान होना चाहिए । और यदि नकारात्मक उत्तर देते हो तो भी इसका ज्ञान होना चाहिए । यदि मैं तुम से पूछूं कि तुमने उस औरत को वहां जाकर देखा है, और जवाब में तुम कह दो कि कभी नहीं देखा ! अच्छा यदि किसी देखने वाले ने तुम को जवाब दिया तब तुम क्या कह सकोगे कि कोई देखने वाला ही नहीं ? अच्छा, अब तुम्हारे जवाब की क़ीमत कितनी रह गयी ? हिसाब लगाकर बताओ तो सिफ़र ! सिरे से निरर्थक होकर रह गयी । तुम्हारा सारा जवाब सिफ़र होकर रह जाता है क्योंकि तुम्हारे पास ज्ञान ही नहीं । इसलिए कि न तुमने ख़ुद देखा, न किसी देखने वाले को देखा । तो मैं कहता हूं कि मरने के बाद कुछ नहीं होता । सवाल-जवाब, इसका तजुर्बा आपको कितनी बार हुआ ? कितनी बार मर कर देखा ? कहने लगे : कभी नहीं ! मैंने कहा : किसी मरने वाले ने आ के जवाब दिया ? कहने लगे कि वह भी नहीं । तो मैंने कहा : अच्छा, पूर्ण अज्ञान पर यक़ीन रखते हो ? क्या क़ीमत होगी ? पूर्ण अज्ञान, बेमयाने सिरे से तर्कहीन बात ! मैंने कहा : तुम्हारे पास कोई साधन नहीं ? तो गुस्से में कहने लगा कि तुम्हारे पास क्या साधन है ?

मैंने कहा कि मेरे पास 52 साल का एक बूढ़ा निहायत नेक आदमी चला आता है और वह कहता है कि मैंने मेराज में जाकर अपनी आंखों से देखा है, चश्मदीद गवाह हूं । अब दो ही बातें हो सकती हैं : या तो वह झूठा है या सच्चा ! मैंने तलाश करना शुरू किया तो 'सौबिया' को पकड़ा, 'हलीमा' से पूछा जिसने उसे दूध की पहली बूंद पिलायी थी । उस बूढ़े आदमी को पूछते हो ? उसने कहा कि नहीं, कभी झूठ नहीं बोला । तलीमा से पूछा कि तेरी गोद में उसने तुतला कर बोलना सीखा था । उसने कहा कि कभी झूठ नहीं बोला । उक़बा बिन अबी-मुऐत, फिर अबू लहब से पूछा, अबू जहल से पूछा और बीबी सैदा बिन अबी ज़मआ सब ने कहा कि नहीं साहब ! इसने कभी झूठ नहीं बोला, तो मैं सिर पकड़कर बैठ जाता हूं कि आख़िर यह व्यक्ति अपने फ़ायदे के लिए झूठ नहीं बोलता है, फिर अपना विरोध करने के लिए झूठ क्यों बोलेगा । हमने उसको सच्चा मान लिया । उसकी बात मान ली । अब बताओ भले और बेवक़ूफ़ आदमी का फ़र्क़ ?

मैं एक डॉक्टर के पास पहुंचा । उसने मेरी नब्ज़ पकड़ी और कहा कि तुम्हें पुरानी पेचिश है । उसने एक शीशी निकालकर दी । उसके ऊपर लिखा हुआ था : 'प्वाइज़न' Poison! और उस शीशी से एक गोली निकालकर मुझे दी कि इसे खा जाओ । तब मैंने न डॉक्टर का रजिस्ट्रेशन देखा और न सर्टिफिकेट, बस दवा खा गया ।

उन्होंने कहा : हां यही होता है । मेरे दोस्त ! तुमने डॉक्टर का बोर्ड देखकर अपनी जान उसके हवाले कर दी तो तुम बहुत अक़लमन्द हो, और हमने 52 वर्ष ठोंक-बजाकर उसको देखा और अपना ईमान उसके हवाले कर दिया तो हम बेवक़ूफ़ हैं !

देखिये, अस्ल बात यह है कि उन लोगों के सोचने का अंदाज़ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ग़लत है । उनकी विचारशैली ही इतनी ग़लत है कि वे ग़लत नतीजे तक पहुंचते हैं । उसकी वजह यह है कि तुमको यह नज़र आता है कि संसार में जितने आन्दोलन भी जन्म लेते हैं वे जीवन के किसी एक पहलू को प्रभावित करते हैं । कभी यह आर्थिक होता है तो कभी राजनीतिक । पर एक आन्दोलन ऐसा वजूद में आया जिसने मानव-जीवन के हर अंग को प्रभावित किया । निकाह-तलाक़ के विधि-विधान बदल दिये । खाने-पीने के सिद्धांत बदल दिये । सोचने के अंदाज़ बदल दिये । यह बदल दिये-वह बदल दिये ।

ऐसा महान और बहुआयामी आन्दोलन जो मानव-जीवन के हर पहलू को प्रभावित करता चला गया । और इस आन्दोलन को बरपा करने वाला वह बेबस इन्सान है जो न किसी राजवंश के राजकुमार होने की पृष्ठभूमि रखता है । न वह किसी कॉलेज का डिग्री होल्डर है, पर इसके बावजूद

उसका आन्दोलन सफल हुआ, और इस हद तक सफल हुआ कि अपने जीवन में ही उसे परिपूर्ण होते देखा । 9 लाख, 29 हज़ार, 6 सौ वर्ग मील पर उसका शासन-क़ायम हो गया-केवल 10 वर्ष के अन्दर ।

जो देखता है, घबरा जाता है कि ऐसा बेबस आदमी कि तायफ़ के बाज़ार में वे लोग पत्थर फेंक रहे हों और कोई एक गिलास पानी तक देने वाला नहीं । और केवल 10 वर्ष की अवधि में इतने बड़े भू-भाग पर हुकूमत क़ायम हो जाती है । ऐसी सफलता किसने देखी-जबकि मानव इतिहास का 6 हज़ार वर्ष का ज्ञात इतिहास इस बात पर गवाह है कि संसार में किसी आन्दोलन चलाने वाले ने अपने जीवन में उसको सफल होते नहीं देखा । याद दखिये कि इन्सानी ज़िन्दगी इतनी छोटी होती है कि किसी इन्सान की ज़िन्दगी में कोई आन्दोलन कभी कामयाब नहीं होता । एक घटना है मानव-इतिहास में, केवल एक घटना-मुहम्मद (सल्ल०) ने एक आन्दोलन चलाया और अपने जीवनकाल में उसे कामयाब होते देख लिया । जब ऐसी घटना अंग्रेज़ बेचारे पढ़ने वाले की समझ में आती है तो फिर वह तरह-तरह की बातें निकालता है कुछ जिहालत से और कुछ अपने पूर्वाग्रह से । उसे इतनी मोटी बात समझ में नहीं आती कि उसकी वजह यह थी कि मुसलमानों को ईमान वाला होने के चलते रसूल (सल्ल०) पर पूरा विश्वास (मुकम्मल ईमान) हो गया-यह बात ग़ैर-मुस्लिम की समझ में नहीं आती...।

मूल प्रश्न यह है कि इस सृष्टि में कुछ पावन सच्चाइयां हैं उन पर सभी एकमत हैं कि इन्सान को ऐसा होना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए, अमानत में ख़यानत नहीं करना चाहिए...आदि । यह विश्वव्यापी सच्चाई है, इसमें कोई दो राय नहीं, इसमें किसी धर्म और समुदाय का भी अन्तर नहीं । बस, इस सच्चाई वाला आदमी संसार से लुप्त हो गया था, इन्सान को नज़र नहीं आ रहा था । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को जब नबी बनाया गया तो दुनिया ने देखा कि अच्छा-भला आदमी किसे कहते हैं ।

जब पहली बार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) रसूल के रूप में एक भले आदमी दीख पड़े तो 'भले आदमी' का जो मानदंड, मानवता ने आदम से लेकर अब तक क़ायम कर रखा था, उस पर एक आदमी सही उतरा । उसके बाद सबके सब झुक गये । यही तो एक आइडियल था जिसको दुनिया तलाश कर रही थी । ऐसी स्थिति में हमें चाहिए कि इस्लाम पर शोधकार्य करने वाले पश्चिमी विद्वानों के लिए हम एक विधिवत साहित्य तैयार करें । दुनिया को समझाये कि तुम ईमान से नहीं समझते तो इतना तो समझते हो कि 'आदर्श-पुरुष था, भला आदमी जो था वह संसार में 7 हज़ार वर्ष से नहीं मिल रहा था । अनेक कालों में पैग़म्बर कोशिश करते रहे, लेकिन ऐसा आइडियल नहीं मिल रहा था । और जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) के व्यक्तित्व में इन्सानियत ने ऐसा आइडियल देखा तो उसे मान लिया ।

यह इतनी मोटी-सी बात है जो तुमको समझ में नहीं आ रही है । तुम देखो कि इस 9 लाख वर्ग मील में कितना भाग मिलिटरी ऑपरेशन (फ़ौजी कार्रवाई) के ज़रिये आया ? केवल 4 हज़ार वर्ग मील ! तो इस्लाम पर शोध करने वाले पश्चिमी विद्वानों की ग़लती यह है कि ये सही और तार्किक रूप में समझने की कोशिश नहीं करते । अब रही दुश्मनी तो विजित क़ौम को विजयी क़ौम से हमेशा दुश्मनी रही है । हमें चाहिए कि क्रमबद्ध तरीक़े से केवल उनके खंडन में नहीं बल्कि ज़्यादा सही नक़शा पेश करें । भला देखिए, इसमें क्या तार्किक मुग़ालता है ? सीधी बात है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के व्यक्तित्व में एक मुकम्मल इन्सान नज़र आ गया । समझ में न आने वाली बात क्या है ? मैंने प्रोफ़ेसर स्मिथ से कहा : बड़ा अतार्किक अंदाज़ा है आप लोगों का । तार्किक अंदाज़ यह है कि सूचनाएं इकट्ठी करो इस प्रकार कि अस्ल हक़ीक़त ख़ुद सामने आ जाए ।

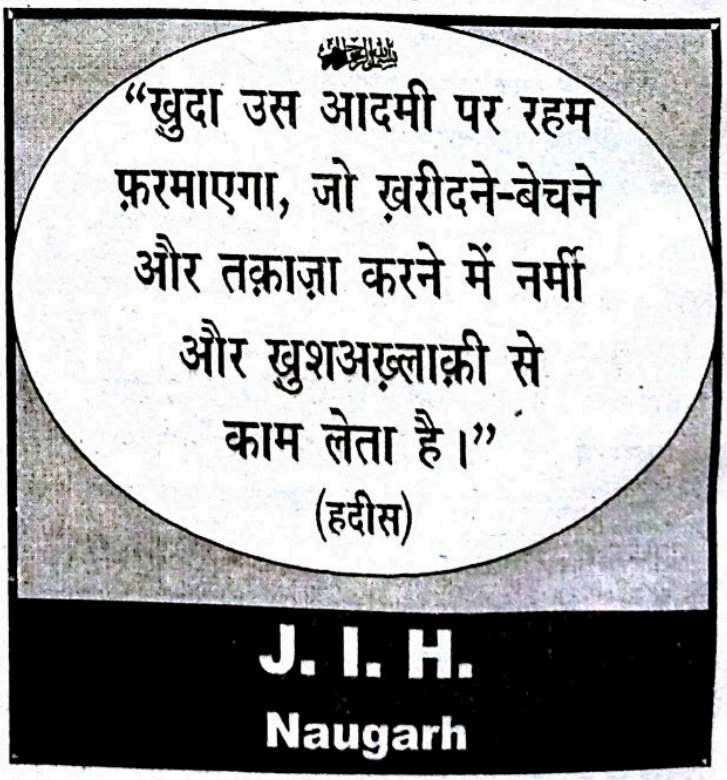

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और व्यक्ति-निर्माण

■ डॉ० अब्दुल हलीम उवैस

हिरा पहाड़ी की ग़ार में, क़ुरैश क़बीले की जाहिलाना ज़िन्दगी से दूर, मक्का के हंगामे से परे, रूहानी सुकून व इत्मीनान की हालत में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पास वह्य आयी । आप (सल्ल०) ने पहले के नबियों की तरह इसे क़ुबूल फ़रमाया । सबसे पहले क़ुरआन की ये आयतें नाज़िल हुईं–

'ऐ रसूल तुम अपने रब का नाम पढ़ा करो, जिसने सब कुछ बनाया है । इन्सान को खुदा ने जमे हुए ख़ून के लोथड़े से पैदा किया । अपने रब का नाम पढ़ा कर । तेरा परवरदिगार बड़ी इज़्ज़त वाला है, जिसने क़लम के ज़रिए इल्म सिखाया । इन्सान जो न जानता था उसे सिखाया ।'

'इक़रा' (पढ़ो) की यह आवाज़ इस्लाम के सार्वभौम आह्वान का प्रारंभ थी । यह आह्वान तीन चरणों से गुज़रा–

1. व्यक्ति-निर्माण (तामीरे फ़र्द)
2. शासन-निर्माण (तामीरे हुकूमत)
3. सभ्यता-निर्माण (तामीरे तहज़ीब)

और इसी आवाज़ से एक आधुनिक मानव-सभ्यता का सूत्रपात हुआ, जिसका प्रतीक था–

'इक़रा बिस्मि रब्बि...' (पढ़ो अपने रब के नाम से)

इसी आवाज़ से व्यक्ति-निर्माण का चरण शुरू हुआ । अल्लाह के रसूल इस संदेश प्रारंभिक संबोधन थे । आप (सल्ल०) ने अपनी क़यादत और रहनुमाई में जिन व्यक्तियों को तैयार किया उन्होंने आह्वान (दावत) को पहुंचाया और रसूल की शिक्षानुरूप शासन एवं सभ्यता की आधारशिला रखी ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर वह्य का सिलसिला जारी रहा । अल्लाह ने फ़रमाया–

'हम तुम पर बहुत भारी हुक्म भेजेंगे ।'

तीन साल तक आप (सल्ल०) छुपे रूप में लोगों को इस्लाम की दावत देते रहे । फिर अल्लाह की ओर से वह्य नाज़िल हुई कि अपने क़रीबी लोगों को खुले तौर पर इस्लाम की दावत दीजिए–

'और अपने क़रीबी परिवार वालों को समझाया करो ।'

दस साल तक आप एलानिया तौर पर दावत देते रहे और इस राह में ऐसी-ऐसी यातनाएं सहते रहे कि जिन्हें सुनकर इन्सान कांप उठता है । दावत के दौरान आप (सल्ल०) को यह अंदाज़ा हुआ कि मानव की मुक्ति के लिए लौकिक कारकों के साथ-साथ खुदा की तौफ़ीक़ ज़रूरी है–

'तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है ।'

इसलिए तायफ़ से वापसी के बाद कांपते होठों और टूटे हुए दिल के साथ आपने यह दुआ की–

'ऐ अल्लाह ! मैं तुझ ही से अपनी कमज़ोरी, साधनहीनता की बात कहता हूं । ऐ कृपावान तू कमज़ोरों का और मेरा भी परवरदिगार है । मुझे तू किसके हवाले करेगा-दूर वाले के जो अभद्रता से पेश आये या दुश्मन के जिसे तूने मेरे मामले का मालिक बनाया है ? अगर तू मुझ से नाराज़ नहीं तो मुझे फिर कोई परवाह नहीं ।'

इस दुआ के बाद दावत का एक नया दिव्य (आसमानी) रुख़ ज़ाहिर हुआ और मेराज का वाक़िया पेश आया ।

गुप्त आह्वान के तीन वर्षीय चरण में इस्लाम क़ुबूल करने वालों की तादाद पचास से अधिक न थी । इनमें आप (सल्ल०) के ख़नदान के सदस्य अग्रणी थे । आप (सल्ल०) की पत्नी हज़रत ख़दीजा, आप (सल्ल०) के सेवक हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) और चचाज़ाद भाई हज़रत अली (रज़ि०) इन लोगों के इस्लाम क़ुबूल करने से स्पष्ट रूप से साबित होता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का चलीस वर्षीय जीवन एक श्रेष्ठ पावन जीवन था । इसलिए कि इन्सान अपने ख़ानदान और क़रीब के लोगों से झूठ बोलने के लिए अंत में आमादा होता है ।

बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोग अपने घर के भीतर एक आम इन्सान की तरह नज़र आते हैं । वाल्टर का मशहूर कथन है–'आदमी अपने घर में बड़ा और ख़ानदान में नायक नहीं होता ।'

इसका मतलब यह है कि इन्सान की महानता का

एतराफ़ उससे क़रीब रहने वाले नहीं करते, क्योंकि वह उसके छुपे गुणों, आचरण से वाक़िफ़ होते हैं, जिन्हें महानता के प्रतिकूल समझा जाता है । लेकिन यह नियम आप (सल्ल०) पर लागू नहीं होता । स्मिथ का कथन है–'बड़े लोगों के मामलात के बारे में जो कहा गया है वह कम से कम पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर लागू नहीं होता ।'

वह्य की इब्तिदा के बाद जबकि आप घबरा उठे थे, आप (सल्ल०) की पत्नी हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने यह वाक्य आप (सल्ल०) से कहा था–'आप परोपकार करते हैं, ग़रीबों, असहायजनों की मदद करते हैं और मेहमाननवाज़ी करते हैं ।'

यह उस महिला की गवाही है जो उम्र में अपने शौहर से पन्द्रह वर्ष बड़ी थीं और आप (सल्ल०) से विवाह से पहले दो बार विधवा हो चुकी थीं । जबकि शौहर ने इससे पहले कोई विवाह नहीं किया था–और वह यह गवाही विवाह के पन्द्रह वर्षों बाद दे रही हैं, जबकि मियां-बीवी एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ-परख चुके थे ।

आपके सेवक ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) के बारे में मशहूर है कि उन्होंने आप (सल्ल०) के साथ ग़ुलाम बनाकर रहने को अपने बाप के साथ आज़ाद बनकर रहने पर वरीयता दी । अज्ञानकाल में भी उन्होंने आप (सल्ल०) का ख़ादिम व रफ़ीक़ बनना पसन्द किया था, लेकिन बाप के घर में आज़ाद और मालिक बनना पसन्द नहीं किया ।

अव्वलीन मुसलमानों में इन नामों पर ग़ौर कीजिए–हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) आप (सल्ल०) के सबसे क़रीबी जांनिसार आज़ाद व बालिग़ लोगों में से पहले मुसलमान हैं । उस्मान, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअद बिन अबी वक़ास, ज़ुबैर, तलहा, अबू उबैदह, अलअरक़म बिन अबी अरक़म जिनका घर दावत के ख़ुफ़िया मरहले में पनाहगाह था, उस्मान बिन मज़ऊन, सईद बिन ज़ैद बिन अमरो बिन नफ़ैल, फ़ातिमा बिन्त ख़त्ताब, अस्मा बिन्त अबूबक्र, आयशा, ख़बाब बिन अल-अरब, आमिर बिन फ़हीरा, ख़ालिद बिन सईद और उनकी पत्नी अमीना, अम्मार बिन यासिर, सुहैब, उमैर और इब्ने मशअद–ये सब लोग दावत की शुरुआती ज़माने में मुसलमान हुए । इनमें से हरेक भिन्न क़बीले, तबक़े, वर्ग और वतन की नुमाइंदगी करता था । इनमें मालदार भी थे और ग़रीब भी, हाशमी भी थे और उमवी भी, अरबी भी अजमी भी, मर्द भी थे और औरतें भी । इन प्रतिष्ठित लोगों को इस्लाम के अलावा किसी भी सामूहिक या आर्थिक फ्रेम के भीतर रखने की कुछ लोगों की कोशिश इतिहास की खुली हक़ीक़तों पर ज़ुल्म है ।

और यह कल्पना भी ज़ुल्म है कि अक़ीदे (आस्था, विश्वास) की सत्यता के अलावा किसी दूसरे मक़सद या ज़िन्दगी की ज़िम्मेदारियों से भागते हुए इन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया था । ये थोड़े से लोग इस्लाम क़ुबूल करने के बाद पूरी दुनिया के चैलेंज का मुक़ाबला कर रहे थे । इनमें से हरेक को यह ख़तरा था कि अगर उसके इस्लाम क़ुबूल करने का हाल दुश्मनों को मालूम हो गया तो फिर ख़ैर नहीं । हक़ पर इनका ईमान हक़ (सत्य) के लिए था और इस ईमान की ख़ातिर उन्हें अपनी धन-सम्पत्ति, सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यापार, काम-धंधे और जान हर चीज़ की क़ुरबानी देनी पड़ी थी ।

दावत का चौथा साल शुरू हुआ तो अल्लाह के इन बन्दों को अपने ईमान व अक़ीदे की बहुत बड़ी क़ीमत अदा करनी पड़ी । इससे पहले ये लोग हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की छत्रछाया में अरक़म के घर में रूहानियत व इबादत से सुगंधित फ़ज़ा में जीवन-यापन कर रहे थे । लेकिन अब इस सुगंध में ख़ून का प्रभाव पड़ चुका था । उन्हें काबा में या किसी इन्सान के घर में या कहीं बाहर अमान (संरक्षण, सुरक्षा) नहीं थी, सहारा सिर्फ़ अल्लाह का था । उन्हें जो तक़लीफ़ें पहुंचाई जाती थीं, उनका बड़े-बड़े ज़ालिमों के इतिहास में भी उल्लेख नहीं ।

मोमिनों की इस जमाअत में ईमानी अक़ीदे ने आज़ाद को ग़ुलाम के साथ और आक़ा को ख़ादिम के साथ जोड़ दिया था । हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने जब हज़रत बिलाल (रज़ि०) को देखा कि कठोर यातनाओं की हालत में भी 'अहद' 'अहद' (एक ही ईश्वर) पुकार रहे हैं तो उन्हें आज़ाद कर दिया । इसी तरह इस्लाम ही के लिए उन्होंने इन छह लोगों को भी आज़ाद कर दिया–आमिर बिन फ़हीरा, उम्मे उबैस, ज़फ़ीरा, वहदिया, उनकी लड़की और जारिया बनी मोयल ।

क़बीला बनी मख़ज़ूम के लोग हज़रत अम्मार बिन यासिर और उनके वालिदैन को तपती हुई धूप में बाहर निकालकर तकलीफ़ पहुंचाते थे । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का उधर से गुज़र हुआ तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया–

'यासिर के घर वालो ! सब्र करो, जन्नत तुम्हारी प्रतीक्षा में है ।'

अबू जहल किसी शख़्स के इस्लाम क़ुबूल करने की ख़बर सुनता तो उसे डांटता-फटकारता और धमकी देता–'अपने पूर्वजों के श्रेष्ठ धर्म को छोड़ दिया, हम तेरी अक़्ल व होश ठिकाने लगा देंगे, तेरी इज़्ज़त को ख़ाक में मिला देंगे, तिजारत को ख़त्म कर देंगे और दौलत को बर्बाद कर देंगे ।'

इस दौर में ज़ुल्म-दमन का ऐसा बोलबाला था कि मक्का का रेगिस्तान, साइबेरिया का मैदान या अबू ज़ेबल का क़ैदख़ाना महसूस होता था, जहां से मज़लूमों की चीख़-पुकार, औरतों का विलाप और कोड़ों की फटकार के अलावा और कोई आवाज़ नहीं आती थी ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) इन अत्याचार-पीड़ितों के साथ थे आप उन्हें इत्मीनान दिलाते थे कि अल्लाह का वादा अटल है और अपने सामर्थ्यवान साथियों (सहाबा) को असहायजनों की मदद की नसीहत फ़रमाते थे और शांतिपूर्ण स्थानों की ओर हिजरत का हुक्म फ़रमाते थे–'अगर तुम हब्शा चले जाओ तो बेहतर होगा, वहां के बादशाह के पास किसी पर ज़ुल्म नहीं होता । वह सच्चे लोगों की जगह है । फिर अल्लाह तुम्हारी मुश्किलों का कोई हल पैदा फ़रमाएगा ।'

जो लोग वहां हिजरत करके गये, उन्हें अम्न व सुकून हासिल हुआ और आज़ादी के साथ दीन के अहकाम पर अमल का मौक़ा मिला । मुसलमानों की हब्शा हिजरत (विस्थापन) का मतलब यह था कि ईमान व अक़ीदे के मुक़ाबले में धरती और सीमित वतनपरस्ती की कोई हक़ीक़त नहीं है ।

यह हिजरत अक़ीदे का एक सफ़र था, जिस तरह अल्लाह पर ईमान लाने वाले बन्दों 'अस्हाबे कहफ़' ने घर छोड़ा था । इस वाक़िये से दिलों में पेवस्त मुहब्बत और वफ़ादारी के जज़्बे का भी इम्तिहान अपेक्षित था, ताकि इस्लाम का मर्तबा सबसे ऊपर हो और दूसरे तमाम ताल्लुक़ात और रुझानों को अगर कोई दर्जा दिया जाए तो इस्लाम के बाद का दर्जा दिया जाए ।

यह कहा जा सकता है कि हब्शा की हिजरत अपने मक़सद में कामयाब रही और मुसलमानों को विभिन्न अज़ाबों, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक यातनाओं से निजात मिली । वरना मुमकिन था कि शासन एवं सभ्यता के निर्माण का चरण शुरू होने से पहले ही मुसलमानों की शक्ति क्षीण हो जाती और वे अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा न कर पाते ।

मुशरिकों ने इस्लाम के विरोध में ख़तरनाक मंसूबों के मुताबिक़ हर कोशिश की–और आर्थिक एवं धार्मिक तजुर्बे के मुताबिक़ हर वह राह अपनायी जो उनके लिए मुनासिब नज़र आयी । इस्लाम के मुक़ाबले के लिए इन साधनों की हैसियत जो भी हो, लेकिन हम यह ज़रूर कहेंगे कि बातिल (असत्य) ने हर दौर में हक़ (सत्य) के मुक़ाबले के लिए यही पद्धति अपनायी है ।

इन साधनों में आर्थिक एवं सामाजिक लालच के साथ-साथ रीति-रिवाजों की उन घिसे-पिटे परम्पराओं का सहारा भी है जिनके ज़रिए निगाहों को सत्य के अवलोकन से रोकने की कोशिश की जाती है और अगर सत्य आच्छादित होता नज़र आये तो फिर यातनाओं का सहारा लिया जाता है ।



मकतबा अलफहीम मऊ

की नई हिंदी इस्लामी पुस्तकें

मुख़्तसर तफसीर अहसनुल बयान	450/=	सुन्नत के मसाइल इकबाल कीलानी	80/=
बुलूगुल मराम	275/=	तौहीद के आंसू	65/=
नबूवत की किरनें मौ० सफीउरहमान मो०	275/=	हमारी दावत किताब व सून्नत	40/=
हुक़ूक़ुलएबाद सलाहुददीन यूसुफ	55/=	चेहरे का पर्दा मुस्तहब या वाजिब//	20/=
हुक़ूक़ुल औलाद सलाहुददीन यूसुफ	50/=	मुहम्मद(स०) हिन्दू किताबों में	65/=
हुक़ूक़ुज़्ज़ौजैन सलाहुददीन यूसुफ	32/=	तावीज़ गंडा की हक़ीक़त	25/=
सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक रज़ि:	25/=	और मैं मर गया	32/=
सैय्यदना उमर फारूक़ रज़ि:	25/=	मसला उर्स और ग्यारहवीं	25/=
सैय्यदना उसमान गनी रज़ि:	25/=	इस्लाम और इमान के अरकान	80/=
सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि:	25/=	किताबुत्तौहीद	75/=
इस्लाम पर ४० एतेराज़ात और उसके जवाबात	80/=	क़ुरआन की शीतल छाया	85/=
क़ुरआन और विज्ञान डा. ज़ाकिर नाइक	50/=	अल्लाह और उसके रसूल की पहचान	50/=
इस्लाम और हिन्दू धर्म में समानताएं//	50/=	जादू का इलाज	85/=
क्या क़ुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है //	60/=	कलमा-ए-तौहीद अर्थ, महत्तव, फज़ीलत	28/=
विशेष धर्मों में ईश्वर की कल्पना //	28/=	इस्लाम एक नज़र में	50/=
इस्लाम में औरतों के अधिकार//	60/=	इस्लाम खालिस क्या है	22/=
इस्लाम आतंकवाद या भाईचारा //	50/=	इस्लामी अक़ीदा	22/=
मांसाहार उचित या अनुचित //	60/=	मुसलमान का अक़ीदा(पाकेट)	12/=
जन्नत का बयान इक़्वाल कीलानी	120/=	मासूरह दुआएं	30/=
जहन्नम का बयान इकबाल कीलानी	130/=	हिसनुल मुसलिम(उच्चारण सहित)	40/=
नमाज़ के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=	हिसनुल मुसलिम	35/=
तौहीद के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=	परदा	35/=

आप घर बैठे किताबें VPP डाक द्वारा मँगा सकते हैं। एकाउंट में रक्म ट्रांस्फर करने पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा किताबें भेजने की सुविधा है।

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com

वह पुस्तक जो किसी से छिपाकर नहीं रखी गयी

❖ मुनव्वर हुसैन

आकाशीय पुस्तकें ईश्वर का निजज्ञान हैं । सत्य एवं असत्य का ज्ञान कराने वाली ईश्वरीय पुस्तकें, जो ईशदूतों के माध्यम से प्राप्त हुईं, जिनों एवं मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए अवतीर्ण हुईं । इन पुस्तकों में इहलोक एवं परलोक दोनों में ही सफलता प्राप्त करने का ज्ञान प्रदान किया गया ।

आकाशीय मुस्तकों की शृंखला में कुरआन का अवतरण सबसे अंत में हुआ । यह पुस्तक न केवल अरब प्रायद्वीप बल्कि समस्त संसार के मार्गदर्शन के लिए अवतीर्ण हुई । कुरआन की आयतें जिस रूप में अवतरित हुई थीं, उसी रूप में आज भी मौजूद है । यह एकमात्र ऐसी ईश्वरीय पुस्तक है, जो पूर्णरूपेण सुरक्षित है ।

कुरआन अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतीर्ण हुआ । आपके जीवन-काल में ही इसे लिपिबद्ध कर लिया गया । कुरआन की सुरक्षा का ज़िम्मा स्वयं ईश्वर ने लिया है, क्योंकि कुरआन के पश्चात महाप्रलय तक अब न तो कोई ईशदूत आएगा और न ही कोई आकाशीय पुस्तक मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए अवतीर्ण होगी । कुरआन में है–"यह अनुस्मरण (अर्थात कुरआन) निश्चय ही हमने अवतीर्ण किया है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं ।"

(कुरआन, 15/9)

उपरोक्त आयत में कुरआन को अनुस्मरण कहा गया है । इससे यह ज्ञात होता है कि कुरआन से पूर्व अवतरित आकाशीय पुस्तकों की विषय-वस्तु भी वही रहा है, जो कुरआन की है अर्थात एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व एवं परलोकवाद।

कुरआन वह आकाशीय पुस्तक है, जो किसी से छिपाकर नहीं रखी गयी । कुरआन अरबी भाषा में अवतरित हुई । इसका मूल पाठ आज भी वही है, जो अवतरण के समय था और महाप्रलय तक वही रहेगा ।

कुरआन से पूर्व अवतरित जिन आकाशीय पुस्तकों को हम जानते हैं, वह है तौरेत जो ईशदूत हज़रत मूसा (अलैहि०) पर इबरानी भाषा में अवतीर्ण हुई, ज़बूर जो ईशदूत हज़रत दाऊद (अलैहि०) पर सुरयानी भाषा में अवतरित हुई एवं इंजील जो ईशदूत हज़रत ईसा (अलैहि०) पर सुरयानी भाषा में उतरी । ये तीनों पुस्तकें अब अपने मूल पाठ में शुद्ध शिक्षाओं के साथ मौजूद नहीं हैं । जब तक किसी आकाशीय पुस्तक का मूल पाठ हमारे समक्ष न हो, यह विश्वास करने को कोई आधार नहीं है कि वह वही आकाशीय पुस्तक है, जो ईश्वर द्वारा अवतरित की गयी है ।

बाइबल में अन्य पुस्तकों के अतिरिक्त तथाकथित तौरेत, ज़बूर और इंजील भी सम्मिलित है, परंतु इन पुस्तकों का मूल पाठ मौजूद नहीं है । केवल यही नहीं बल्कि बाइबल में चार विभिन्न इंजीलें सम्मिलित हैं, जिनके पाठ परस्पर भिन्न हैं । बाइबल सभी पवित्र पुस्तकों में इस मामले में बिल्कुल अलग है कि इसका मूल पाठ आज संसार में मौजूद नहीं है । बाइबल के अतिरिक्त संसार की हर उस पुस्तक का मूल पाठ मौजूद है । जिसके आकाशीय होने का दावा किया जाता है । वेदों का मूल पाठ मौजूद है । पारसियों के धर्म ग्रंथ 'जेंद अवेस्ता' का मूल पाठ मौजूद है । ये तीनों बाइबल से बहुत पुराने हैं, लेकिन बाइबल का मूल पाठ मौजूद नहीं है ।

तारिक़ के अनुसार इस्लामी स्कॉलर अब्दुल्लाह कलीसा के शीर्ष नेतृत्व के पास विभिन्न आयतों के छोटे-छोटे हस्तलिखित नुस्ख़ें हैं । ये हस्तलिखित नुस्ख़े यूनानी और इताल़वी भाषाओं में हैं । बाइबल के किसी नबी की भाषा न यूनानी थी न इतालवी । संसार की सभी बाइबलें इन्हीं से अनुवाद होती हैं । क्या आप हिंदी कुरआन, तेलुगू कुरआन,

उर्दू क़ुरआन की कल्पना भी कर सकते हैं । क़ुरआन तो केवल अरबी में है । हिंदी, तेलुगू, उर्दू आदि क़ुरआन के अनुवाद हैं, लेकिन बाइबल वाले संसार की प्रत्येक भाषा में बाइबल की बात करते हैं । वे अनुवाद ही को मूल कहने लगे हैं क्योंकि मूल मौजूद ही नहीं है ।''

इसी क्रम में एस॰ अब्दुल्लाह तारिक़ आगे लिखते हैं–''अच्छा अगर मूल मौजूद नहीं है तो कम से कम यूनानी और इतालवी नुस्ख़ों को ही मूल पाठ का स्थान दे दिया करें ताकि जो ये भाषाएं जानते हैं वे देख सकें कि अनुवाद सही है या नहीं । लेकिन नहीं...जिन नुस्ख़ों से बाइबलों का अनुवाद होता है उसका मूल पाठ जनता से छिपाया गया है । इसे देखने की अनुमति भी नहीं है । जनता ही नहीं हरेक पादरी भी नहीं देख सकता । केवल कुछ पादरी जिन्हें कलीसा का शीर्ष नेतृत्व अनुमति दे, वही इनके अनुवाद करते हैं ।''

(फ़ितरत पर वापसी', वार्षिक पत्रिका 'इस्लामी, गोरखपुर, वर्ष 2002, पृष्ठ 32)

तुर्की सरकार के बैतुलमाल के पास इंजील की हस्तलिखित एक ऐसी पांडुलिपि है, जो बर्नवास की इंजील के नाम से जाना जाता है । यह आरामी भाषा में है । यह दुर्लभ पांडुलिपि 1500 वर्ष पुरानी बतायी जाती है । तुर्की सरकार को बर्नवास की इंजील की यह दुर्लभ पांडुलिपि 14 वर्ष पूर्व प्राप्त हुई थी ।

बर्नवास हज़रत ईसा (अलैहि॰) के 12 हवारियों में से एक थे, परंतु बाइबल में सम्मिलित हज़रत ईसा (अलैहि॰) के 12 हवारियों की सूची में यह नाम सम्मिलित नहीं किया गया है । इस इंजील में एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व एवं परलोकवाद की वही धारणाएं मौजूद हैं, क़ुरआन जिनकी पुष्टि करता है । इस इंजील में हज़रत ईसा (अलैहि॰) के पश्चात हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के ईशदूतत्व की भी शुभ सूचना दी गयी है । इस इंजील में त्रिमूर्ति की वह धारणा ही नहीं है, जो वर्तमान ईसाई मान्यता की जड़ है ।

हिन्दू परंपरा में वेदों को देववाणी कहा जाता है । वेदों में भी एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व एवं परलोकवाद की वही धारणाएं मौजूद हैं, क़ुरआन जिनकी पुष्टि करता है । वेदों में भी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के ईशदूतत्व की शुभ-सूचना दी गयी है । वर्तमान हिन्दू समाज वेदों के धर्म पर नहीं अपितु पुराणों के धर्म पर है । बहुसंख्यक हिन्दू समाज ने तो वेदों को पढ़ना तो दूर उसके दर्शन तक नहीं किये हैं ।

स्वयं आर्य समाज संस्थापक पंडित दयानंद सरस्वती को वेद जर्मनी से मंगवाने पड़े थे । संसारवासियों के समक्ष वेद कितने कठिन परिश्रम के पश्चात प्रकाश में आया इसका वर्णन करते हुए सनातन धर्म के प्रकांड विद्वान श्रीराम शर्मा आचार्य ने लिख है–

''आधुनिक युग में वेदों का सर्वप्रथम अन्वेषण करने वाले मैक्स मूलर साहब के बीस वर्ष तक अथक परिश्रम तथा अपार धनराशि व्यय करने पर भी केवल सायणाचार्य का भाष्य ही सर्वांगपूर्ण स्थिति में प्राप्त हो सका था । उसी के आधार पर उन्होंने सैकड़ों भारतीय पंडितों की सहायता से लुप्तप्राय वेदों को संसार के सम्मुख मुद्रित ग्रंथों के रूप में प्रकट किया था । इसके पश्चात अधिकांश वेद प्रकाशकों ने मैक्स मूलर साहब के संस्करण से ही सहायता लेकर अपना काम चलाया है ।''

(सामवेद भाष्य की भूमिका', पृष्ठ 17,18)

क़ुरआन में है–''यह क़ुरआन कोई गढ़ी हुई (और मानव) वाणी नहीं है, बल्कि (अल्लाह की वाणी है) यह अपने से पूर्व (आसमानी शिक्षाओं) की पुष्टि में है ।''

(12-111)

''और हमने तुम्हारी ओर यह पुस्तक सत्य के साथ उतारी है, जो उस पुस्तक की पुष्टि करती है जो उससे पहले से मौजूद है ।'' (5-48)

ज़माना साक्षी है कि क़ुरआन वह आकाशीय पुस्तक है, जो किसी से छिपाकर नहीं रखी गयी । क़ुरआन का धर्म कोई नवीन धर्म नहीं अपितु पूर्व सच्चाइयों का ही पुनर्स्थापना है ।

लेखकों एवं रचनाकारों से

''कान्ति'' में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा । -संपादक

मानव-जीवन में सत्य का महत्व

❖ मुहम्मद अली शाह शुऐब

मनुष्य के जीवन में सत्य का बड़ा महत्त्व है । सत्य के महत्त्व को दर्शाते हुए क़ुरआन में ईश्वर कहता है, "इस धरती को और आकाशों को हमने सत्य के साथ पैदा किया ।" (क़ुरआन, 39:5)

मनुष्य जब कोई ग़लत काम करता है या झूठ बोलता है तो उसे सत्य के रूप में ही पेश करता है । यदि सत्य न हो तो झूठ चल नहीं सकता । एक पुरानी कहावत भी है कि झूठ के पांव नहीं होते । अर्थात, झूठ निराधार होता है । यदि झूठ को भी सत्य बनाकर प्रस्तुत करने पर ही लोग उसे क्षणिक रूप से स्वीकार कर लेता है । इससे ज्ञात होता है कि सत्य ही जीवन और जगत का आधार है । सत्य ही जीवन की तपस्या है और उसका ध्येय है । कबीर दास जी का कथन है–

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।

परन्तु मनुष्य के जीवन में सत्य का जितना महत्व है मनुष्य उतना ही सत्य से अनभिज्ञ है । मनुष्य को सत्य के जितना निकट होना चाहिए उतना ही वह सत्य से दूर है । झूठ से जितना उसे दूर रहना चाहिए था उतना ही वह झूठ में लिप्त है । क़ुरआन में ईश्वर कहता है कि ये जो लोग उलझन में पड़े हुए हैं इसका कारण ही यह है कि इन्होंने सत्य को झुठला दिया है । मनुष्य सत्य से विमुख इसलिए है कि वह उसको पहचान नहीं पाता है । क्योंकि झूठ सत्य के भेस में आता है और मनुष्य को अपने जाल में फंसा लेता है । इसलिए हमारे लिए आवश्यक हो जाता है कि हम जानें कि सत्य क्या है और उसकी पहचान क्या है ।

आइए जानते हैं कि सत्य की पहचान क्या है ?

सत्य के अन्दर व्यापकता होती है । उसमें किसी प्रकार की तंगी और संकीर्णता नहीं होती । ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि एक चीज़ भारत में तो सत्य है किन्तु अमेरिका में वह सत्य नहीं है । या गोरों के लिए तो सत्य है किन्तु कालों के लिए सत्य नहीं है । या ब्राह्मणों और क्षत्रियों के लिए तो सत्य है किन्तु शुद्रों के लिए सत्य नहीं है । यदि कोई बात सत्य है तो वह सबके लिए समान रूप से सत्य है और यत्र, तत्र, सर्वत्र सत्य है ।

सत्य की एक पहचान यह है कि वह प्रत्येक की आवश्यकता है । सत्य से विमुख नहीं हुआ जा सकता । सत्य का इन्कार अहंकार और पक्षपात के आधार पर तो किया जा सकता है किन्तु उसके खंडन का किसी के पास उचित कारण नहीं हो सकता । जब ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने लोगों तक सत्य का सन्देश पहुंचाया तो लोगों ने उसको झुठलाने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा लिया । क़ुरआन में ईश्वर कहता है कि हमारे दूत सत्य लेकर तुम्हारे पास आये परन्तु तुम में से अधिकतर लोगों को सत्य अप्रिय है । (43:78)

जो चीज़ सत्य होती है वह पूर्ण भी होती है और अपने-आप में सुरक्षित भी । वह अटल होती है । देश-काल का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता । ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि एक बात सदियों पूर्व तो सत्य थी, परन्तु आज वह सत्य नहीं रही । इसलिए उसे काट-छांटकर आज के हिसाब से बना लिया जाए ताकि वह सत्य बनी रहे । हिन्दूइज़्म में सत्य को अपरिवर्तनीय की संज्ञा दी गयी है । अर्थात सत्य वह है जिसमें काट-छांट की आवश्यकता न हो, उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न किया जा सकता हो । कृष्ण बिहारी 'नूर' ने कहा था–

सच घटे या बढ़े तो सच न रहे, झूठ की कोई इन्तिहा ही नहीं ।

सत्य सबके लिए होता है और सदैव के लिए होता है । किसी को उस पर एकाधिकार नहीं होता, क्योंकि सत्य ईश्वर की ओर से प्रमाणित होता है । ईश्वर के द्वार अवतरित दीन (धर्म) को भी क़ुरआन में 'सत्य' अथवा 'हक़' की संज्ञा दी गयी है । क़ुरआन में ईश्वर का एक नाम 'हक़' या 'सत्य' भी बताया गया है । अर्थात सत्य जितना भी है उसका स्रोत और उद्गम एक ईश्वर की सत्ता ही है । और ईश्वर की सत्ता सदैव से है और सदा-सर्वदा के लिए है ।

इन सब बातों की पुष्टि के लिए हम एक उदाहरण देना

चाहेंगे । हिन्दू धर्म में कहा गया है कि मनुष्य का शरीर मिथ्या है और आत्मापरम सत्य, क्योंकि शरीर के संबंध में उपर्युक्त किसी एक बात की भी पुष्टि नहीं होती । शरीर नश्वर है, परिवर्तनीय है । अर्थात शरीर में समय-समय पर बदलाव आते रहते हैं । शरीर सबके सब एक जैसे नहीं हैं । शरीर में काट-छांट संभव है । परन्तु आत्मा या रूह में किसी प्रकार का परिवर्तन संभव नहीं इसलिए वह सत्य है ।

आइए अब धर्म को जानने का प्रयास करते हैं । धर्म को जानने के लिए भी कुछ बातें मौलिक रूप से ध्यान में रहनी चाहिए ।

1. धम को जानने के लिए मूल ग्रंथों को ही पढ़ना चाहिए, उस धर्म के अनुयायियों को नहीं देखा जाना चाहिए। उदाहरण के रूप में यदि आप ईसाई धर्म को जानना चाहते हैं तो आपको ईसाई धर्म की मूल पुस्तक को पढ़ना चाहिए । ईसाइयों को देखकर आप ईसाई धर्म के वास्तविक स्वरूप को नहीं जान सकते । हिन्दू धर्म को जानने के लिए आपको हिन्दू धर्म की प्रमाणिक पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए । हिन्दुओं को देखकर हिन्दू धर्म के वास्तविक स्वरूप को नहीं जान सकते । इसी प्रकार इस्लाम धर्म को समझने के लिए आपको कुरआन और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी का अध्ययन करना चाहिए । मुसलमानों को देखकर या मुसलमानों के इतिहास को पढ़कर आप इस्लाम धर्म के मूल स्वरूप को नहीं जान सकते ।

2. किसी भी धर्म को बुरा नहीं कहना चाहिए, क्योंकि सभी धर्मों में कुछ न कुछ अच्छी बातें अवश्य होती हैं । धर्म ने समाज को बनाने के काम में सदैव योगदान किया है । स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि समाज में शान्ति और भलाई के लिए धर्म से अधिक योगदान किसी ने नहीं किया । डॉ० इक़बाल ने भी कहा था कि 'मज़हब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना'। इसलिए वह व्यक्ति वास्तव में धार्मिक नहीं हो सकता जो मात्र अपने स्वार्थ की सिद्धी के लिए इंसानों से वैर रखता हो ।

3. सत्य धर्म को जानने का प्रयास करना हर व्यक्ति का परम कर्तव्य है । सत्य दो या अनेक नहीं हो सकते । नासमझी, नादानी अथवा उदारता में लोग इतना बड़ा झूठ बोलते हैं कि जिसकी कोई सीमा और आधार नहीं । वास्तव में सत्य यह है कि सत्य धर्म कोई एक ही हो सकता है ।

तनिक विचार कीजिए कि एक धर्म की मान्यता तो यह है कि ईश्वर है और दूसरा कहता है कि ईश्वर है ही नहीं । एक धर्म कहता है कि ईश्वर एक है, दूसरा कहता है कि ईश्वर अनेक हैं । फिर भी हम यह कहें कि सब धर्म सत्य हैं तो इससे बड़ी मूर्खता और क्या होगी । इनमें से कोई एक ही बात सत्य हो सकती है कि या तो ईश्वर है या नहीं है, या तो ईश्वर एक है या ईश्वर अनेक हैं । इनमें एक ही समय में सारी बातें सत्य कैसे हो सकती हैं ? अत: सत्य कोई एक ही हो सकता है, अनेक नहीं ।

4. धर्म के संबंध में एक बात यह भी है जान और समझ लेनी चाहिए कि धर्म मात्र अंधविश्वास का नाम नहीं हो सकता, बल्कि उसको वैज्ञानिक, बौद्धिक और तार्किक स्तर पर परखा जा सकता है । धर्म का विज्ञान से टकराव नहीं हो सकतां । आइंसटाइन ने कहा था कि –

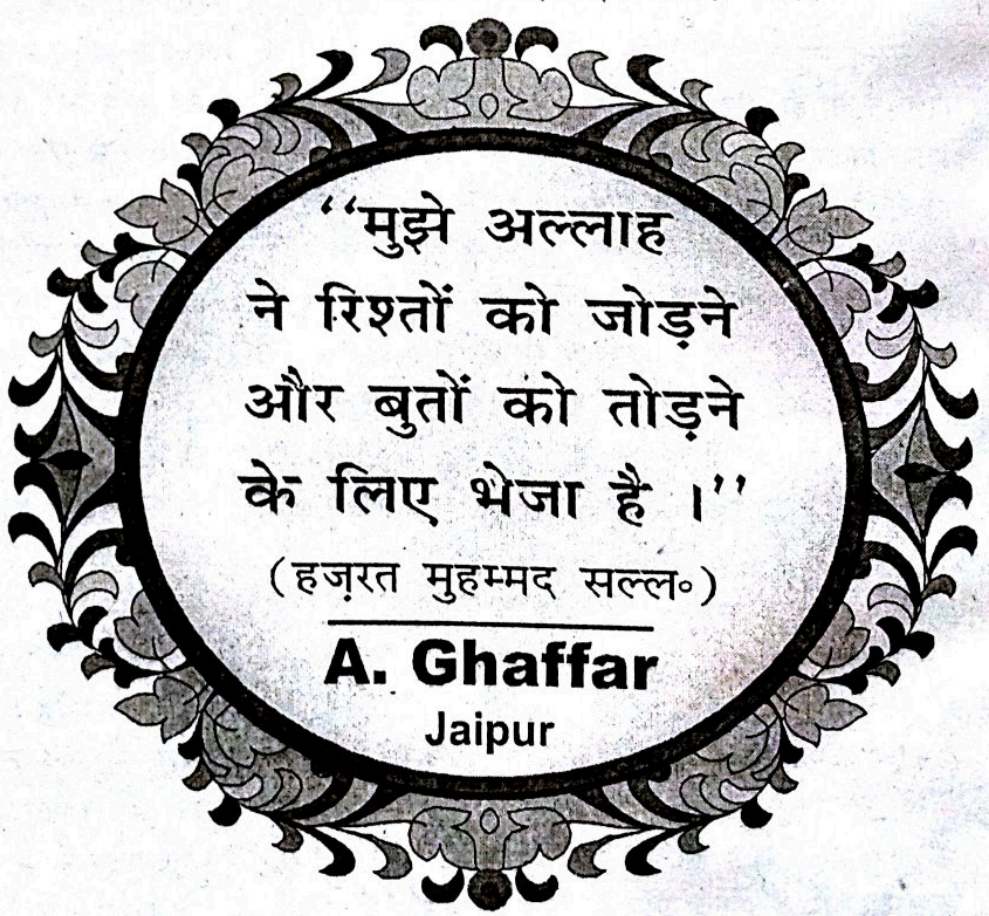

'बिना धर्म के विज्ञान लंगड़ा है और बिना विज्ञान के धर्म अंधा है ।'

धर्म वास्तव में वह है जो एक ओर तो ईश-उपासना और ईश-परायणता की बात करता हो और दूसरी ओर मानव-प्रेम, सौहार्द्र, सद्भावना, करुणा, कृपाशीलता और दानशीलता की ओर मनुष्य को प्रेरित करता हो तथा मनुष्य को यह भी बताता हो कि मनुष्य को जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिए । अर्थात उसकी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था कैसी हो । किसी ने कहा था कि 'धर्म को जीवन का सिद्धान्त और नियम होना चाहिए न कि कोई सांयौगिक घटना ।'

आज हमारी व्यवस्था जो चौपट हो गयी है, चारों ओर अराजकता है, बेईमानी और भ्रष्टाचार है उसका कारण केवल यह है कि इस व्यवस्था से धर्म को और ईश्वर को निकाल कर इसे मनुष्य का प्राइवेट मामला बना दिया है । यह हमारे साथ कितना बड़ा धोखा है कि इस धर्म प्रधान देश भारत की व्यवस्था से धर्म को ही निकाल कर फेंक दिया गया है । यदि हम धर्म के संबंध में यह विश्वास रखते हैं कि वह मनुष्य को मनुष्य बनाता है, उसे सज्जनता सिखाता है, उसे सत्कर्मी और न्यायशील बनाता है तो क्या वही धर्म हमारी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था को स्वच्छ, अत्याचारमुक्त और भ्रष्टाचारमुक्त नहीं बना सकता ? तो आख़िर हमारी व्यवस्था को धर्म पर आधारित क्यों नहीं किया जा सकता ।

इस समय इन बातों पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है कि सत्य वास्तव में है क्या ? उसकी पहचान क्या है ? सत्य पर चलकर हमें क्या मिलने वाला है ? सत्य पर यदि नहीं चलेंगे तो कितनी बड़ी हानि होने वाली है ? फिर यह कि धर्म क्या है ? सत्य धर्म क्या है ? उसकी पहचान क्या है? इत्यादि । इस लेख में इन्हीं बातों पर आपका ध्यानाकर्षित कराने का प्रयास किया गया है । आशा है कि हम सत्य की खोज के लिए पहला क़दम अवश्य उठाने का प्रयास करेंगे और यह जानने की कोशिश करेंगे कि सत्य धर्म क्या है । ईश्वर ने तो सत्य धर्म को भेजकर अपना दायित्व पूरा कर दिया है अब हमारा दायित्व है कि उस सत्य धर्म की खोज में हम कितने क़दम बढ़ते हैं । इस संबंध में कुरआन में ईश्वर कहता है कि जो लोग सत्य की खोज में प्रयासरत रहते हैं और जिद्दोजहद करते हैं उनके लिए हम सत्य का मार्ग प्रशस्त कर देते हैं । अर्थात उनके लिए सत्य की खोज में आसानियां उत्पन्न कर देते हैं ।

कुरआन यह भी कहता है कि ईश्वर ने मनुष्य के मार्गदर्शन हेतु दुनिया के हर क्षेत्र और काल में दूत भेजे, जिन्होंने उन्हीं की भाषा में उस सन्देश को न केवल पहुंचाया बल्कि उस पर अमल करके भी दिखाया, इसलिए वे अपने बाद आने वाले लोगों के लिए आदर्श कहलाए । किन्तु बाद में आने वाले लोगों ने उन्हीं को ईश्वर का दर्जा दे दिया और उनके लाए हुए ईश्वरीय सन्देश में काट-छांट कर दी । इस प्रकार सत्य धर्म दूषित होकर रह गया । जब यह सिलसिला लम्बे समय तक चलता रहा तो सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अन्तिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अन्तिम सन्देश लेकर भेजा और उस सन्देश को सदा-सर्वदा के लिए सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी स्वयं ली ।

अब पूरी मानवजाति के लिए पूर्ण सत्य पर आधारित यदि कोई पुस्तक है, तो केवल कुरआन है । इस आधार पर कहा जा सकता है कि इस्लाम ही वह धर्म है जो पूर्ण रूप से सत्य पर आधारित है । अब पूरी मानवजाति का दायित्व है कि बिना किसी पक्षपात के इसका अध्ययन करे, इसे स्वीकार करे और पूरी धरती को शान्तिमय बना दें ।

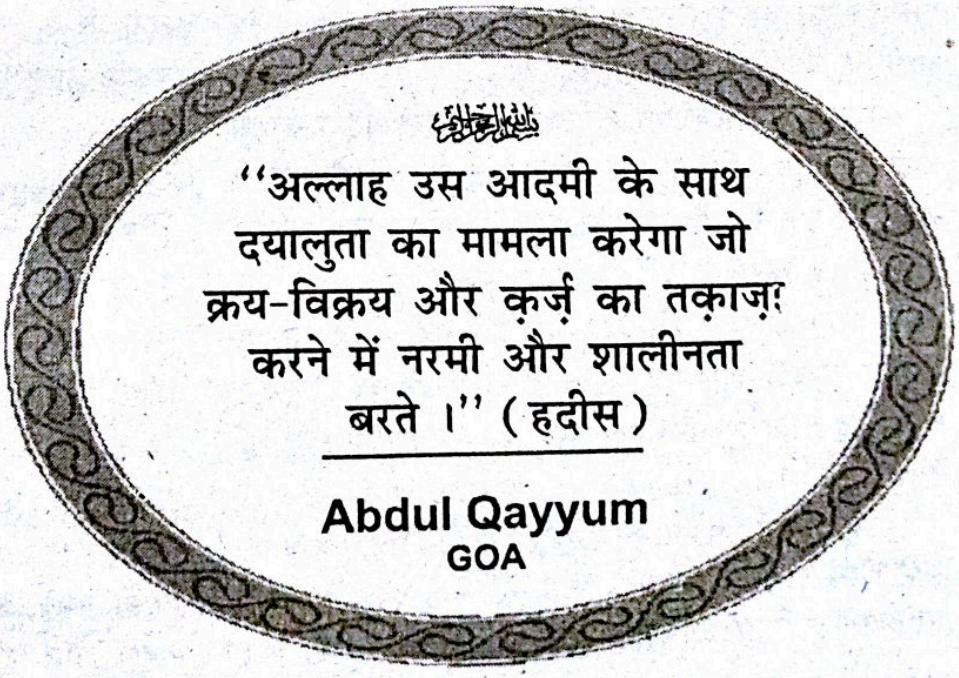

क़ुरआन और रमज़ान

■ अब्दुल अज़ीज़

क़ुरआन के अवतरण के समय अरबवासी अशिक्षित थे, मगर इसके बावजूद उन्होंने क़ुरआन मजीद का अनुकरण दिल लगाकर किया । क़ुरआन को कंठस्थ करने से पहले हरेक ने उसे अपने जीवन के सांचे में ढालने की भरपूर कोशिश की । कहा जाता है कि उस वक़्त मक्का शहर में केवल 17 लोग ऐसे थे, जिनको पढ़ना-लिखना आता था । क़ुरआन की पहली आयत में ही अल्लाह तआला ने अरबों को पढ़ने-लिखने का आदेश दिया गया । इन्सान की पैदाइश की हक़ीक़त बताते हुए 'क़लम' की बात कही गयी अर्थात लिखने की बात कही गयी ।

इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि जो काम करना है, उसमें पढ़ाई-लिखाई का अत्यधिक महत्व है । क़ुरआन की उपयोगिता व महत्व को जो अरब के लोग समझते थे, इतिहास के अध्ययन से अन्दाज़ा होता है कि यह सिलसिला सही तरीक़े से ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन (प्राथमिक चार ख़लीफ़ा) के काल तक ही जारी रहा । ख़िलाफ़त जब बादशाही में परिवर्तित हो गयी, तो धीरे-धीरे मुसलमानों का कर्म-ज्ञान प्रभावित होने लगा । फिर मुसलमानों के मध्य पवित्र क़ुरआन की वह विशिष्टता शेष नहीं रही, जो इस्लाम के आरंभिक काल में थी ।

आमतौर पर तिलावत का मतलब केवल पढ़ना समझा जाता है, लेकिन जो लोग अरबी जानते हैं, वे ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं कि तिलावत का अर्थ समझ-बूझकर पढ़ना है । पवित्र क़ुरआन का अवतरण रमज़ान के महीने में हुआ । यही कारण है कि मुसलमान इस महीने रोज़े रखकर हर वर्ष इसकी सालगिरह मनाते हैं । रमज़ान के रोज़े का महत्व बताते हुए अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है-

"रमज़ान वह महीना है, जिसमें क़ुरआन उतारा गया जो इन्सानों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है, जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य और

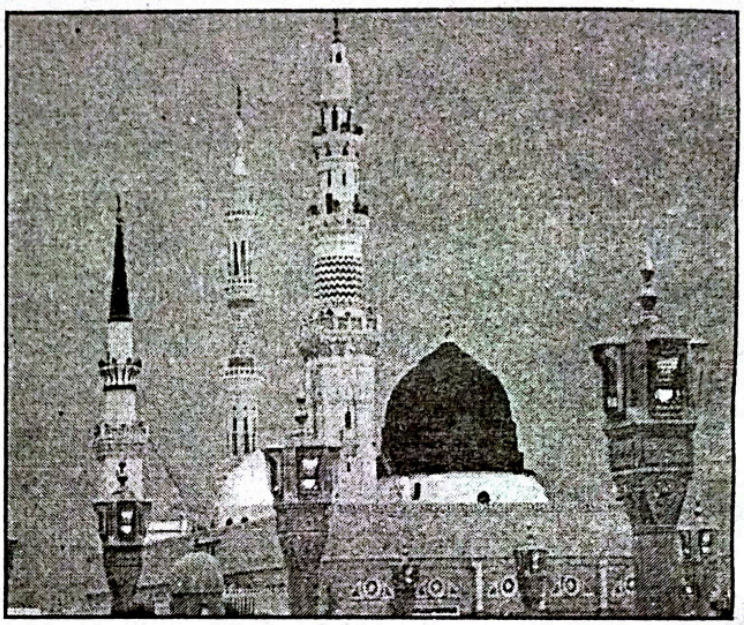

असत्य का अन्तर खोलकर रख देने वाली है । अत: अब से जो व्यक्ति इस महीने को पाए, उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे । और जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो, तो वह दूसरे दिनों में रोज़ों की गिनती पूरी करे । अल्लाह तुम्हारे साथ नरमी करना चाहता है, सख़्ती करना नहीं चाहता । इसलिए यह तरीक़ा तुम्हें बताया जा रहा है ताकि तुम रोज़ों की गिनती पूरी कर सको और जिस सीधे मार्ग पर अल्लाह ने तुम्हें लगाया है, उस पर अल्लाह की बड़ाई का इज़हार करो और मानो और शुक्रगुज़ार बनो ।"

(क़ुरआन, 2:185)

'तफ़हीमुल क़ुरआन' में मौलाना मौदूदी (रह०) ने इस आयत की व्याख्या इस तरह की है कि 'यहां यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि रमज़ान के रोज़ों को केवल इबादत व ईशपरायणता की शिक्षा-दीक्षा ही नहीं बताया गया है, बल्कि इन्हें इससे आगे बढ़कर मार्गदर्शन की उस महान नेमत पर अल्लाह के प्रति कृतज्ञता दर्शाना भी ठहराया गया है, जो क़ुरआन की शक्ल में उसने हमें प्रदान की है ।

सच तो यह है कि एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए किसी नेमत के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन की सबसे अच्छी शक्ल अगर कोई हो सकती है, तो केवल यही है कि वह

रहमतों का महीना

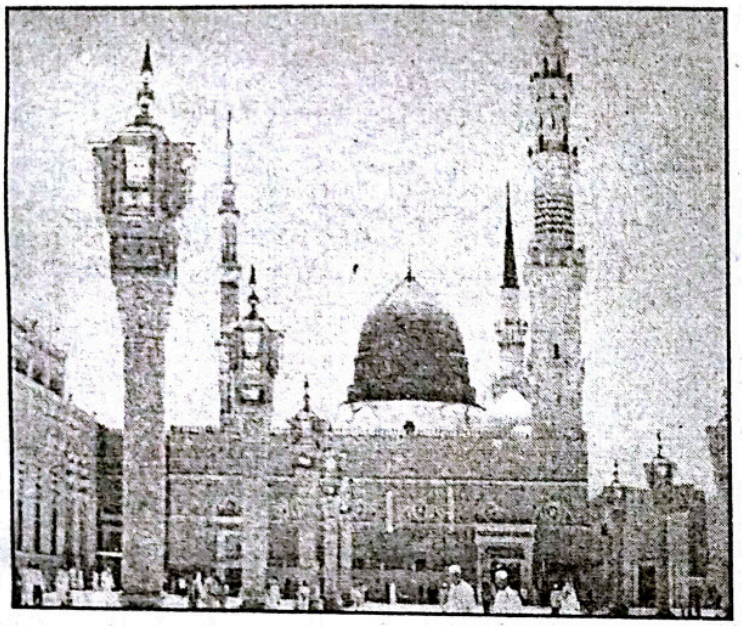

अपने आपको इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ज़्यादा से ज़्यादा तैयार करे, जिसके लिए देने वाले ने वह नेमत प्रदान की हो । क़ुरआन हमको इसलिए प्रदान किया गया है कि हम अल्लाह की प्रसन्नता का रास्ता जानकर स्वयं उस पर चलें और दुनिया को उस पर चलने के लिए प्रेरित करें । इस उद्देश्य के लिए हमको तैयार करने का बेहतरीन तरीक़ा रोज़ा है, इसलिए क़ुरआन के उतरने के महीने में हमारी रोज़ेदारी केवल इबादत ही नहीं है और केवल नैतिक प्रशिक्षण भी नहीं है, बल्कि उसके साथ स्वयं क़ुरआन की इस नेमत की भी सही और उचित कृतज्ञता प्रकट करनी है ।

मौलाना अमीनुल हसन इस्लाही (रह०) ने 'तदब्बुरे क़ुरआन' में क़ुरआन की आयत की व्याख्या में लिखा है कि इस महान नेमत पर अल्लाह की कृतज्ञता यह है कि अल्लाह तआला ने इसी महीने को रोज़े के लिए ख़ास बनाया, ताकि बन्दे इसमें अपनी मनोइच्छाओं और शैतान के प्रलोभनों से आज़ाद होकर अपने रब से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो सकें और अपनी कथनी व करनी, अपने खुले-छिपे, दिन-रात अर्थात हर चीज़ से इस हक़ीक़त का इज़हार व एलान करें कि अल्लाह और उसके आदेश से बड़ा उनके निकट इस संसार की कोई चीज़ भी नहीं है ।

सोच-विचार करने वालों को इस सच्चाई को समझने में कोई परेशानी नहीं हो सकती कि अल्लाह की सारी नेमतों में सबसे बड़ी नेमत बुद्धि है और बुद्धि से बड़ी नेमत क़ुरआन है, इसलिए कि बुद्धि को भी वास्तविक मार्गदर्शन क़ुरआन ही से प्राप्त होता है । यह न हो तो बुद्धि, विज्ञान की सारी दूरबीनें व ख़ुर्दबीनें अंधेरे में ही भटकती रहती है । इस वजह से जिस महीने में दुनिया को यह नेमत मिली वह इसके योग्य थी कि वह अल्लाह की महानता और उसकी कृतज्ञता का ख़ास महीना ठहरा दिया जाए, ताकि इस महान नेमत का महत्व सदैव बाक़ी रहे । इस कृतज्ञता के लिए अल्लाह तआला ने रोज़े व इबादत मुक़र्रर किये, जो इस ईशभय और संयम के प्रशिक्षण की ख़ास इबादत है, जिस पर तमाम दीन व शरीअत की स्थापना का दारोमदार है, जिसके प्रशंसकों ही के लिए वास्तव में क़ुरआन मजीद मार्गदर्शन बनकर अवतरित हुआ । क़ुरआन में है–

"यह अल्लाह की किताब है, इसमें कोई संदेह नहीं । हिदायत है उन परहेज़गार लोगों के लिए जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, जो रोज़ी हमने उनको दी, उनमें से ख़र्च करते हैं ।" (क़ुरआन, 2:2,3)

मानो इस हिक्मते क़ुरआनी की तरतीब यूं हुई कि पवित्र क़ुरआन का वास्तविक उपकार क़ेवल उन लोगों के लिए ख़ास है, जिनके अन्दर तक़वा व ईशपरायणता हो और ईशभय और संयम के प्रशिक्षण का ख़ास ज़रिया रोज़ों की इबादत है । इस वजह से अल्लाह तआला ने उस महीने को रोज़ों के लिए विशिष्ट बना दिया, जिसमें पवित्र क़ुरआन का अवतरण हुआ । दूसरे शब्दों में इस बात को इस तरह कह सकते हैं कि क़ुरआन इस संसार के लिए बहार है और रमज़ान का महीना मौसम बहार है और यह मौसमे बहार जिस फ़सल को विकसित करता है, वह तक़वा (ईशपरायणता) की फ़सल है ।

क़ुरआन की सूरह क़द्र में क़ुरआन की विशेषताएं इस प्रकार बतायी गयी हैं–"हमने इस (क़ुरआन) को क़द्र की

रात में अवतरित किया है और तुम क्या जानो कि क़द्र की रात क्या है ? क़द्र की रात हज़ार महीनों से ज़्यादा उत्तम है । फ़रिश्ते और रूह उसमें अपने रब की अनुज्ञा से हर आदेश लेकर उतरते हैं । वह रात पूरी की पूरी सलामती है उषाकाल के उदय होने तक ।'' (कुरआन, 97:1-5)

सच्चाई यह है कि कुरआन मजीद का अवतरण मानवता के लिए भलाई व कल्याण की हैसियत रखता है और इन्सान के लिए इससे बड़ी कोई भलाई नहीं हो सकती । इसलिए पवित्र कुरआन मजीद में फ़रमाया गया कि वह रात जिसमें यह कुरआन अवतरित हुआ है, हज़ार महीनों से ज़्यादा बेहतर है । दूसरे शब्दों में पूरे मानव-इतिहास में कभी हज़ार महीनों में भी मानवता के उपकार व भलाई के लिए वह काम नहीं हुआ है, जो इस एक रात में हुआ है । हज़ार महीनों के शब्द को गिने हुए हज़ार न समझना चाहिए, बल्कि इससे अभिप्राय बहुत बड़ी संख्या है ।

अत: इस रात में जो अपनी भलाई के लिहाज़ से हज़ार महीनों से भी श्रेष्ठ है, जिस इन्सान ने अल्लाह तआला की इबादत की और उससे लौ लगायी, उसने बहुत बड़ी भलाई प्राप्त कर ली, क्योंकि इस रात में बन्दे का अल्लाह की ओर रुजू करना ही, यही अर्थ तो रखता है कि उसे इस रात का पूरा-पूरा एहसास है और वह यह जानता है कि इसमें अल्लाह तआला ने मानवजाति पर यह कितना बड़ा एहसान किया है कि अपना कलाम (कुरआन) अवतरित किया । इसलिए जिस आदमी ने इस रात में इबादत का एहतिमाम किया, मानो उसने अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा किया और अपने कर्म से यह साबित किया कि उसके दिल में कुरआन मजीद की सही क़द्रो-क़ीमत का एहसास मौजूद है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, ''जो इस रात की भलाई से महरूम (वंचित) रहा, वह महरूम ही रह गया ।'' (अहमद, नसई) इस हदीस से अभिप्राय यह है कि अगर एक व्यक्ति इस रात में अल्लाह तआला की इबादत के लिए खड़ा नहीं होता तो, मानो उसे कुरआन मजीद की उस महान नेमत का एहसास नहीं है, जो उस रात में अल्लाह तआला ने उतारी थी । अगर उसे इस बात का एहसास होता, तो वह ज़रूर रात के समय इबादत के लिए खड़ा होता और शुक्र अदा करता कि ऐ अल्लाह ! यह तेरी महान अनुकंपा है कि तूने मुझे कुरआन जैसी महान नेमत प्रदान की है, लेकिन तेरी महानतम कृपा तो मुझ पर यह है कि तूने मुझे हिदायत दी और सत्य धर्म का मार्ग दिखाया । मुझे अंधेरों में भटकने से बचाया और सच्चा ज्ञान प्रदान किया, जिसकी वजह से मैं दुनिया से सीधे मार्ग पर चलकर इस योग्य हुआ कि तेरी प्रसन्नता प्राप्त कर सकूं ।

अत: जिस व्यक्ति को इस नेमत की क़द्रो-क़ीमत का एहसास होगा, वह इस रात में अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के लिए खड़ा होगा और उसकी भलाई से मालामाल होगा, लेकिन जो व्यक्ति इस रात में अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए खड़ा न होगा, वह उसकी भलाई से वंचित रह गया और वास्तव में एक बहुत बड़ी भलाई से वंचित रह गया ।

रमज़ान मुबारक की जो बरकतें और विशेषताएं इसकी पहली रात को ज़हूर में आती हैं, उन सबका ज़हूर रमज़ान की हर रात में यथावत जारी रहता है । सामूहिक रोज़ों का महीना निर्धारित करके रमज़ान से आप (सल्ल०) ने यही काम लिया है । जिस तरह आप देखते हैं कि हर फ़सल अपना मौसम आने पर ख़ूब फलती-फूलती है और हर तरफ़ खेतों में हरियाली ही हरियाली नज़र आती है उसी तरह रमज़ान का महीना मानो ख़ैर, भलाई, उपकार और ईशपरायणता का मौसम है, जिसमें बुराइयां ख़त्म होती हैं और भलाइयां फैलती हैं । पूरी-पूरी आबादियों पर ईशभय, नेकी, भलाई और परहेज़गारी का वातावरण छा जाता है ।

इस पवित्र वातावरण में गुनाह करते हुए आदमी को लज्जा आती है । हर व्यक्ति स्वयं गुनाहों से बचने की कोशिश करता है और अपने किसी दूसरे भाई को गुनाह करते हुए देखकर उसे शर्म दिलाता है । हरेक के दिल में यह इच्छा प्रबल होती है कि कुछ भलाई का काम करें किसी ग़रीब को खाना खिलाए, किसी नंगे को कपड़ा पहनाए, किसी मुसीबतज़दा की सहायता करे, कहीं कोई नेक काम हो रहा हो, तो उसमें हिस्सा लें । उस वक़्त लोगों के दिल नरम हो जाते हैं, ज़ुल्म व अत्याचार से हाथ रुक जाते हैं, बुराई से नफ़रत और भलाई से भलाई की अभिलाषा पैदा होती है और रमज़ान के मुबारक महीने में हर तरफ़ शांन्ति व अमन का वातावरण छा जाता है ।

रोज़ा, ईशपरायणता और क़ुरआन

❖ ज़ुबैर आलम इस्लाही

इस्लाम के मूल स्तम्भों में से एक मुख्य स्तम्भ पवित्र रमज़ान महीने का रोज़ा है । क़ुरआन मजीद के अध्ययन से स्पष्ट है कि रोज़ा न केवल मुस्लिम समुदाय पर अनिवार्य किया गया, बल्कि पिछले समुदायों पर भी किसी न किसी रूप में अनिवार्य रहा है । अल्लाह तआला फ़रमाता है–

"ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस तरह तुम से पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे उम्मीद है कि तुममें परहेज़गारी का गुण पैदा होगा ।" (क़ुरआन, 2:183)

उपर्युक्त क़ुरआन की आयत से बुनियादी तौर पर दो बातें मालूम होती हैं । पहली बात तो यह कि रोज़ा केवल मुस्लिम समुदाय पर अनिवार्य नहीं किया गया, बल्कि अन्य पिछली क़ौमों पर भी यह किसी न किसी रूप में अनिवार्य रहा है । इसी के साथ रोज़े का उद्देश्य और प्रयोजन भी स्पष्ट शब्दों में बयान कर दिया गया है कि अल्लाह तआला इसके द्वारा ईमान वालों के अन्दर तक़्वा और ईशभय का गुण पैदा करना चाहता है । यूं तो बुनियादी तौर पर सारी इबादतें और नेक कर्मों का मूल उद्देश्य मोमिन बन्दे के अन्दर 'तक़्वा' पैदा करना है, लेकिन उपर्युक्त क़ुरआन की आयत में विशेष रूप से रोज़े से 'तक़्वा' प्राप्त करने का वर्णन किया गया है । 'तक़्वा' नाम है दीनदारी, अल्लाह का आज्ञापालन, अल्लाह की इबादत, ईश-भय और अल्लाह पर भरोसे का ।

प्रसिद्ध विद्वान ख़ुर्रम मुराद के अनुसार, "तक़्वा' दिल व रूह, सोच-समझ, विवेक, दृढ़-संकल्प, नियम-व्यवस्था और कर्म व सदाचरण की इस शक्ति का नाम है, जिसके बल पर हम उस चीज़ से रुक जाएं, जिसको हम ग़लत जानते हों और अपने लिए हानिकारक समझते हों और उस चीज़ पर जम जाएं, जिसको सही जानते और मानते हों" ।

सैयद क़ुत्ब के अनुसार, 'तक़्वा' वह मज़बूत रस्सी है, जो इन्सानी नफ़्सों (इन्द्रियों) को रोके रखती है । दिलों के एहसासे ज़िम्मेदारी, ईशभय, अल्लाह के प्रकोप से बचने की चिन्ता और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने का नाम तक़्वा है । तक़्वा के बिना कोई शरीअत क़ायम नहीं रह सकती और न कोई क़ानून सफल हो सकता है' ।

यक एक सर्वमान्य सच्चाई है कि रोज़ों के प्रभाव सीधे तौर पर इन्सान के नफ़्स (इन्द्रियों) पर पड़ते हैं । रोज़ा नफ़्स को पाक-साफ़ करने में बहुत बड़ा सहायक है और उसको अमल में लाने से उसका नफ़्स उसके क़ब्ज़े में रहता है । उसके अन्दर संयम, संतोष और अल्लाह तआला पर भरोसा करने का गुण पैदा होता है । दूसरे शब्दों में रोज़ेदार को अपने नफ़्स पर पूरा नियंत्रण हासिल होता है । रमज़ान में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और नरक के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं । फिर शैतानों को बेड़ियों में जकड़ दिया जाता है, ताकि शैतान मोमिन बन्दे को बहका न सके और मोमिन बन्दे को इस महीने से भरपूर लाभ उठाने, रोज़े के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने और अपने अन्दर तक़्वा का गुण पैदा करनें में आसानी हो ।

दूसरी इबादतों की तुलना में रोज़े की एक विशेषता यह है कि दूसरी इबादतों का इल्म व ज्ञान किसी न किसी तरह दूसरे लोगों को भी हो सकता है, लेकिन रोज़ा एक ऐसी इबादत है कि जब तक स्वयं रोज़ेदार अपनी ज़ुबान से उसका इज़हार न कर दे, किसी को कानो-कान ख़बर नहीं हो सकती । इसी कारण अल्लाह तआला ने सारे सद्कर्मों का सवाब (पुण्य) दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक निर्धारित किया है, लेकिन रोज़े के संबंध में फ़रमाया, यह मेरे लिए है और इसका बदला मैं ख़ुद जितना चाहूंगा दूंगा । हज़रत हुरैरा (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

"तमाम सद्कर्मों का पुण्य दस गुना से सात सौ गुना बताया गया है । अल्लाह तआला ने फ़रमाया सिवाय रोज़े के, रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही इसका बदला दूंगा ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

एक दूसरी जगह आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "(अल्लाह तआला ने फ़रमाया) आदम की संतान (मनुष्य) का हर अमल उसके लिए है, सिवाय रोज़े के, रोज़ा सिर्फ़ मेरे लिए

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

है और मैं ही इसका अजर दूंगा ।'' (बुख़ारी, मुस्लिम)

एक अन्य अवसर पर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया कि, ''रोज़ा ढाल है । अगर तुम में से कोई रोज़ेदार हो, तो उसको चाहिए कि न अश्लील बात करे और न शोर-शराबा, अगर कोई उसे गाली दे या किसी से लड़े, तो कह दो कि मैं रोज़े से हूं । उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, रोज़ेदार के मुंह की गंध अल्लाह के नज़दीक मुश्क (कस्तूरी) से भी ज़्यादा उम्दा है और रोज़ेदार के लिए दो ख़ूशियां हैं । एक ख़ुशी उस वक़्त प्राप्त होती है जब वह इफ़्तार करता है और दूसरी ख़ुशी उस वक़्त हासिल होगी, जब वह अपने रब से मिलेगा ।''

(बुख़ारी, मुस्लिम)

इस विस्तृत हदीस से निम्नलिखित बातें स्पष्ट रूप से मालूम होती हैं–

1. रोज़े का संबंध सीधे तौर पर अल्लाह तआला की ज़ात से है । उसका बदला वह जितना चाहेगा देगा । अन्य सद्कर्मों के फल की सीमा निश्चित है, लेकिन रोज़ा ही एक ऐसी इबादत है, जिसके सवाब की कोई सीमा नहीं ।

2. इसमें रोज़े की उपमा एक ऐसे ढाल से दी गयी है, जिससे इन्सान दुनिया में बुराइयों और गुनाहों से बच सकता है और स्वयं को नरक की आग से सुरिक्षत रख सकता है । इसका स्पष्टीकरण एक दूसरी हदीस में इस तरह है । हज़रत अबू उबैदा (रज़ि॰) से रिवायत है कि आप (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया, 'रोज़ा ढाल का काम देता है बशर्ते कि रोज़ेदार उसे फाड़ न डाले, लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ढाल कैसे फटती है, आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया झूठ और ग़ीबत से ।''

3. रोज़ेदार के लिए ज़रूरी है कि वह अश्लील बातें और गाली-गलौज, लड़ाई-झगड़े और बदकलामी से पूरी तरह बचा रहे, यहां तक कि अगर कोई उससे मार-पीट, लड़ाई-झगड़े पर उतर आये, तो वह अपनी इस महान इबादत का हवाला देकर कह दे कि मैं रोज़े से हूं । मैं झगड़ा नहीं करना चाहता । रोज़ा तो इसीलिए आता है कि नफ़रत, द्वेष, जलन, गीबत, झूठ-फ़रेब, ईर्ष्या, शोषण, व्यभिचार, लड़ाई-झगड़े, मारपीट, मिथ्याभाषण, तात्पर्य वे सारी बुराइयां जो मानव समजा के लिए घातक हैं, रोज़ा उन्हें ख़त्म करने के लिए आता है ।

दूसरे शब्दों में रोज़ा हमारी आध्यात्मिक व चारित्रिक बीमारियों तथा ख़राबियों का प्रभावशाली उपचार है । अत: आप (सल्ल॰) ने स्पष्ट रूप से फ़रमाया कि रोज़े का मतलब केवल खाने-पीने से परहेज़ नहीं, बल्कि उसका मतलब यह है कि लड़ाई, झगड़े और बेहयाई के कामों से परहेज़ किया जाए । अत: अगर कोई गाली-गलौज करने या तुम्हारे साथ अशिष्टता से पेश आये तो कह देना चाहिए कि मैं रोज़े से हूं ।

4. इस हदीस में आप (सल्ल॰) ने रोज़ेदार को प्राप्त होने वाली ख़ुशियों का वर्णन किया है । एक ख़ुशी उस समय प्राप्त होती है, जब वह इफ़्तार करता है, इफ़्तार करते वक़्त उसकी ज़ुबान से ये शब्द निकलते हैं, 'ऐ अल्लाह ! आप ही के लिए मैं रोज़ा रखा और आप ही के रिज़्क़ (रोज़ी) से मैंने इफ़्तार किया ।' और इफ़्तार करने के बाद उसकी ज़ुबान पर आभार के ये शब्द होते हैं, 'प्यास बुझ गयी, रगें तर हो गयीं, और रोज़े का अज्र व सवाब साबित हो गया इंशाअल्लाह।' (अबू दाउद)

दूसरी ख़ुशी उस वक़्त प्राप्त होती है, जब वह अपने रब से मिलेगा और वादे के अनुसार उसका रब उसे रोज़े का पूरा-पूरा बदला प्रदान करेगा । रोज़ेदार के मान-सम्मान में अल्लाह तआला क़यामत के दिन रोज़ेदारों के लिए जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा जिसका नाम 'रैयान' होगा खोल देगा, उस दरवाज़े से केवल रोज़ेदार ही दाख़िल होंगे ।

माहे सियाम (रोज़ों के महीने) की विशेषताओं के कारणों पर सोच-विचार करने और उसके संबंध से क़ुरआन मजीद का अध्ययन करने से यह स्पष्ट है कि यही वह पवित्र महीना है, जिसमें भटकती हुई मानवता के मार्गदर्शन के लिए क़ुरआन मजीद नाज़िल हुआ ।

क़ुरआन में है–''रमज़ान वह महीना है, जिसमें क़ुरआन उतारा गया जो इन्सानों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है । और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है, जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य और असत्य का अन्तर खोलकर रख देने वाली है । अत: अब से जो व्यक्ति इस महीने को पाए, उसके लिए अनिवार्य है कि इस पूरे महीने के रोज़े रखे ।''

(क़ुरआन, 2:185)

यही वह किताब है, जिसने समस्त मानवजाति को हैवानियत से निकालकर मानवता का सच्चा पाठ पढ़ाया । अरब समाज को शिर्क (अनेकेश्वरवाद) व मूर्ति पूजा के भयंकर गुनाहों से पाक किया । सभ्यता, संस्कृति व शिष्टाचार के मरहले निश्चित किये ।

क़ुरआन मजीद में है–'यह अल्लाह की किताब है, इसमें कोई संदेह नहीं । मार्गदर्शन है उन डरने वालों के लिए जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, जो रोज़ी हमने उनको दी है, उसमें से ख़र्च करते हैं ।'

(क़ुरआन, 2:2-3)

इन आयतों पर ग़ौर किया जाए, तो यह राज़ खुलकर सामने आता है कि अल्लाह तआला नमाज़ और रोज़े के ज़रिये बन्दे के अन्दर ऐसे गुण पैदा करने का इच्छुक है, जिससे क़ुरआन मजीद से मार्गदर्शन प्राप्त करना उसके मार्गदर्शन व शिक्षाओं पर अमन करना आसान हो । क़ुरआन मजीद जैसी महान नेमत का हक़ अदा कर सके । अल्लाह तआला ने अमानत से ताबीर किया है, यह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, जिसका बोझ उठाने से ज़मीन, आसमान और पहाड़ों ने इन्कार कर दिया और डर गये और इन्सान ने उठा लिया ।

यह एक निश्चित किया हुआ काम है कि क़ुरआन मजीद अल्लाह तआला की तरफ़ से इन्सानों के लिए महान नेमत है । यह महान नेमत व पवित्र इनाम जिस रात जिस वक़्त इन्सानों के लिए आसमान से दुनिया पर उतारा गया वह पल निस्संदेह इस योग्य था कि उसको वर्ष के शेष महीनों पर प्रधानता दी जाए । अत: जिस रात यह महान नेमत लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर उतरी उस रात को अल्लाह तआला ने मुबारक रात कहा है । अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है–

"हमने इस (क़ुरआन) को क़द्र की रात में अवतरित किया है । और तुम क्या जानो कि क़द्र की रात क्या है ? क़द्र की रात हज़ार महीनों से उत्तम है । फ़रिश्ते व रूह उसमें अपने रब की अनुज्ञा से हर आदेश लेकर उतरते हैं । वह रात पूरी की पूरी सलामती है उषाकाल के उदय होने तक ।" (क़ुरआन, 97:1-5)

इस्लामी समुदाय पर अल्लाह तआला की इस विशिष्ट रहमत का एक प्रदर्शन यह भी है कि इस उम्मत के लिए अल्लाह ने कम समय और थोड़े से अमल में वह पुण्य रखा है, जो दूसरे समुदायों को लम्बी अवधि तक बहुत अधिक कर्म करने से प्राप्त हुआ था ।

ग़ज़लें

(1)

ये न पूछो, है गोलमाल कहां
ये बताओ, है कोतवाल कहां

लूटकर ले गये घने बादल
मोतियों से भरा वो थाल कहां

खुद से मिलना तो हो नहीं पाता
पूछता तेरा हालचाल कहां

आप चिपके हुए हैं टी०बी० से
फिर रहे घर के नौनिहाल कहां

इक हिरन हिंसकों के रेहड़ में
रोज़ बच पाये बाल-बाल कहां

आज की सभ्य-शिष्ट कविता में
कोई भी जेनुइन सवाल कहां

अब दिलों में न वैसी आंच रही
सोच में भी वही उबाल कहां ।

हरेराम समीप

395, सेक्टर-8, फ़रीदाबाद-121006

(2)

हो मृतक का कोई कितना भी सगा
किन्तु उसके साथ मरता कौन है

सब सिमट जाते हैं अपने खोल में
एक ख़ुशबू-सा बिखरता कौन है

झूठ ही इन्कार करता है फ़क़्त
अन्यथा सच से मुकरता कौन है ।

● **चन्द्रसेन विराट**

बड़ी बरकतों वाला रमज़ान का महीना

■ मुहम्मद दाऊद
(नगीना)

जैसे ही रमज़ान आता है ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर की दया और करुणा की बौछार और बरसात शुरू हो जाती है । इसको हम संक्षिप्त में इस तरह कह सकते हैं ।

1. हर ख़ासो-आम कुरआन की ओर भागता और लपकता है । उससे संबंध स्थापित करता है, प्रत्येक मस्जिद में कुरआन पाक अव्वल से आख़िर तक पढ़ा जाने लगता है । खुदा से डर और ख़ौफ़ का आम वातावरण बन जाता है ।

2. समाज में झूठ, फ़रेब, बेशर्मी, बेहयाई जैसे सभी कुकर्मों से नफ़रत व घृणा और ज़्यादा बढ़ जाती है । प्रेम, मेल-मिलाप, भाईचारे में बढ़ोत्तरी (इज़ाफ़ा) होने लगता है ।

3. बड़े-बड़े गुनाह, शराब, जुआ, रिश्वत, चोरबाज़ारी से आम नफ़रत पैदा हो जाती है और उसके करने वाले भी कम से कम इन दिनों में उनसे बचने का प्रयास करने ही नहीं लगते बल्कि उनको त्याग तक देते हैं ।

4. रमज़ानुल मुबारक में एक-दूसरे के निकट आने की एक आम भावना पैदा हो जाती है । हर व्यक्ति चाहता है मैं दूसरे को रोज़ा इफ़्तार कराऊं या कोई अच्छी-सी चीज़ उपहार में दूसरे के यहां भेजूं ।

5. समाज के ग़रीब व परेशानहाल वर्ग की समस्याओं का समाधान होना चाहिए यह एहसास भी बढ़ जाता है और ज़कात और फ़ितरा जो इसी वर्ग का हक़ है यह रक़म उन पर ख़र्च की जाती है और वह चैन की सांस ले पाते हैं ।

6. इस माह में आदर व सम्मान का वातावरण भी पैदा होता और बढ़ जाता है ।

7. पूरे रमज़ान धन-दौलत के आदान-प्रदान तथा व्यापार में विस्तार पैदा होता है । लोगों के ख़र्च करने की क्षमता बढ़ जाती है ।

8. रोज़ा एक रोज़ेदार में जो क्षमता पैदा करना चाहता है कि इच्छाओं की लगाम उसके हाथ में आये आंख, कान, ज़बान सबका ही रोज़ा हो, किसी पर कोई ग़लत निगाह न उठे, ज़बान क़ाबू में रहे, ऐसा होने से शान्ति और सद्भाव का वातावरण पैदा होता है ।

9. रोज़ा अपना हिसाब ख़ुद लेने का जज़्बा पैदा करता है उससे रोज़ेदार में नम्रता और दूसरों के प्रति आदर व सम्मान की भावना पैदा करता है । उसकी निगाह आख़िरत की सफलता पर होती है और दुनिया उसकी निगाह में हेच (निरस्त) हो जाती है।

10. रोज़ा आदमी में दुख, मुसीबत, कठिनाई झेलने की क्षमता पैदा करता है । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया है रमज़ान सब्र का महीना है ।

11. रोज़ा तमाम बुराइयों से बचने के लिए शरण प्रदान करता है । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कोई तुम से झगड़ा करे तो कह दो मेरा रोज़ा है । मेरा रोज़ा है । गोया यह ढाल का काम करता है ।

12. रोज़ा बन्दे और खुदा में सीधा संबंध पैदा करता है । अकेले तक में इन्सान यह महसूस करता है कि खुदा मुझे देख रहा है ।

.13. रोज़ा ईश्वर के बेपनाह ईनाम का हक़दार बना है इसलिए कि वह स्वयं फ़रमाता है—रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा ।

रोज़ा जिस तरह चरित्र निर्माण करता है वह और किसी तरह संभव नहीं निस्सन्देह रमज़ान वह महीना है जिसमें रहमते और बरकतें बरसती हैं । एक अच्छे और स्वच्छ समाज में क्या-क्या गुण होना चाहिए रोज़ा वह सब कुछ प्रदान करता है । यह चरित्र निर्माण की ट्रेनिंग का महीना है । हमारे देश व समाज को ऐसे ही गुणों की आवश्यकता है परन्तु रमज़ान के पश्चात बहुत थोड़ा ही प्रभाव बाक़ी रह जाता है यही चिन्ता का विषय है । ऐसा क्यों होता है ?

گونگے، بہرے و نابینہ اَفراد کا منفرد فلاحی اِدارہ

IDEAL INFORMATION CENTRE FOR DISABLED (IICD) Regd.

Azampura, Hyd-24 A.P.

ESTD-2007













- گونگے بہرے اَفراد میں ہفتہ واری دینی اجتماع کے ذریعہ دین اسلام کا صحیح فہم اور شعور بیدار کیا جاتا ہے۔
- امسال IICD کی دعوت افطار پر 550 مسلم و 450 غیر مسلم افراد نے شرکت کی۔
- ۲۰۰۸ء میں ایجوکیشنل و کمپیوٹر انسٹیٹیوٹ قائم کیا گیا۔ قابل اساتذہ کی خدمات لی جاتی ہیں! جس میں اُردو، عربی، انگلش و انگلش گرامر، ریاضیات، سائنس، اخلاقی تعلیم دی جاتی ہے۔
- JOB ORIENTED COMPUTER COURSES اس مسابقتی دور میں گونگے بہرے افراد کو خود مکتفی ہونے کیلئے ادارہ نے اپنے قیام کے قلیل مدت میں اعلیٰ کورسس کی تعلیم کا انتظام کیا گیا ہے۔
- IICD کا منصوبہ میں شامل Deaf اسکول کے لیے Govt. Recognisation کی کاروائی کا آغاز کیا جاچکا ہے عنقریب اس کا تکملہ ممکن ہوگا (انشاءاللہ)۔

اپیل برائے تعاون اہل مخیّر حضرات کی خدمت میں عرضداشت :

چک اور ڈرافٹ پر صرف "IDEAL INFORMATION CENTRE FOR DISABLED" لکھیں۔ اکاؤنٹ نمبر : 3071840059 سنٹرل بنک آف انڈیا، برانچ نور خان بازار، حیدرآباد۔

MICR Code : 500016015 | IFSC Code : CBI No. 282407

ڈاکٹر خالد مبشر الظفر چیرمین IICD، ناظم شہر جماعت اسلامی ہند گریٹر حیدرآباد +91 9866685248	سید تبریز بخشی، سکریٹری +91 9059619641

درج ذیل مراکز پر بھی اپنے عطیات جمع کرواسکتے ہیں

سب ڈپو مرکزی مکتبہ اسلامی (چھتہ بازار) حیدرآباد 040-66710339	عُکاظ کتاب گھر (عکاظ کامپلکس، مہدی پٹنم، حیدرآباد) 040-23535567

آئیڈیل اِنفارمیشن سنٹر فار ڈیز ایبلڈ (رجسٹرڈ) 16-7-731، روبرو مسلم میٹرنٹی ہاسپٹل، اعظم پورہ، حیدرآباد۔

Tel & Fax : 040-24527201, +91 9010657201, (SMS Only) - 9291203299

लालची बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दबाव में टीकाकरण कार्यक्रम

■ भारत डोगरा

टीकाकरण स्वास्थ्य कार्यक्रम का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है जो अनेक बीमारियों से बचाव करता है । इसे बहुत सुरक्षित ढंग से सभी बच्चों तक पहुंचाना बड़ा ज़रूरी है । जब तक ज़रूरी टीकों या वैक्सीन को सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों में बनाया जा रहा था, तब तक इस क्षेत्र में मुनाफ़े की प्रवृत्ति हावी नहीं हुई थी और जो टीके वैज्ञानिक परामर्श के आधार पर सबसे ज़रूरी व उपयोगी माने जाते थे उनको ही टीकाकरण कार्यक्रम में रखा जाता था । पर हाल के वर्षों में विश्व स्तर पर वैक्सीन उद्योग में बदलाव आये हैं व इनमें बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का केन्द्रीकरण बहुत बढ़ गया है । इन बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की विकासशील देशों में अनेक सहायक कंपनियां हैं । इन कंपनियों की नज़र इस पर है कि विकासशील देशों के टीका कार्यक्रमों में उनके अधिक महंगे और मुनाफ़े वाले वैक्सीनों को किसी तरह शामिल करा लिया जाए क्योंकि यदि अनिवार्य टीकों में उनका महंगा टीका जुड़ गया तो बिना किसी विशेष प्रयास के उनके करोड़ों टीकों की बिक्री प्रतिवर्ष सुनिश्चित है । इसमें भी वे अधिक कम्बीनेशन के ऐसे टीकों को बेचने में अधिक रुचि रखते हैं जिनका पेटेंट अधिक समय चल सकता है व एकाधिकार जैसी स्थिति भी मिल सकती है ।

इस प्रवृत्ति के ज़ोर पकड़ने के साथ बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठनों में गहरी पैठ कर ली ताकि उनके माध्यम से उनके हितों की पैरवी हो सके । साथ में उन्होंने टीकाकरण या वैक्सीन संबंधी नये गठबंधन भी बनाए हैं जो विभिन्न देशों में उनके नये टीकों की पैरवी करते हैं । इसके लिए वे कुछ वित्तीय सहायता देने को भी तैयार रहते हैं ताकि आरंभ में नया टीका अधिक महंगा न लगे ।

एक अन्य प्रवृत्ति यह देखी गयी है कि विकासशील देशों के कुछ अधिकारियों व विशेषज्ञों को भी यह कंपनियां व अन्तर्राष्ट्रीय गठबंधन प्रलोभन देने लगे हैं कि हमारी बात मानो तो तुम्हें अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में अवकाश प्राप्ति के बाद मोटी आय का पद या अनुबंध मिल जाएगा । इस तरह एक बहुत अजीब स्थिति उत्पन्न हो गयी है कि टीकाकरण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में अब निर्णय इस आधार पर नहीं लिये जा रहे हैं कि किसी देश में सबसे ज़रूरी व उचित लागत के टीके कौन से हैं अपितु यह महत्वपूर्ण निर्णय इससे प्रभावित हो रहा है कि बहुत साधन-संपन्न बड़ी कंपनियां व उनसे जुड़े गठबंधन कौन से टीके बेचना चाहते हैं व उसमें सफल होते हैं । विकसित देशों में कुछ नये टीके आये हैं पर वे महंगे हैं । अत: पता नहीं कितने टिक पाएंगे ।

"ऐ लोगो अपने रब का डर रखो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जाति का उसके लिए जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत से पुरुष और स्त्रियां फैला दीं।"

–क़ुरआन

Mohtasham Hasan & Bros.

Mumbai

'कान्ति' के संपादक को सम्मान

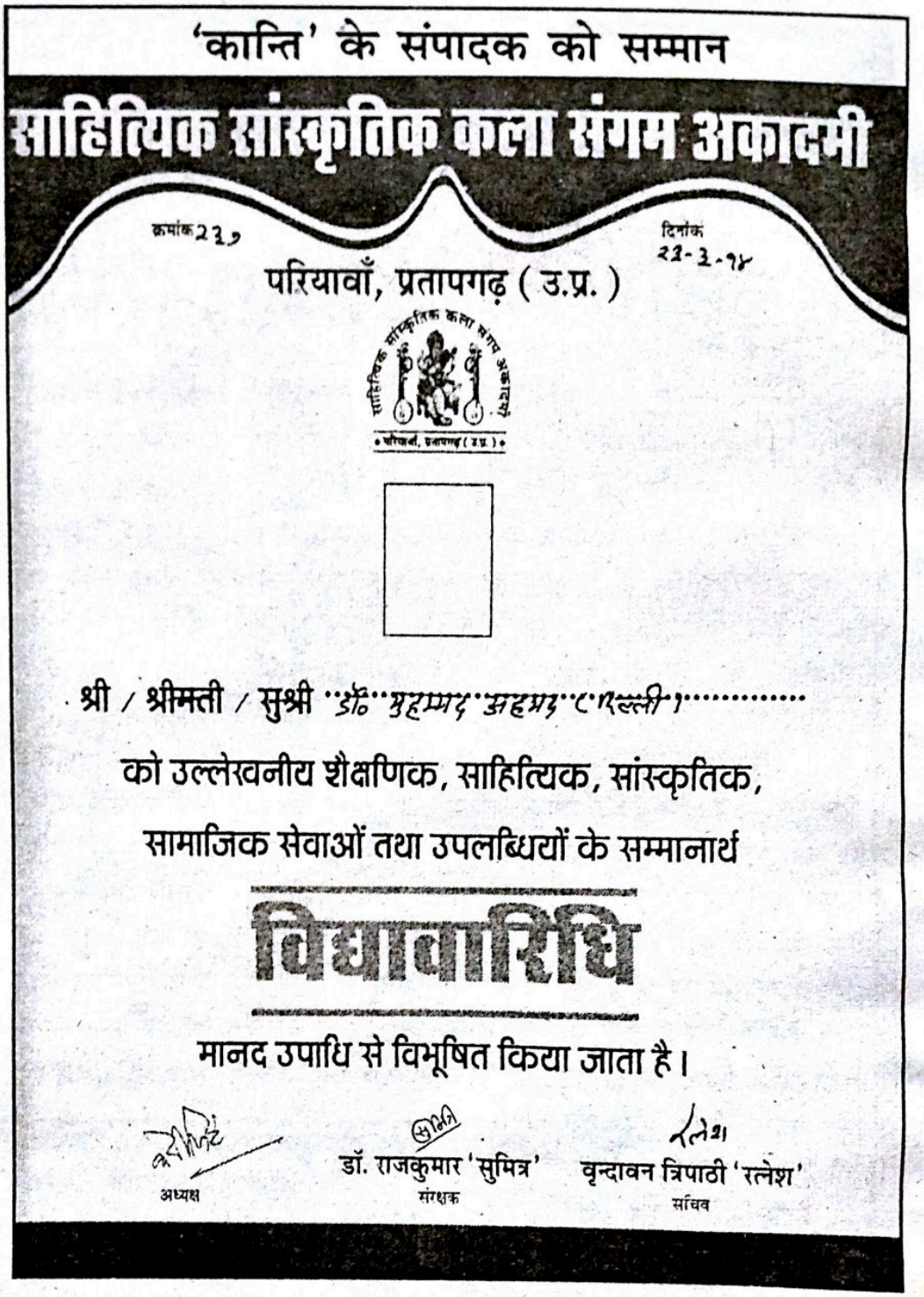

यदि उन्हें विकासशील देशों के टीकाकरण में जगह मिल गयी तो उनका उत्पादन कहीं बड़े पैमाने पर हो सकेगा व प्रति टीका लागत कम हो जाएगी । इस आधार पर टीका कंपनी का कारोबार टिक सकेगा । अत: अनेक कंपनियों का प्रयास यह है कि जो टीके पहले से विकासशील देशों के टीकाकरण में लगे हैं उनमें कोई नया टीका जोड़कर अपना नया कम्बीनेशन बना लें और इस नये कंबीनेशन को टीका कार्यक्रम में शामिल करा लें । इस तरह एक ही झटके में नये कम्बीनेशन का ऑर्डर मिल जाता है और बहुत मुनाफ़ा प्राप्त होता है । इसका सबसे चर्चित उदाहरण पेंटावेलेंट वैक्सीन है जो डी०पी०टी० में हिब प्लस हैप बी० वैक्सीन जोड़कर नया कम्बीनेशन बनाया गया है ।

डी०पी०टी० हमारे टीकाकरण कार्यक्रम में पहले से चल रहा था जो बहुत सस्ता था और इसे हमारे सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थान बनाने में पूरी तरह सक्षम थे और वर्षों से बना भी रहे थे । अब उसे छोड़कर इस नये कम्बीनेशन वैक्सीन पैंटावेलेंट को लाने की ज़बरदस्त पैरवी अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने की व अब कहीं अधिक महंगे वैक्सीन को तेज़ी से आगे बढ़ाया जा रहा है । पर इससे पहले एक बात और हुई कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों व अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के दबाव में डी०पी०टी० व अन्य ज़रूरी वैक्सीन बनाने वाली कई सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम बंद कर दिये गये या वहां वैक्सीनों का उत्पादन रोक दिया गया । इसका बहुत विरोध हुआ । संसदीय समिति ने इसकी बड़ी आलोचना की । इस निर्णय के विरुद्ध अदालतों में केस आरंभ हुए ।

अत: यह संभावना थी कि यह सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम फिर पहले जैसे डी०पी०टी० का बड़े पैमाने पर उत्पादन आरंभ कर देंगे । अत: बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रयास है कि इससे पहले ही पैंटावेलेंट वैक्सीन को स्वीकृति दिलवा दी जाए ताकि सार्वजनिक इकाईयों का डी०पी०टी० उत्पादन पहले जैसे करने का समुचित अवसर न मिले व ऑर्डर के अभाव में वे ठप्प हो जाएं । यह सब टीकाकरण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में मुनाफ़े की प्रवृत्ति हावी होने का परिणाम है । टीकाकरण का क्षेत्र पूरी तरह स्वास्थ्य व बच्चों के हित को आधार बनाकर निर्धारित होना चाहिए व इस पर मुनाफ़े की प्रवृत्तियों को किसी भी हालत में हावी नहीं होना चाहिए । इसके निर्णय निष्पक्षता से केवल उपलब्ध वैज्ञानिक तथ्यों व अध्ययनों के आधार पर होने चाहिए । इन प्राथमिकताओं को ऊपर रखते हुए समग्र वैक्सीन नीति बनानी चाहिए । (वि०फी०)

मिट्टी का तेल

■ मासूम अंसारी

लखनऊ शहर नवाबों का शहर, ख़ानकाहों व दरबारियों का शहर, शुअरा अदीबों का शहर, दाद देती गूंजती महफ़िलों का शहर, सलामी बजाते गुलामों और कनीज़ों का शहर, मशकीज़ों में पानी भरते वहशती और ऊंची लय तान में गाते भांडों का शहर ।

ख़ामोश रात की तरह चुपचाप गुज़रते वक़्त ने लखनऊ के ठाट को तो ख़त्म कर दिया मगर बदनसीबी, ग़रीबी को छोड़ गया । देखते-देखते सारी तहज़ीब बदल गयी । पूरा समुदाय बदल कर रह गया । नवाब रउसा बत्ती की तरह गुल हो गये ।

निचले स्तर के लोगों के खाने-कमाने का ज़रिया बन्द हो गया । दर-दर की ठोकरें खाने लगे । वह बर्फ़ीली मलाई खीर आंख से दूर ख़्वाबों तक में न दिखायी देती । कुछ दिन तो उमरा रउसा ने रिवायत से काम चलाया । फिर धीरे-धीरे सब कुछ ख़त्म हो गया । भांडों की रिवायत भी उनके घरों तक ही रह गयी ज़माने के बदलते मिज़ाज को देखते इस तबक़े ने अपनी रोज़ी-रोटी को ज़रिया बदलना चाहा और बदले में उसे दर-दर की ठोकरें खाने को मिलीं ।

आज के युग में ये लोग ग़रीबी रेखा से नीचे पहुंच गये ।

एक लंबी-सी तंग गली में शक्को बी एक ख़स्ता हाल छोटे से कमरे में रहती थीं । उसी में खाना पकाना, उसी में उठना-बैठना शक्को बी का बचपन नवाबी दौर में गुज़रा था कहां वह शाहाना ठाठें और कहां अब इस उम्र में ख़स्ता हाली के दिन । तब और अब में कितना फ़र्क़ था । अब तो दो वक़्त की रोटी मयस्सर होना मुश्किल था ।

सूरज भांड के नाम से उसका शौहर मशहूर था । नवाबों व रईसों की दहलीज़ पर गाने वाले भांड अपनी गली-मुहल्ले के होकर रह गये थे । कुछ ने ग़रीबी से तंग आकर अपना पेशा बदल दिया, क़र्ज़ लिया और छोटा-मोटा काम चुन लिया । कोई हलवा पूरी बनाने लगा, तो कोई चने बेचने लगा ।

मगर रिवायत को ख़त्म न होने दिया । निसार भांड हलवा पूरी की फेरी कुछ इस अन्दाज़ में करते–"सवेरे वाली गाड़ी से चले जाएंगे हलवा पूरी दे के जाएंगे । ऊंची तान में गाकर अपनी आमद की ख़बर देते । जिस दिन सौदा फ़रोख़्त न होता तो बार-बार गाते और गाते-गाते आगे बढ़ जाते । मायूसी और दर्द उनकी लय में झलक पड़ता । और ऐसा कई बार महसूस होता कि वह सचमुच सवेरे वाली गाड़ी से चले जाएंगे । और दोबारा वह इस मुहल्ले में वापस नहीं आएंगे ।

शाम ढले कल्लू भांड करारे चने की फेरी करने आता । "चना जोर गरम बाबू मसाले दार चना जोर गरम"। ख़रीदार तो कम ठिल्ले बाज़ उसे ज़्यादा घेर लेते । कल्लू बहुत काला-गंजा शर्मीला था । लोग उसे छेड़कर मज़ा लेते । वह लोगों की हरकतों से परेशान हो जाता और धीरे-धीरे उसने आना ही छोड़ दिया और एक समय ऐसा आया कि कल्लू की तरह निसार भांड भी कहीं सवेरे वाली गाड़ी से चले ही गये और ये आवाज़ें कहीं गुम होकर रह गयीं ।

अपनी रिवायत को छोड़कर नहीं कोई काम धंधा अपनाया था तो वह ये शक्को बी के सूरज भांड, चार दिन की भूख सही नहीं जाती तो ऊंची तान में गाना बजाना शुरू कर देते । उनके सुर-तान ऐसे मुहल्ले में गूंजते मानो वह ख़ुदा से शिक्वा भरी फ़रियाद कर रहे हो । और एक दिन वह आवाज़ भी दरिया की लहरों की तरह कहीं दूर बह गयी । शक्को बी अकेली रह गयीं ।

जैसे-तैसे दिन काट रही थीं । इसकी लेनी उसकी देनी से गाड़ी चल रही थी । शक्को बी ने अपनी दवा-दारू के लिए सूरज भांड के इंस्ट्रूमेंट भी बेच डाले थे । आज के युग में उनकी क़ीमत भी औने-पौने लगी । रक़म देखकर शक्को बी ने बुरा-सा मुंह बनाया । वैसे भी उनका होता भी क्या ? चालीस बरस तो हो गये थे सूरज भांड को ख़त्म हुए इतने बरसों में धूल ही जमी है । अब कहां दम था शक्को बी में कि उनको संभाल कर रखें । फ़िलहाल उनकी ज़रूरत तो

पूरी हो ही गयी थी उनसे ।

दिसम्बर की ठंडी रातें थीं । सुबह के चार बज रहे थे, शक्को बी की आवाज़ पूरे मुहल्ले में गूंज रही थी । ''राबिया बाजी राबिया बाजी, कंट्रोल में मिट्टी का तेल बह रहा है'' राबिया बाजी ने भी आनन-फ़ानन बुरक़ा पहना, ऊपर से शाल डाली और चल दीं । दो ढाई घंटे की मशक़्क़त के बाद उनका नम्बर लगा था । पौ फट चुकी थी ।

हल्की-फुल्की चहल-पहल शुरू हो चुकी थी । वह सन्नाटा और हू का आलम ख़त्म हो चुका था । चाय के होटल खुल गये थे लोग चुस्कियां लेते दिख पड़ रहे थे । राबिया और शक्को बी तेल लिए लौट रही थीं । यकायक शक्को बी औंधे मुंह गिर पड़ीं, काक खुल गयी तेल ज़मीन पर बहने लगा ।

शक्को बी उसे बहते देख रही थीं और मुंह से ऊंह तक न कह पा रही थीं । और टकटकी बंध-सी गयी । राबिया बाजी चीख़ने लगीं ''शक्को आपा, उठिए आपको क्या हो गया शक्को आपा''। वह उन से उठाए न उठीं । जैसे दूर बहुत दूर से उठिए-उठिए की आवाज़ें शक्को बी के कानों में पड़ रही थीं । थोड़ी देर में उनकी आंखें बन्द हो गयीं और तेल धीरे-धीरे मिट्टी में समा रहा था और धीरे- धीरे शक्को बी की सांसे मिट्टी में समा रही थीं ।

डॉ० रामनिवास 'मानव' की क्षणिकाएं

दलदल में धंसा है ।
आरक्षण और तुष्टिकरण के,
दो पाटों के बीच में
भारत अब फंसा है ।

लूट-खसोट प्रतियोगिता
कब से यहां जारी है ।
कल तक उन्होंने लूटा था,
अब इनकी बारी है ।

देश के संसाधनों को
राजनीति के सांड चार रहे हैं,
और उसका ख़ामियाज़ा
आमजन भर रहे हैं ।

मेरा भारत देश
सचमुच महान है ।
यहां भ्रष्टाचारियों के हाथ में
सत्ता की कमान है ।

जो नेता बाहर से
लगते निपट अनाड़ी हैं,
लूट-खसोट के वे
माहिर खिलाड़ी हैं ।

वे कमीशन का कत्था,
चूना रिश्वत का लगाते हैं ।
इस प्रकार देश को ही
पान समझकर खाते हैं ।

देश को, जनता को,
सबको छल रहे हैं ।

नेता नहीं, वे सांप हैं,
आस्तीनों में पल रहे हैं ।

नेताजी झूठ में
ऐसे रच गये,
सच को भी झूठ कहकर
साफ़ बच गये ।

नेता बाहर रहे
या रहे जेल में,
वह पारंगत है
सत्ता के हर खेल में ।

उन्होंने गांधी टोपी पहन
अन्नागिरी क्या दिखायी,
कल तक 'दादा' थे,
आज बने हैं 'भाई' ।

जो कई दिनों से था
अस्पताल में पड़ा हुआ,
ख़र्चे का बिल देखते ही
भाग खड़ा हुआ ।

क्या छोटे हैं
और क्या बड़े हैं,
सभी यहां बिकने को
तैयार खड़े हैं ।

झूठ जाने क्या-क्या
सरेआम कहता रहा
और सिर झुकाकर सच
चुपचाप सहता रहा ।

फासीवाद और उसके लक्षण

❖ राम पुनियानी

फासीवाद, जो यूरोप में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जन्मा, इसके द्वारा मानवता को दिये गये त्रास को हमारी दुनिया आज तक नहीं भुला सकी है । फासीवाद क्रूर था, वह प्रजातंत्र को कुचलने मे यक़ीन रखता था, वह अल्पसंख्यकों को निशाना बनाता था, वह राष्ट्र की शक्ति को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करता था, वह अति-राष्ट्रवादी था, वह अपने नेता को 'मज़बूत' नेता के रूप में प्रचारित करता था और उसके आसपास एक आभामंडल का निर्माण करता था । उस दौर में जो कुछ घटा, उसे हम आज तक भुला नहीं पाये हैं और हम नहीं चाहते कि हमारी दुनिया को उस दौर से फिर कभी गुज़रना पड़े । तभी से ये दो शब्द-फासिज़्म और हिटलर-हमारी दैनिक शब्दावली का हिस्सा बन गये । ये हमें उस तानाशाहीपूर्ण शासन और उस क्रूर तानाशाह की याद दिलाते हैं । इस राजनैतिक परिघटना के लक्षण बहुत विशिष्ट हैं और किसी व्यक्ति या शासन व्यवस्था पर हिटलर या फासीवादी का लेबल चस्पां करने से पहले हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए ।

इस मुद्दे पर बहस एक बार फिर इसलिए शुरू हुई है क्योंकि राहुल गांधी ने इशारों में यह कहा कि नरेंद्र मोदी, हिटलर की तरह हैं । पलटवार करते हुए भाजपा के अरुण जेटली ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद भारत के सिर्फ़ एक नेता की तुलना हिटलर से की जा सकती है और वे हैं इंदिरा गांधी, जिन्होंने देश में आपातकाल लगाया । अपने राजनैतिक विरोधियों को जेलों में ठूंस दिया और प्रजातांत्रिक स्वतंत्रताओं को समाप्त कर दिया । यह सही है कि इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल लगाया था । यह एक निंदनीय क़दम था । यह भी सही है कि उनके आसपास के कुछ लोगों का व्यवहार तानाशाहीपूर्ण था परंतु क्या वह फासिस्ट शासन था ? क्या इंदिरा गांधी की तुलना हिटलर से की जा सकती है ? क़तई नहीं । हमें यह समझना होगा कि तानाशाही और एकाधिकारवादी शासन व्यवस्था के कई स्वरूप होते हैं । कई देशों में आज भी फ़ौजी शासन है और कई में राजा-महाराजा सत्ता में हैं परंतु फासिज़्म इन सबसे बिल्कुल अलग है ।

यूरोप के लगभग सभी फासीवादी, प्रजातांत्रिक रास्ते से सत्ता में आये । उसके बाद उन्होंने धीरे-धीरे प्रजातंत्र का अंत कर दिया और तानाशाह बन बैठे । उन्होंने स्वयं को देश के उद्धारक के रूप में प्रस्तुत किया और अपने देश की सीमाओं का विस्तार करने की कोशिश इस बहाने से की कि उनके पड़ोसी देश, कभी न कभी उनके देश का हिस्सा थे । फासीवाद के दो अन्य प्रमुख पारिभाषिक लक्षण यह हैं कि फासीवादी शासकों को उद्योगपतियों का पूर्ण समर्थन हासिल रहता है और इसके बदले उन्हें राज्य हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध कराता है । दूसरे, फासीवादी शासक दुष्प्रचार और अन्य माध्यमों से अल्पसंख्यकों को निशाना बनाते हैं । उन्हें राष्ट्रविरोधी और देश के लिए ख़तरा बताया जाता है । देश की सारी समस्याओं के लिए अल्पसंख्कयकों को दोषी ठहराया जाता है । इसके बाद शुरू होता है अल्पसंख्यकों का क़त्लेआम, जिसे समाज के बड़े वर्ग का मूक और कब जब मुखर समर्थन प्राप्त रहता है । यह फासीवाद साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद पर आधारित होता है, जिसे नस्ल या धर्म के आधार पर औचित्यपूर्ण ठहराया जाता है (हिटलर ने इसके लिए नस्ल का उपयोग किया था)।

हमारे देश में फासीवादी विचारधारा की रूप रेखा आर०एस०एस० के प्रमुख विचारक एम०एस० गोलवलकर ने अपनी पुस्तक 'व्ही ऑर अवर नेशनहुड' में प्रस्तुत की । इस पुस्तक में जर्मनी के नाजी फासीवाद से बहुत कुछ लिया गया है और नाजीवाद के सिद्धांतों की जमकर प्रशंसा की गयी है । यह पुस्तक नस्लीय गर्व को उचित ठहराती है और 'दूसरे' (इस मामले में ग़ैर-हिंदू) से निपटने में क्रूर तरीक़ों को इस्तेमाल की वकालत करती है । पुस्तक, हिंदू संस्कृति को राष्ट्रीय संस्कृति के रूप में स्वीकार करने की वकालत करती है और आमजनों का आह्वान करती है कि वे हिंदू नस्ल और हिंदू राष्ट्र का महिमामंडन करें । 'अन्यों' को हिंदुओं के अधीन मानें और 'अन्यों' के नागरिक अधिकारों को सीमित करें, जैसा कि जर्मन फासीवादियों ने हिटलर के नेतृत्व में यहूदियों के साथ किया था । इसकी प्रशंसा करते हुए गोलवलकर लिखते हैं, "अपने राष्ट्र और संस्कृति की शुचिता बनाए रखने के लिए जर्मनी ने अपने देश को यहूदी

नस्ल से मुक्त कर दिया । यह राष्ट्रीय गौरव का शानदार प्रकटिकरण था । जर्मनी ने यह भी दिखाया कि किस तरह ऐसी नस्लों या संस्कृतियों, जिनमें गहरे तक अंतर हैं, को कभी एक नहीं किया जा सकता । इससे हिंदुस्तान को सीखना और लाभ उठाना चाहिए'' (व्ही ऑर अवर नेशनहुड डिफाइंड, पृष्ठ 27, नागपुर 1938) ।

फासिज़्म के मूल में है एक ऐसी सामूहिक-सामाजिक सोच का निर्माण, जिसके निशाने पर 'दूसरा' समुदाय हो । मुसलमानों और ईसाइयों का जानते-बूझते दानवीकरण कर दिया गया है और उन्हें सामान्यजनों की सोच में 'दूसरा' बना दिया गया है । यही कारण है कि उनके ख़िलाफ़ नियमित तौर पर होने वाली हिंसा को समाज की मौन स्वीकृति प्राप्त रहती है । आर०एस०एस० की विचारधारा, फासीवाद का भारतीय संस्करण है । इसकी नींव में हैं अतिराष्ट्रवाद, 'दूसरे' (मुसलमान व ईसाई) व अखंड भारत की परिकल्पना और भारतीय राष्ट्रवाद की जगह हिंदू राष्ट्रवाद के प्रति वफ़ादारी । गांधी जी ने आर०एस०एस० के इन लक्षणों को बहुत पहले ताड़ लिया था । उन्होंने संघ को ''एकाधिकारवादी दृष्टिकोण वाला साम्प्रदायिक संगठन'' बताया था ।

फासीवाद एक चमत्कारिक नेता के बिना नहीं पनप सकता । सन 2002 के बाद से मोदी एक ऐसे चमत्कारिक नेता के रूप में उभरे हैं और उन्हें चमत्कारिक नेता का स्वरूप देने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है । मोदी की फासीवादी सोच, गंभीर अध्येताओं और समाज विज्ञानियों से तब भी नहीं छुपी थी जब वे बड़े नेता नहीं थे । गुजरात क़त्लेआम के बहुत पहले, आशीष नंदी ने लिखा था,

''एक दशक से भी ज़्यादा पहले, जब मोदी आर०एस०एस० के छोटे-मोटे प्रचारक थे व बी०जे०पी० में अपना स्थान बनाने के लिए प्रयासरत थे, उस समय मुझे उनका साक्षात्कार लेने का मौक़ा मिला । उनसे मुलाक़ात के बाद मेरे मन में कोई संदेह नहीं रह गया कि वे एक विशुद्ध फासीवादी हैं । मैं 'फासीवाद' शब्द को गाली की तरह प्रयुक्त नहीं करता । मेरी दृष्टि में वह एक बीमारी है, जिसमें संबंधित व्यक्ति की विचारधारा के अलावा उसके व्यक्तित्व और उसके प्रेरणास्रोतों की भी भूमिका होती है । वे (मोदी) अति शुद्धतावादी हैं, उनके मन में भावनाओं के लिए कोई स्थान नहीं है और वे हिंसा में विश्वास करते हैं-वे जुनूनी और अर्द्धविक्षिप्त हैं । मुझे अभी भी याद है कि उन्होंने किस तरह बड़ी नपी-तुली भाषा में यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि भारत के विरुद्ध सारी दुनिया षड्यंत्र कर रही है और किस तरह हर मुसलमान देशद्रोही और संभावित आतंकवादी है । इस साक्षात्कार ने मुझे अंदर तक हिला दिया और इसके बाद मैंने याज्ञनिक से कहा कि अपने जीवन में पहली बार मैं ऐसे व्यक्ति से मिला हूं जो पुस्तकों में दी गयी फासीवाद की परिभाषा पर एकदम फिट बैठता है । ये संभावित हत्यारा है, बल्कि ये भविष्य में क़त्लेआम भी कर सकता है ।''

इसी तरह, जब अप्रैल 2010 में जर्मनी का एक प्रतिनिधिमंडल गुजरात की यात्रा पर आया तो उसके एक सदस्य ने कहा कि उसे यह देखकर बहुत धक्का लगा कि हिटलर के अधीन जर्मनी और मोदी के अधीन गुजरात में कितनी समानताएं हैं । यहां यह बताना समीचीन होगा कि गुजरात की स्कूली पाठ्य-पुस्तकों में हिटलर को एक महान राष्ट्रवादी बताया गया है । गुजरात, हिंदू राष्ट्र की प्रयोगशाला रहा है । मोदी की प्रचार मशीनरी चाहे कुछ भी कहे, सब यह जानते हैं कि 2002 के क़त्लेआम के बाद से, राज्य में धार्मिक अल्पसंख्यकों के हाल बेहाल हैं । क्या हम कह सकते हैं कि फासीवाद केवल यूरोप तक सीमित है और वह भारत में नहीं आ सकता ?

मूलतः फासीवाद एक ऐसी विचारधारा है, जिसका जन्म समाज के उन तबक़ों में होता है जो प्रजातंत्र के ख़िलाफ़ हैं और जो काल्पनिक भयों का निर्माण कर प्रजातांत्रिक संस्थाओं को ख़त्म कर देना चाहते हैं और जो यह मानते हैं कि चीज़ों को ठीक करने के लिए एक मज़बूत नेता की आवश्यता है । फासीवाद, अतिराष्ट्रवाद पर ज़ोर देता है और अल्पसंख्यकों को निशाना बनाता है । पड़ोसी देशों के प्रति उसका रवैया आक्रामक होता है । इस अर्थ में फासीवाद किसी भी देश पर छा सकता है-किसी भी ऐसे देश पर, जहां सामाजिक आन्दोलन या तो कमज़ोर हैं या बंटे हुए हैं या फासीवाद के ख़तरे के प्रति जागरूक नहीं हैं ।

कुछ लोग कहते हैं कि भारत में इतनी विविधताएं हैं कि यहां फासीवाद के लिए कोई जगह नहीं है । समय के साथ कई बार विविधताएं समाप्त हो जाती हैं और सब ओर एक सी प्रवृत्तियां उभरने लगती हैं । इसलिए यह मानना अनुचित होगा कि भारत में फासीवाद कभी आ ही नहीं सकता, विशेषकर इस तथ्य के प्रकाश में कि इस तरह की प्रवृत्तियों को भारत में भारी सर्मथन मिल रहा है । फासीवादी ताक़तों की ठीक-ठीक पहचान और प्रजातांत्रिक सिद्धांतों व बहुवाद के मूल्यों की रक्षा के लिए सम्मिलित प्रयास ही हमारे प्रजातंत्र को बचा सकते हैं । (वि०फ़ी०)

हवा की उड़ान भी रोज़गार का ज़रिया

हवा की उड़ान में रोज़गार की बात हवाई या निराधार नहीं है। उड्डयन के क्षेत्र में विकास और प्रगति के इस युग में संभावनाएं बढ़ी हैं। ख़ासतौर पर रोज़गार के अवसर यहां निजी कंपनियों की दख़ल के पश्चात तेजी से बढ़ रही हैं। मार्टिरियोलॉजिस्ट व टिकटिंग तथा रिजर्वेशन स्टाफ़ से लेकर फ़्लाइट इंजीनियर व पायलट तक के नये-नये पद सृजित हो रहे हैं।

इसके अतिरिक्त एयर होस्टेस फ्लाइट स्टीवर्ड, एयरक्राफ्ट इंजीनियर, एयर ट्रैफिक अधिकारी के स्थान भी बढ़ रहे हैं। समय-समय पर रिक्तियां निकलती रहती हैं। योग्य व्यक्ति आवेदन करके इन पदों पर कार्य करने का अवसर प्राप्त कर सकते हैं। आइए देखते हैं कि किस पद के लिए क्या योग्यता होनी चाहिए ?

पायलट

पायलट बनने के लिए लगभग दो वर्ष का प्रशिक्षण लेना आवश्यक है। समस्त व्यावसायिक पायलटों का लाइसेंस महानिदेशक नागरिक उड्डयन के द्वारा जारी किया जाता है। किसी भी पायलट को हवाई जहाज़ के समस्त तकनीकी क्रिया-कलापों की जानकारी होनी चाहिए। क्योंकि उसी के ऊपर यात्रियों, उड़ान दल और हवाई जहाज का दायित्व होता है।

बीस वर्ष की आयु पूरी कर चुका कोई भी स्वस्थ नवजवान जो विज्ञान विषयों के साथ बारहवीं पास कर चुका हो, देश के 27 फ्लाइंग क्लब में से किसी एक में पंजीकरण करा सकता है। यहीं से उसके कैरियर की शुरुआत होती है। पहले एस॰पी॰एल॰ यानी स्टूडेंट पायलट लाइसेंस तथा बाद में पी॰पी॰एल॰ यानी प्राइवेट पायलट लाइसेंस जारी किया जाता है। व्यावसायिक पायलट लाइसेंस प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति को हवाई कंपनियों में जगह मिल जाती है। इन लोगों को विभिन्न हवाई उड़ानों के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। कामर्शियल हेलीकॉप्टर पायलट लाइसेंस व प्राइवेट हेलीकॉप्टर पायलट लाइसेंस प्राप्त करने के लिए 15 से 18 वर्ष की आयु सीमा निर्धारित की गयी है। इस आयु सीमा के भीतर ही इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी, रायबरेली उत्तर प्रदेश को आवेदन भेजना होता है। तकनीकी क्षमता के अलावा किसी भी पायलट में आकस्मिक संकट से उबरने का विशेष गुण होना ज़रूरी होता है।

फ्लाइट इंजीनियर

इस पद के लिए आवेदन करने के इच्छुक व्यक्ति को विज्ञान विषयों के साथ सीनियर सेकेंड्री तथा फ्लाइट इंजीनियर का ग्राउंड पाठ्यक्रम व कामर्शियल लाइसेंस होना ज़रूरी होता है। आयु तीस वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। किसी फ्लाइट इंजीनियर के लिए यह भी आवश्यक है कि वह इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिकल्स, मैकेनिकल एयरोनोटिकल व कंप्यूटर में से किसी एक में इंजीनियरिंग ग्रेजुएट हो।

किसी भी फ्लाइट इंजीनियर की भूमिका पायलट से कम महत्वपूर्ण नहीं मानी जा सकती। वह उड़ान से पहले, उड़ान के दौरान तथा उड़ान के बाद हवाई जहाज़ की समस्त कार्य प्रणालियों की जांच करता है।

एयरक्राफ्ट इंजीनियर

एयरक्राफ्ट इंजीनियर का कामकाज भी फ्लाइट इंजीनियर से कुछ मिलता-जुलता सा है। एयरक्राफ्ट इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम अपने देश में आई॰आई॰टी॰ कानपुर तथा हिन्दुस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी चेन्नई द्वारा उपलब्ध करवाया जाता है। हवाई जहाज व एयरक्राफ्ट के सभी उपकरणों की समुचित देख-रेख, उनकी सुरक्षा, सक्षम संचालन की ज़िम्मेदारी एयरक्राफ्ट इंजीनियर की ही होती है।

एयरोड्रम अधिकारी

एयरोड्रम अधिकारी रेडियो संचार उपकरणों के माध्यम से एयर ट्रैफिक कंट्रोल तथा हवाई अड्डों से संपर्क जोड़ रखने का काम करता है। इस पद हेतु विज्ञान से स्नातक व्यक्ति जिनकी आयु 18 से 25 वर्ष के बीच हो, आवेदन कर सकते हैं।

हज़रत मुहम्मद(सल्ल०) की जीवनी

हज़रत मुहम्मद(स०) जीवन और संदेश	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	12.00
प्यारे नबी कैसे थे?	इरफ़ान ख़लीली	20.00
प्यारे नबी ऐसे थे !	माइल ख़ैराबादी	10.00
जगत-गुरु	अबू ख़ालिद	40.00
जीवनी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मु० इनायतुल्लाह सुब्हानी	115.00
बड़ों की माँए	माइल ख़ैराबादी	12.00
रह्मतुल-लिल-आलमीन	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
विश्व-नायक	डॉ० कौसर यज़दानी नदवी	36.00
विश्व-नेता हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
हज़रत मुहम्मद : एक संक्षिप्त परिचय	डॉ० मुहम्मद अहमद	06.00
हज़रत मुहम्मद एक महान समाज सुधारक	प्रो० मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद	10.00
हज़रत मुहम्मद का आदर्श	श्री नाथूराम	16.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल० का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल०के संदेशों के मूल तत्त्व	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	04.00
आख़िरी नबी (सल्ल०)	हमूदा अब्दुल आती	06.00
अल्लाह के रसूल का व्यावहार अपने शत्रुओं के साथ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	10.00
क्रान्ति-दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल०	नईम सिद्दीक़ी	70.00

परिवार इस्लाम की नज़र में

औरत और इस्लाम	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	24.00
औरत और प्राकृतिक नियम	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इस्लाम और बर्थ कंट्रोल	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	60.00
नारी और इस्लाम	मक़बूल अहमद फ़लाही	06.00
परदा	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	100.00
परिवार इस्लाम की नज़र में	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
बहुविवाह	मौलाना सय्यद हामिद अली	50.00
माँ-बाप के अधिकार	मौलाना सय्यद लुत्फ़ुल्लाह क़ादरी	28.00
मुस्लिम पर्सनल ला और समान सिविल कोड	शम्स पीरज़ादा	12.00
मुस्लिम पर्सनल ला धार्मिक व सामुदायिक...	मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	10.00
मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा समस्या...	उमर अफ़ज़ल	40.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

मुस्लिम पर्सनल लॉ में अनुचित हस्तक्षेप

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

23 अप्रैल 1985 को सुप्रीम कोर्ट ने मुहम्मद अहमद खां बनाम शाहबानो बेगम मुक़दमे में जो फ़ैसला सुनाया था और मुसलमानों के विरोध के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने संसद द्वारा इसके विरोध में क़ानून बनवाकर इसके अमलदरामद पर रोक लगवा दी थी, ठीक वैसा ही फ़ैसला 29 साल के बाद सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिया जाना अत्यंत अफ़सोसनाक और निंदनीय है । यह मुस्लिम पर्सनल लॉ में सीधा हस्तक्षेप है । इसे एक इत्तिफ़ाक़ ही कहेंगे कि ताज़ा फ़ैसला भी अप्रैल के महीने में आया है, जब लोकसभा के लिए मतदान हो रहे हैं ।

ऐसे में यह माना जा सकता है कि उस समय भी चुनावी माहौल रहा होगा । बहरहाल इसे जनमत ध्रुवीकरण के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए । गत 26 अप्रैल को शमीम बानो बनाम अशरफ़ ख़ां मुक़दमे की सुनवाई करते हुए जस्टिस दीपक मिश्र और जस्टिस विक्रमजीत सेन की खंडपीठ ने अपने फ़ैसले में मुस्लिम महिला को इद्दत (तलाक़ के बाद तीन महीने तक) की अवधि पूरी होने के बाद भी पति से गुज़ारा भत्ता लेने का हक़दार ठहराया । पीठ ने कहा कि मुस्लिम महिला (तलाक़ अधिकार संरक्षण) क़ानून की धारा 3 के तहत गुज़ारा भत्ता देने की व्यवस्था सिर्फ़ इद्दत तक सीमित नहीं है । देश के मुसलमान मुस्लिम पर्सनल लॉ अनुप्रयोग अधिनियम, 1937 द्वारा शासित हैं । यह मुसलमानों के लिए मुस्लिम पर्सनल लॉ को निर्देशित करता है जिसमें शादी, महर, तलाक़, रख-रखाव, उपहार, वक़्फ़, इच्छा और विरासत शामिल है । सुप्रीम कोर्ट का ताज़ा फ़ैसला सहज रूप से विवादकारी है, क्योंकि यह इस्लाम की शिक्षाओं के अनुरूप नहीं है । इस प्रकार यह मुस्लिम पर्सनल लॉ में सीधा हस्तक्षेप है । कुछ लोग यह भी कहते हैं कि देश में एक ही नागरिक क़ानून होना चाहिए, जिसका भारतीय संविधान समर्थन करता है । इसके अनुच्छेद 44 (नीति निर्देशक तत्व) में समान सिविल कोड की परिकल्पना की गयी है । इसके हवाले से सुप्रीम कोर्ट केन्द्र सरकार को पहले सुझाव दे चुकी है कि पूरे देश में समान सिविल कोड लागू करे । संघ परिवार इसके लिए बहुत लालायित दिखता रहा है, जबकि यह सच्चाई सबको पता है कि भारत जैसे बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक देश में इसे लागू कर पाना असंभव है । लेकिन वोटों की राजनीति को चमकाने के लिए इसके लिए दुष्प्रयास किये जाते रहे हैं ।

मदनलाल खुराना जिन्हें भाजपा ने काम निकल जाने के बाद गंदे-बदबूदार कीचड़ में फेंक दिया था, जब दिल्ली के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने इस बाबत एक प्रस्ताव विधानसभा में पारित तक करवा लिया था । मध्य प्रदेश विधानसभा में भी भाजपा के लोगों ने भी ऐसे दुष्प्रयास किये, जो अंततः नाकाम हो गये, क्योंकि ये नाकाम होने ही थे । यह संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदत्त उनके मौलिक अधिकारों के सर्वथा विपरीत है । संविधान का अनुच्छेद 25 सभी नागरिकों को

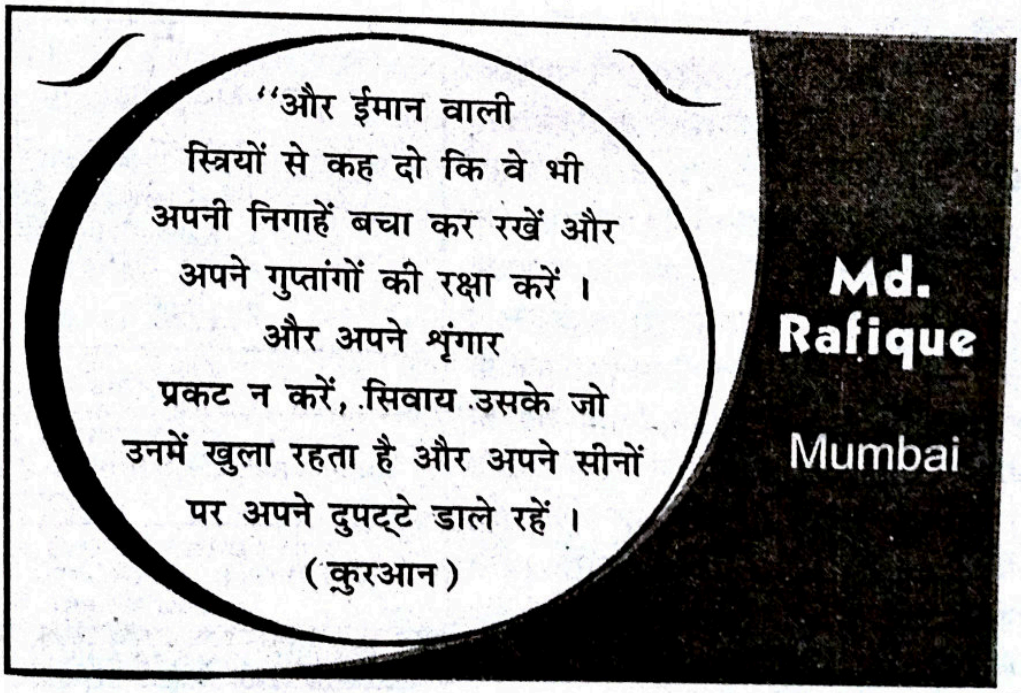

अंत:करण और धर्मानुसार अमल करने की आज़ादी देता है । ऐसी ही बात संविधान की प्रस्तावना में कही गयी है ।

संविधान में धाराओं 25(1) और 26 के अंतर्गत जो बातें कही गयी हैं उनका सार यह है कि हर धार्मिक समुदाय को इसका अधिकार प्राप्त होगा कि अपने धर्म पर चले, तथा अपने तौर पर अपने धार्मिक क्रिया-कलाप अंजाम दे । अत: यह सिर्फ़ मुसलमानों (या अन्य अल्पसंख्यक समुदायों) का मामला ही नहीं, बल्कि संवैधानिक प्रावधान का भी तक़ाज़ा है कि उसके अंतर्गत देश में समान सिविल कोड लागू न हो । यही आदर्श बात भी है । मुसलमानों ने भी समान सिविल कोड को लागू नहीं किया । जब वे लगभग नौ सौ वर्ष तक देश के शासक रहे, कभी भी उन्होंने हिन्दू या अन्य धर्मानुयायी जनता पर अपना क़ानून नहीं थोपा । अंग्रेज़ों ने लार्ड मैकाले की अध्यक्षता में समिति बनाकर भारतीय दंड संहिता, भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता, भारतीय व्यवहार प्रक्रिया संहिता, भारतीय साक्ष्य अधिनियम आदि बहुत-से क़ानून लागू कर दिये, लेकिन समान सिविल कोड की ओर नहीं बढ़े, क्योंकि वे ज़ालिम होने के बावजूद यह जानते थे कि यह किसी भी क़ीमत पर लागू नहीं हो सकता ।

उन्होंने मुसलमानों के लिए पारिवारिक क़ानून 1937 और अलग से मुस्लिम मैरिज डिज़ुलेशन एक्ट 1939 बनाया । देश के किंसी भी ख्यातलब्ध विचारक एवं विद्वान ने समान सिविल कोड का समर्थन नहीं किया है । संविधान निर्माता डॉ॰ अंबेडकर ने संविधान निर्मात्री सभा में नीति निर्देशक तत्व की धारा 44 में इस बाबत रखे गये प्रावधान पर दक्षिण के कुछ मुस्लिम सदस्यों की आपत्ति का जवाब देते हुए कहा था कि जब तक सब देशवासी इसके लिए राज़ी नहीं होंगे, इसे कदापि लागू नहीं किया जाएगा । देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू ने कई बार इसी आशय का मत प्रकट किया था । तत्कालीन सरसंघ चालक गुरु गोलवलकर ने भी इसकी आवश्यकता को सिरे से ख़ारिज किया है । 20 अगस्त 1972 को दिल्ली स्थित दीनदयाल शोध संस्थान के उद्घाटन के अवसर पर उन्होंने साफ़ कहा था कि देश में समान सिविल कोड अवांछित है । उन्होंने कहा था कि जो लोग समान सिविल कोड की बात करते हैं, वे भारत की ज़रूरत समझते ही नहीं हैं । गुरु जी ने इसी आशय के उद्गार एक इंटरव्यू में व्यक्त किये थे, जो 26 अगस्त 1972 को 'मदरलैंड' में छपा था । आश्चर्य की बात है कि संघ परिवारी अपने गुरु जी की बात का बार-बार अनादर करते हैं । भाजपा के हाल के चुनाव घोषणापत्र में इसकी बात है । भाजपा नेताओं द्वारा इसकी ज़रूरत बार-बार बताकर गुरु जी की आत्मा को ठेस पहुंचाई जाती है । सुप्रीम कोर्ट का ताज़ा फ़ैसला भी अवांछित है । एक ओर देश में मौजूद मुस्लिम पर्सनल लॉ में बहुत-सी ख़ामियां हैं, जिन्हें दूर करने की ज़रूरत है, दूसरी ओर इन ख़ामियों को और नहीं बढ़ाया जाना चाहिए ।

एक और विशेष छूट

'साप्ताहिक कान्ति', 'कान्ति मासिक', 'सेहरोज़ा दावत' और **मासिक 'ज़िन्दगी-ए-नव'** दावत ट्रस्ट के तहत प्रकाशित होते हैं जिनकी संयुक्त वार्षिक सहयोग राशि 1290/- रुपये होती है । यदि कोई व्यक्ति अपने या अपने सगे-संबंधियों व परिजनों के लिए चारों पत्र / पत्रिकाएं एक साथ एक वर्ष के लिए एक पते पर या एक से अधिक पते पर जारी करवाना चाहें तो केवल 1000/- (एक हज़ार) रुपये एकमुश्त भेजकर जारी करवा सकते हैं ।

पत्राचार और अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-

मैनेजर, दावत ट्रस्ट

डी-314, दावतनगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
Tel. : Dawat : 011-26949539, 09818799113
Kanti : 011-26949430, 09818799223
Zindagi : 09818799113, Fax : 011-26958816
Email : managerdawat@gmail.com

ऑन लाइन ट्राज़ैक्शन के लिए

DAWAT TRUST, A/C No. 990839004
INDIAN BANK, BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA, NEW DELHI
IFS CODE : IDIB000J029

DAWAT TRUST A/C No. 3037555110
CENTRAL BANK OF INDIA, BRANCH : SUKHDEV VIHAR
IFS Code: CBIN 0282953

नोट : ऑन लाइन ट्रांज़ैक्शन के बाद इदारे को सूचित कर दें ।

वृद्धों की समस्याएं

■ डॉ॰ ज़किया रफ़अत

सेवानिवृत्त वृद्ध हमारे समाज की अमूल्य धरोहर है । वह अपने विचार, ज्ञान, विश्वास, नैतिक मूल्यों, आदर्शों इत्यादि को अपनी भावी पीढ़ियों को हस्तांतरित करके उनका उचित मार्गदर्शन कर समाज के भावी निर्माण में योगदान दे सकते हैं, किन्तु वह अपनी समस्याओं में इस प्रकार उलझ कर रह जाते हैं कि समाज उनसे लाभांवित होने से वंचित रह जाता है ।

'सेवानिवृत्ति' वास्तव में एक पीड़ादायक अनुभव है । सेवारत व्यक्तियों के मन में इसके स्मरण मात्र से ही असंख्य चिन्ताएं उभरने लगती हैं । वह वृद्धजन जो सेवानिवृत्त हो चुके हैं, उनके लिए यह अभिशाप बनकर आती है । प्राय: सामान्य अवलोकन के आधार पर समाज में सेवानिवृत्त वृद्धों को 5 वर्गों में विभाजित कर सकते हैं । इन सभी वर्गों के वृद्ध लोग सेवानिवृत्ति के बाद किसी न किसी रूप में समस्याग्रस्त है ।

1. इस वर्ग के अंतर्गत वे सेवानिवृत्त वृद्ध हैं, जिन्होंने दूरदर्शिता से अपने सेवाकाल के आरंभ से ही योजनाबद्ध तरीक़े से अपने पारिवारिक दायित्वों को पूर्ण कर लिया तथा स्वयं के लिए आवास का निर्माण भी कर लिया है । इनके पुत्र आत्मनिर्भर हो गये हैं, पुत्रियों का विवाह सम्पन्न हो चुका है । वे अब पत्नी के साथ अकेले जीवन व्यतीत कर रहे हैं । इनके लिए ख़ाली समय काटना ही सबसे बड़ी समस्या है ।

2. इस वर्ग के अंतर्गत वे सेवानिवृत्त वृद्ध हैं, जिनके द्वारा निर्मित योजनाएं उनके सेवाकाल में परिस्थितिवश पूर्ण नहीं हो पातीं । जैसे सेवानिवृत्त के समय छोटे बच्चों की शिक्षा का अधूरा रह जाना, पुत्रियों के लिए बर न ढूंढ़ पाना, अपने लिए आवास का प्रबंध न कर पाना इत्यादि । अत: यह वृद्ध विविध समस्याओं से जूझते रहते हैं ।

3. तीसरे वर्ग के अंतर्गत ऐसे सेवानिवृत्त वृद्ध हैं, जिन्होंने अपने सेवाकाल में पृथक आवास नहीं बनाया था तथा पुत्रों के साथ रहने का निश्चय किया था । अब वे अपने पुत्रों के परिवार के साथ रह रहे हैं । वर्तमान समय में सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक कारणों के चलते परिवार की संरचना व प्रकार्यों में परिवर्तन आये हैं, परिवार में संस्तरण की परम्परागत प्रणाली अब बदल चुकी है । अत: सेवानिवृत्ति के पश्चात उपर्युक्त वृद्धों की आज्ञा का पालन तत्परता से नहीं किया जाता, जैसा पूर्व में किया जाता था । उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर ध्यान नहीं दिया जाता, सदस्यों पर उनका नियंत्रण शिथिल हो गया है, फलस्वरूप यह स्वयं को अकेला अनुभव करते हैं । जिससे इन्हें मानसिक असुरक्षा और निराशापूर्ण युक्त स्थिति से गुज़रना पड़ता है ।

4. चतुर्थ वर्ग में वे वृद्ध हैं जिनकी पेंशन तो मिलती है मगर उन्होंने सेवानिवृत्ति के पश्चात लघु व्यापार, ट्यूशन एवं पार्ट टाइम नौकरी कर ली है । इनके समक्ष भी अनेक पारिवारिक व सामाजिक समस्याएं आती हैं, उनके पुत्रों की समाज निन्दा करता है कि उसके पिता वृद्धावस्था में उक्त कार्य कर रहे हैं । अत: पुत्र उन्हें रोकते हैं तब पारिवारिक तनाव उत्पन्न हो जाते हैं ।

5. इस वर्ग में वे सेवानिवृत्त वृद्ध हैं जो अपने सेवाकाल में उच्च पदों पर आसीन रहे हैं और जिन्होंने सेवाकाल में मोटरगाड़ी, टेलीफ़ोन, चपरासी, सन्तरी, नौकर, समकक्ष मित्र व बड़े-बड़े बंगले, ड्राइवर, रसोइये, माली तथा आगे-पीछे दौड़ने वाले चाटुकार क़िस्म के लोगों जैसी सुविधाओं का भरपूर उपयोग किया है । सेवानिवृत्ति के पश्चात इनका बहुत कुछ ख़त्म हो चुका है । कुछ को छोड़कर अधिकतर व्यक्तियों से उनको एकसा व्यवहार मिलता है, जिसके विषय में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था । अत: उनके जीवन में सेवानिवृत्ति अनेक समस्याओं को जन्म देती हैं ।

प्रस्तुत सर्वेक्षण बिजनौर नगर में किया गया है । बिजनौर नगर पश्चिमी उ॰प्र॰ के जनपद बिजनौर का मुख्यालय है । यहां की जनसंख्या 73,900 है, जिनमें लगभग 55.8 प्रतिशत मुसलमान, 40 प्रतिशत हिन्दू, 2 प्रतिशत जैन, 1.7 प्रतिशत ईसाई एवं 0.5 प्रतिशत सिक्ख हैं । हिन्दुओं में यहां जाटों की

संख्या अधिक है । वर्तमान में नगर के दो भाग हैं ।

पुराने भाग में मूल रूप से जातीय आधार पर संरचित मुहल्ले स्थित हैं । इनमें जाटान, भाटान, सोतीयान, नाईयान, जुलाहान, क़स्साबान, मिर्दगान एवं क़ाज़ीपाड़ा इत्यादि हैं । नगर का नवविकसित भाग बाहर से सरकारी व अर्द्धसरकारी सेवाओं में सेवारत एवं सेवानिवृत्त अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा बसाया गया है । इसी भाग में बड़े व्यापारियों, डॉक्टरों के आवास तथा नर्सिंग होम, वकीलों व शिक्षकों के आवास हैं । इसके अतिरिक्त सरकारी आवासीय कालोनियां तथा सरकारी कार्यालय भी नवीन नगर में ही निर्मित हैं । यहां 74 सरकारी कार्यालय हैं । जिनमें मुख्यत: ज़िलाधिकारी कार्यालय, कोषागार, चकबन्दी, विद्युत, तहसील, ज़िला संयुक्त चिकित्सालय, न्यायालय, प्लानिंग आफ़िस, ज़िला परिषद, सिंचाई विभाग, नगर महापालिका आदि । इसके अतिरिक्त अनेक शिक्षण संस्थाएं व बैंक हैं, जिनमें नगर के असंख्य व्यक्ति कार्यरत हैं ।

प्रस्तुत सर्वेक्षण में अवलोकन प्रश्नावली व साक्षात्कार प्रविधि द्वारा सेवानिवृत्त वृद्ध से संबंधित आंकड़े संकलित किये गये हैं । इस हेतु नगर की सरकारी सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए 80 वृद्धों को आयु, धर्म, शैक्षिक योग्यता, भाषा, लिंग, पद, विभाग, सेवा की अवधि तथा सेवा मुक्त होने की अवधि के आधार पर किया गया है ।

आयु के आधार पर 26.25 प्रतिशत वृद्ध 60.65 वर्ष के बीच की आयु के हैं तथा 43.75 प्रतिशत 65-70 वर्ष की आयु के हैं, 12.50 प्रतिशत 70-75 वर्ष की आयु के, 11. 25 प्रतिशत 75.80 वर्ष की आयु के बीच के वृद्ध व्यक्ति हैं ।

सेवानिवृत्त वृद्धों में धर्म के आधार पर 65 प्रतिशत हिन्दू तथा 28.75 प्रतिशत मुस्लिम, 6.25 प्रतिशत सिक्ख हैं ।

शैक्षिक दृष्टि से 8.75 प्रतिशत व्यक्ति जूनियर हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त है । 13.75 प्रतिशत हाई स्कूल 36.75 प्रतिशत, इंटरमीडिएट, 32.50 प्रतिशत, बी०ए० एवं 8.75 प्रतिशत एम०ए० तक शिक्षा प्राप्त हैं । सेवानिवृत्त वृद्धों की विभागीय स्थिति के अन्तर्गत 28.75 प्रतिशत वृद्ध की कलेक्ट्रेट से, 17.50 प्रतिशत शिक्षा विभाग से, 8.75 प्रतिशत प्लानिंग ऑफ़िस से तथा 47 प्रतिशत अन्य सरकारी कार्यालयों से सेवानिवृत्त हुए हैं ।

उनके द्वारा की गयी सेवा अवधि के अनुसार सर्वाधिक 67.50 वृद्ध 35.40 वर्ष तक सरकारी पद पर सेवारत रहे तथा 25 प्रतिशत वृद्ध 30.35 वर्ष की अवधि तक, 3.75 वृद्ध 25-30 वर्ष की अवधि तक, तथा 40-45 वर्ष की अवधि तक 3.75 वृद्ध सेवारत रहे हैं ।

उपर्युक्त में से 36.25 प्रतिशत वृद्धों को सेवानिवृत्त हुए 5-10 वर्ष बीत चुके हैं । 28.75 प्रतिशत वृद्धों को अभी 1-5 वर्ष बीते हैं, 17.50 प्रतिशत को 10-15 वर्ष का समय हो गया है । 10 प्रतिशत को सेवानिवृत्त हुए 15-20 वर्ष तथा 7.50 प्रतिशत को 20-25 वर्ष हो गये हैं ।

उपर्युक्त वृद्ध के सर्वेक्षण से उनके जीवन से संबंधित विभिन्न समस्याएं दिखायी पड़ती हैं :

1. 73.75 प्रतिशत सेवानिवृत्त वृद्ध संयुक्त परिवार में रहते हैं ।

2. अधिकतर सेवानिवृत्त वृद्धों के परिवार का आकार मध्यम है । अधिक सदस्य होने के कारण पारिवारिक कलह, आर्थिक समस्याएं, मानसिक असन्तुष्टि, उचित सामंजस्य का अभाव इत्यादि समस्याएं पायी जाती हैं ।

3. 8.75 प्रतिशत सेवानिवृत्त वृद्ध का पारिवारिक वातावरण अस्वस्थ है जिसके कारण ये वृद्ध तनावग्रस्त रहते हैं ।

4. 95 प्रतिशत सेवानिवृत्त वृद्धों को अपने परिचार में अनादर तथा उपेक्षा सहनी पड़ती है जोकि उन्हें मानसिक रूप से कष्ट प्रदान करती है ।

5. 93.75 प्रतिशत सेवानिवृत्त वृद्ध ऐसे हैं जिनके परिवार के सदस्य उनकी आज्ञा का पालन नहीं करते । इसी कारण 96.25 प्रतिशत सेवानिवृत्त वृद्ध व्यक्तियों को अपने परिवार में मानसिक शान्ति नहीं मिलती है ।

6. उपरोक्त कारणों से 95 प्रतिशत सेवानिवृत्त वृद्ध व्यक्ति अपने पारिवारिक जीवन से असन्तुष्ट हैं ।

7. 81.25 प्रतिशत सेवानिवृत्त वृद्ध ऐसे हैं जिनके परिवार के सदस्य उनके व्यक्तिगत कार्यों में सहयोग प्रदान नहीं करते ।

एक सूचना

मेरठ में 'कान्ति' हासिल करने के लिए संपर्क करें–

AHSAN MUSTAQIMI

1946/1, Gali No. 28, Near Bismillah Masjid,
D-Block, Zakir Husain Colony,
Meerut City-2 (Uttar Pradesh)
Mob. : 09411022708
E-mail : mustaqimiahsan1931@gmail.com

कर डालिए नेक काम

मैं जब भी किसी नये विषय पर कोई आलेख अथवा कथा-कहानी आदि लिखने बैठता हूं तो लिखने से पूर्व कई बार मन में यह विचार आता है कि यह रचना करना ठीक भी रहेगा या नहीं । कहीं संपादक, प्रकाशक अथवा पाठक इसे मज़ाक़ में न ले लें अथवा सतही रचना समझ कर नकार न दें । यदि मन में इस प्रकार का संशय पैदा हो जाता है, तो प्राय: वह रचना आकार नहीं ले पाती । लेकिन कुछ ही दिनों बाद उसी विषय पर प्रकाशित किसी अन्य रचनाकार की रचना देखता हूं तो बड़ा अफ़सोस होता है कि मैंने उस दिन इस विषय पर क्यों नहीं लिखा । प्रकाशित इस रचना से पूर्व इस विषय पर मैंने कोई रचना नहीं देखी थी । यदि इस रचना से पूर्व इस विषय पर अन्य कोई रचना प्रकाशित नहीं हुई थी और मैं उस समय लिख लेता तो इस विषय पर लिखने वाला मैं पहला रचनाकार भी हो सकता था ।

लेखन में ही नहीं जीवन के अनेकानेक क्षेत्रों में कई बार ऐसा ही होता है कि हम पहल करने से चूक जाते हैं । हम कोई कार्य, कोई नेक कार्य या कोई नया कार्य करना चाहते हैं, लेकिन कोई संकोच या संशय हमें कार्य संपन्न करने अथवा पहल करने से रोक देता है । इसका दुष्परिणाम यह होता है कि हम किसी अच्छे कार्य की पहल करने के श्रेय से वंचित रह जाते हैं और कभी-कभी तो बाद में या तो दोबारा उसे करने का अवसर ही नहीं मिलता या वह विचार ही विस्मृति के गर्भ में चला जाता है । संभव है इस कारण से लोग सचमुच किसी महान कृति, सिद्धांत अथवा खोज या अनुसंधान से वंचित ही रह जाएं । इसीलिए ज़रूरी है कि किसी भी सकारात्मक व उपयोगी विचार को संशयविहीन होकर यथाशीघ्र देने का प्रयास किया जाए ।

कई बार हम सोचते हैं कि हर विचार को कार्य रूप देना कहां संभव है और यही हमारी सबसे बड़ी भूल है । वास्तव में मनुष्य जो सोच सकता है वह कर भी सकता है अर्थात मनुष्य जो कार्य नहीं कर सकता उसे सोचना ही असंभव है । असंभव से दिखने वाले ही नहीं, कई बार साधारण से कार्य को करने में भी हम कोताही बरतते हैं । कई बार फूल उगाने के लिए हम बीज ख़रीद लाते हैं । हम बीज तो ख़रीद लाते हैं लेकिन उन्हें गमलों या क्यारियों में बोने में कोताही बरतते हैं । फूलों का पूरा सीज़न निकल जाता है, लेकिन बीज बोने का फ़ैसला नहीं कर पाते । क्या सचमुच यह बहुत मुश्किल कार्य है ? यदि बीजों को उसी समय मिट्टी के हवाले कर दिया होता तो आज उन फूलों के सौंदर्य, उनकी गंध और ख़ूशबू से वंचित नहीं रहते । सामने के मकान की बालकनी अथवा टैरेस पर जब रंग-बिरंगे व सुगंधित पुष्प अपनी आभा बिखरने लगते हैं, तभी हमें अपने समय पर निर्णय न लेने का अफ़सोस होता है, लेकिन अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत ।

कई बार हम बहुत-सी अच्छी-अच्छी पुस्तकें ख़रीद लाते हैं और उन्हें अलमारियों में सजाकर रख देते हैं कि कभी आराम से पढ़ेंगे, लेकिन वह दिन कभी नहीं आता । माना कि आप अत्यधिक व्यस्त हैं, तो भी पढ़ने का समय निकालिए । पुस्तकें कितनी भी अच्छी क्यों न हों उनकी सार्थकता पढ़ने में है, न कि मात्र ख़रीदने में । मान लीजिए कि हम पुस्तकें पढ़ते भी हैं । कई बार हम कोई अच्छी-सी प्रेरक पुस्तक पढ़ते हैं और हमें लगता है कि इसमें हमारे लिए कई जीवनोपयोगी सूत्र हैं जो हमारे जीवन की दिशा बदल सकते हैं । हम ऐसे जीवनोपयोगी सूत्रों को रेखांकित कर लेते हैं, उन्हें कंठस्थ कर लेते हैं, लेकिन ऐसे सूत्रों की सार्थकता उन्हें रटने में नहीं अपितु फ़ौरन व्यवहार में लाने में है । ज्ञान-विज्ञान से लाभान्वित होना अपेक्षित है सिर्फ़ पढ़ना नहीं ।

अत: जब भी कोई नया, अनोखा या मौलिक विचार मन में आये सफलता-असफलता की परवाह किये बिना उसे कार्य रूप में परिणत करने के लिए कटिबद्ध हो जाएं, क्योंकि संभव है कि बाद में समय, संसाधन अथवा अच्छे स्वास्थ्य के अभाव में यह कार्य करना ही असंभव हो जाए । किसी नेक काम को अंजाम देने का हमारा इरादा ही न बदल जाए, इसलिए कहा गया है कि शुभ कार्यों को शीघ्र कर डालिए । जीवन में अफ़सोस करने की नौबत न आये, इसलिए नेक कार्यों को करने का संकल्प दृढ़ लेकर उन्हें वास्तविकता में परिवर्तित कर दीजिए ।

सीताराम गुप्ता
ए॰डी॰ 106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 97 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2014-2015 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 15000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 24 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 100 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम अंतिम पड़ाव पर है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE
At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)
Bank IFS Code No. : UBIN 0530042
CORE BANKIN GA/C NO.: 300402010010581, Mobile : 9955655960, 09801213022
E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन

एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

पहले काम, फिर आराम

❖ सेतू जैन

बाल कहानी

चंदन वन में एक मकड़ी रहती थी । बहुत ही प्यारी लंबी-लंबी सहस्त्रों टोंगें थी उसकी । वह दिन-रात मेहनत करती और जाला बुनती । अक्सर हवा चलने से या आंधी आने से उसका जाला टूट-फूट जाया करता । इसलिए बार-बार उसे अपने जाले की मरम्मत करनी पड़ती । मगर न तो वह इन कामों से घबराती थी और न ही थकती थी । वह दिन-रात अपने जाले बुनने में लगी रहती ।

एक दिन की बात है । रानी मकड़ी सदा की तरह अपना जाला बुनने में लगी थी कि तभी डिम्पी हिरण कुलांचे भरता हुआ वहां आया और रानी मकड़ी से बोला "रानी, रानी ! ज़रा देखो तो मौसम कितना सुहावना है । चलो ना मैं और तुम दौड़ लगाकर आते हैं ।"

रानी बोली, "नहीं डिम्पी भैया, अभी मैंने दो पेड़ों के बीच जाला बुनना शुरू ही किया है । इसलिए अभी मैं तुम्हारे साथ दौड़ लगाने के लिए नहीं आ सकूंगी । जब मेरा जाला पूरा हो जाएगा, तभी मैं तुम्हारे साथ खेलूंगी ।"

दौड़ लगाने के लिए साथ चलने को रानी द्वारा मना किये जाने पर डिम्पी किसी और साथ की तलाश में चल पड़ा । रानी भी अपना जाला बुनने में जुट गयी ।

तभी राकू गिलहरी उछलते-कूदते हुए वहां आयी और रानी से बोली, "रानी, तुम यहां क्या कर रही हो ? चलो दोनों बैठकर गपशप करते हैं ।"

रानी ने कहा, "नहीं बहन राकू, मैंने सुबह से अभी तक जाले के केवल दो ही तार बुने हैं । जब तक ये जाला पूरा नहीं हो जाता, मैं तुम्हारे साथ गपशप नहीं कर सकती । वैसे तुम सुनाओ, क्या बरसात के मौसम के लिए तुम्हारे अख़रोट इकट्ठे हो गये हैं ?"

राकू बोली, "नहीं बहन अभी कहां ? लेकिन तुमने अच्छा याद दिलाया । अभी तो मुझे बरसात आने से पहले बहुत-सा भोजन जमा करना है । अच्छा बहन मैं चलती हूं ।

राकू चली गयी । अभी रानी ने बस चारों कोनों के बीच जोड़ वाला तार डाला ही था कि तभी एक ख़रगोश आया । उसका नाम था किटू । किटू रानी को देखकर बोला, मकड़ी, मकड़ी, तुम क्या कर रही हो ?"

"जाला बुन रही हूं किटू भैया ।"

"अरे, काम को छोड़ो । जाला बाद में बुन लेना । देखो भालू के खेत में ख़ूब गाजरें लगी हैं, चलो ज़रा खा पी आएं ।"

"नहीं भाई । मैं पहले जाला तैयार कर लूं । फिर तुम्हारे साथ गाजरें खाने चल सकती हूं ।"

ख़रगोश चला गया और रानी जाला बुनने में पहले की तरह जुट गयी । सूरज सिर पर चढ़ आया था । रानी ने अब तक आधा जाला पूरा कर लिया था, फिर भी वह थकी नहीं थी । वह सोच रही थी कि जल्द से जल्द अगर यह जाला पूरा हो जाए तो कुछ शिकार हाथ लगे ।

तभी पास की नदी से एक बत्तख़ आ गयी । बत्तख़ रानी से बोली, "रानी चलो, देखो न कैसा स्वच्छ, शीतल जल है झील का, चलो तैर आएं । इस धूप में तो जान हलक में आ रही है ।"

रानी ने कहा, "नहीं बहन, मैं अपना यह जाला पूरा करने के बाद ही तैरने जाऊंगी ।"

रानी का उत्तर सुनकर बत्तख़ ने अपनी राह पकड़ ली । रानी मकड़ी तार पर तार बुनती रही, थक गयी पर फिर भी रुकी नहीं । जब तक सूरज ढलता, तब तक तो उसने पूरा जाला बुन ही डाला ।

तभी भन-भनकर इतराते तीन मच्छर और भिन-भिन करती एक मक्खी उसके जाले में आ फंसे और मकड़ी ने बड़े आराम से अपना पेट भरा । इधर जंगल में अंधेरा पसरने लगा था, उधर मकड़ी खा-पीकर अपने शानदार जाले के बीच मज़े से सो रही थी । अगर वह हिरण, बत्तख़, ख़रगोश या गिलहरी के साथ घूमने-फिरने के लिए चली जाती तो ? क्या फिर पूरा हो पाता उसका जाला ?

हिरण, बत्तख़, गिलहरी, ख़रगोश रोज़ अपनी आदत के

अनुसार खेलने-कूदने में ही मस्त रहे । समय बीता, गर्मी बीत गयी और बरसात आयी । मकड़ी पूर्वानुसार अपनी मेहनत में लगी रही और उसने काफ़ी घने वृक्ष से घिरे एक पोखर में अपना जाला बुन लिया ।

एक दिन रानी मकड़ी अपने जाले की मरम्मत करने के बाद बैठी सुस्ता रही थी कि तभी वहां से हिरण निकला । रानी ने उसे रोक कर कहा, ''डिम्पी भाई आज मौसम बड़ा सुहावना है । चलो दौड़ लगा आएं ।''

हिरण ने कहा, ''नहीं बहन, मैं बहुत दुखी हूं । मैं सारी गर्मियों में दौड़-भाग और खेलने-कूदने में ही लगा रहा और अब बरसात में मेरे घर की छत पानी से ढह गयी है । अब तो मुझे उसकी मरम्मत के लिए सूखी लकड़ियां भी नहीं मिलेंगी । अगर मैंने उसी समय अपने घर की मरम्मत कर ली होती तो आज मैं भी तुम्हारी तरह चैन से बैठा होता । अच्छा बहन, मैं चलता हूं ।'' इतना कहकर डिम्पी चला गया ।

तभी वहां से राकू गिलहरी निकली । रानी ने उसे भी रोका और कहा, ''आओ राकू, हम दोनों कुछ गपशप करते हैं ।''

''नहीं रानी, मैं इस वक़्त भोजन की तलाश में जा रहा हूं । दो दिन हो गये हैं कुछ भी खाये हुए । भूख के मारे मरी जा रही हूं और बच्चे भी घर पर भूख के मारे तड़प रहे हैं । क्या बताऊं बहन, गर्मी में तो मैंने अपना सारा वक़्त गपशप में ही बरबाद कर दिया और भंडार से पर्याप्त भोजन इकट्ठा नहीं किया । और इस मौसम में अखरोट भी नहीं मिल रहे हैं । फिर कीचड़ के कारण मेरी पूंछ के बाल भी ख़राब हो गये हैं । अच्छा तो अभी मैं चलती हूं ।'' इतना कहकर राकू भी चली गयी ।



तभी रानी को बत्तख़ उसी ओर आती दिखायी दी । रानी ने ख़ुश होकर उसे पुकारा, ''बत्तख़ बहन, चलो आज हम दोनों नदी की सैर करने चलते हैं ।''

बत्तख़ बोली, ''नहीं रानी, इस वक़्त बरसात में नदी में बाढ़ आयी हुई है । हम बहुत छोटे-छोटे हैं, इसलिए बाढ़ के पानी में बह जाएंगे और मैं भी इस समय आसरे की तलाश में हूं । मेरा घर बाढ़ के पानी में बह गया है । काश गर्मियों में ही मैंने अपने लिए एक नये नीढ़ का निर्माण का लिया होता तो आज मैं यूं न भटक रही होती ।''

बत्तख़ भी चली गयी । अब रानी बैठी-बैठी उकता गयी थी । वह थक्कर सोने की तैयारी कर ही रही थी कि तभी उसे ख़रगोश आता दिखायी दिया । रानी ने उसे भी रोका और अपने साथ गाजरों के खेत में चलने का निमंत्रण दिया ।

ख़रगोश बोला, ''रानी बहन ! मैं जानता हूं कि तुम बड़ी मेहनती हो, तभी तो तुम हर समय मेहनत करके अपने जालों की मरम्मत करती रहती हो । तुमने औरों की तरह अपना वक़्त मौज-मस्ती में नहीं गंवाया । मैंने भी तुम से ही प्रेरणा लेकर सारे मौसम में लाल-लाल गाजरें जमा की और आज मैं तुम्हें ये मीठी-मीठी गाजरें खिलाने के लिए ही यहां आया था । तुम इनका स्वाद लो, अब तक मैं अपने दूसरे दोस्तों हिरण, गिलहरी और बत्तख़ को भी गाजरें खिलाकर आता हूं।

तो देखो बच्चों, मेहनत का फल कितना मीठा होता है । याद रखो कि मेहनत और अच्छी संगत हमेशा लाभकारी होती है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

ambar
Lifestyle Products

THE WORLD OF Luxurious LIVING















www.ambarlifestyle.com

For More Information Call Customer Care on 09341210407
e-mail us at : customercare@ambarlifestyle.com or ambarlifestyle1@gmail.com
Dealer / Distributor & Project Enquiry Solicited

21, St. Johns Church Road, Fraser Town, Bangalore 560 005

ambar
Lifestyle Products

Posted on 20-21 May 2014
June 2014
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.05.2014

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

HOTEL
Al-Zam Zam
RESTAURANT & LODGING



HOTEL
Al-Zam Zam
RESTAURANT & LODGING

The best taste in Veg. & Non-Veg. dishes



Now At Ajni Square Wardha Road

Comfortable interior, hygienic separate preparation for Veg. and Non-Veg.
Special air conditioned hall for family.
Comfortable lodging in air conditioned and well decorated rooms.

Customer Care No :- 08796466666

Main Branch :- Central Avenue, Chandra Shekhar Azad Square, Nagpur - 440002
Branch 1 :- Plot No. 1 Hindustan Colony, Ajni Square, Beside Chevrolet Showroom, Wardha Road, Nagpur
Branch 2 :- Opp Battuk Bhai Jewellers, Dharampeth, W.H.C. Road, Nagpur

Ph: 0712-2763131, 2732401

E-mail :- hotelalzamzam@gmail.com

Log on to :- www.hotelalzamzam.com
or like us on :- hotelalzamzam.facebook.com